राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

वर्ष : 13 , अंक : 120, पृष्ठ : 08, नई दिल्ली बुधवार 15 नवंबर 2023, मूल्य : 1.50/-

नई दिल्ली से प्रकाशित

RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट

दिल्ली सरकार ने पानी छिड़काव के विशेष अभियान का किया आगाज

.... पेज 03

लखनऊ में 16 नवंबर से शुरु होगी भारतीय सेना में अग्निवीर भर्ती रैली

.... पेज 05

एचएस प्रणॉय कुमामोटो मास्टर्स जापान टूर्नामेंट में कोर्ट पर करेंगे वापसी

.... पेज 07

कर्नाटक : भर्ती परीक्षाओं में हिजाब पर बैन; मंगलसूत्र को अनुमति

कर्नाटक में लंबे समय से चल रहे हिजाब विवाद के बीच सरकार का बड़ा फैसला

कर्नाटक एग्जामिनेशन अथॉरिटी ने बड़ा कदम उठाते हुए भर्ती परीक्षाओं में सभी प्रकार के हेड कवर को बैन कर दिया है। कर्नाटक में लंबे समय से चल रहे हिजाब विवाद के बीच यह सरकार का बड़ा फैसला है। अथॉरिटी ने परीक्षा के दौरान नकल को रोकने के लिए ब्लूटूथ इयरफोन, मोबाइल फोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक गैजेट पर भी प्रतिबंध लगा दिया है। हालांकि इस आदेश में मंगलसूत्र और बिछुओं पर बैन को लेकर कुछ नहीं कहा गया है। जानकारी के मुताबिक परीक्षा हॉल में मंगलसूत्र और बिछुए पहनकर जाने की इजाजत होगी।

अथॉरिटी की तरफ से जारी आदेश में कहीं हिजाब का नाम अलग से नहीं लिखा गया है। हालांकि हेड कवर बैन में हिजाब खुद ब खुद शामिल हो जाता है। बता दें कि 18 और 19 नवंबर को राज्य में कई भर्ती परीक्षाएं आयोजित होनी हैं। ऐसे में सरकार का यह फैसला बड़ा मायने रखता है। केईए के आदेश में कहा गया है, सिर पर कोई कपड़ा, टोपी या फिर हेड कवर, या फिर फेस कवर को परीक्षा हॉल में अनुमति नहीं

दी जाएगी। बता दें कि केईए ने अक्टूबर में हुई परीक्षाओं में हिजाब को अनुमति दे दी थी। वहीं कई जगहों से मंगलसूत्र को लेकर विवाद सामने आया था। बीते दिनों कर्नाटक पब्लिक सर्विस कमिशन के दौरान सामने आया था कि कुछ लड़कियों को एग्जामिनेशन हॉल में जाने देने से पहले मंगलसूत्र हटाने को कहा गया था। अधिकारियों ने जांच के दौरान गले कि चेन, बिछुए और झुमके भी निकालने को कहा था। वहीं कुछ स्टूडेंट्स को मंगलसूत्र उतारने के बाद ही परीक्षा हॉल में प्रवेश दिया गया। इसके बाद भाजपा ने कर्नाटक की कांग्रेस सरकार पर सवाल उठाए थे। कहा गया था कि परीक्षा में नकल रोकने के लिए ये कदम उठाए गए थे। वहीं छात्रों का कहना था कि बर्के में आए स्टूडेंट्स को भी एग्जामिनेशन हॉल में छूट दी जा रही थी।

कर्नाटक में हिजाब को लेकर विवाद जनवरी 2022 में शुरू हुआ था जब उडुपी के गवर्नमेंट पीयू कॉलेज में 5 लड़कियों को हिजाब पहनकर प्रवेश की अनुमति देने से इनकार कर दिया गया था। इके बाद लड़कियों ने कॉलेज के बाहर प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। उडुपी के कई कॉलेज के स्टूडेंट्स प्रदर्शन में शामिल हो गए।

पुष्पांजलि

वरिष्ठ कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने नई दिल्ली के शांति वन में भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू को उनकी जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की।

ट्रक में घुसी कार, 6 की मौत

आधी कार ट्रक में पिचक गई; मुजफ्फरनगर में नेशनल हाईवे पर हुआ हादसा

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर में दिल्ली-देहरादून नेशनल हाईवे-58 पर मंगलवार सुबह बड़ा हादसा हो गया। यहां दिल्ली से हरिद्वार जा रही सियाज कार ट्रक में पीछे से जा घुसी। हादसे में आधी कार खिलौने की तरह पिचक गई। कार सवार सभी 6 दोस्तों की मौके पर ही मौत हो गई। मरने वाले सभी लोग शाहदरा के रहने वाले थे। हादसा सुबह 4 बजे छपार थाना क्षेत्र के रामपुर तिराहे के पास हुआ।

घटना की सूचना पर पुलिस की टीम तत्काल मौके पर पहुंची। क्रेन की मदद से ट्रक में फंसी कार को निकलवाया। गाड़ी पिचक कर आधी रह गई थी। उसमें हर जगह केवल खून ही खून दिख रहा था। जबकि कार सवारों के शव पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो

गए थे। पुलिस ने काफी मशक्कत के बाद शवों को गाड़ी से निकाला। शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया। मृतकों की शिनाख्त शिवम, पार्श, कुनाल, धीरज, विशाल और एक अज्ञात के रूप में हुई है। इनमें से पार्श शर्मा बीबीए का छात्र था, जबकि शिवम बैंक में नौकरी करता था, पार्श और कुणाल चचेरे भाई हैं। मरने वाले छठे दोस्त का नाम अमन (22) निवासी मेरठ है। हादसे के वक्त कार की स्पीड 100 से ज्यादा थी। तभी ड्राइवर का कार से संतुलन हट गया और गाड़ी आगे चल रहे ट्रक में पीछे से जा घुसी। कार का अगला हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है।

हादसे की जगह पर हर जगह केवल खून दिख रहा था। कार के टूटे हुए शीशे सड़क पर बिखरे पड़े थे। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार का अगला हिस्सा एकदम चिपटा हो गया है। जबकि पिछला हिस्सा सही सलामत है। पुलिस ने मृतकों की पहचान उनकी आईडी से की।

सीओ विनय गौतम ने बताया, तेज रफ्तार सियाज कार बेकाबू होकर मुजफ्फरनगर से हरिद्वार की तरफ जा रहे ट्रक में पीछे से जा घुसी। जिसमें कार सवार सभी 6 युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। ड्राइवर का कार से क्यों संतुलन बिगड़ा, इसका पता लगाया जा रहा है। क्या कार में ही कोई तकनीकी समस्या आ गई थी, जिस वजह से हादसा हुआ, इसका भी पता लगाया जा रहा है।

सीएम योगी ने जताया दुख

सीएम योगी ने मुजफ्फरनगर में हुए सड़क हादसे में हुई जनहानि पर गहरा दुख प्रकट किया है। सीएम ने शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

सबने किया गरीबों की झोंपड़ी में जाकर फोटो खिंचाने का ड्रामा : मोदी

झाबुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज बिना किसी का नाम लिए कांग्रेस के गांधी-नेहरू परिवार पर हमला बोलते हुए कहा कि नाना, दादी, पिता सबने बस गरीबों की झोंपड़ी में जोकर फोटो खिंचाने का ड्रामा किया और जिन बच्चों को सही पोषण नहीं मिलता था, वो कांग्रेस नेताओं की तस्वीरें सजाने के काम आते थे।

मोदी मध्यप्रदेश के आदिवासीबहुल झाबुआ जिले में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे।

राज्य में चुनाव प्रचार का कल अंतिम दिन है। ऐसे में मोदी की विधानसभा चुनाव में ये प्रचार की अंतिम चुनावी सभा थी। इसके पहले उन्होंने आज राज्य के बैतूल और शाजापुर में भी चुनावी सभाओं को संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा आदिवासी समाज को वोट बैंक के तौर पर देखा। उन्होंने मध्यप्रदेश, गुजरात और राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्र झाबुआ के संदर्भ मे कहा कि यहां के लोग राजस्थान भी आते जाते हैं और देखते हैं कि वहां भी आदिवासी समाज कांग्रेस से भड़का हुआ है।

मोदी ने नेहरू को उनकी जयंती पर दी श्रद्धांजलि

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। मोदी ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट करते हुए कहा, हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि। आज ही के दिन 14 नवंबर, 1889 को पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ था। उनके सम्मान में ही नेहरू जयंती पर बाल दिवस मनाया जाता है।

भारतीय रेलवे ने माल ढुलाई में रचा कीर्तिमान, कमाए एक लाख करोड़

नयी दिल्ली। रेलवे ने माल परिवहन में आय का कीर्तिमान रचते हुए चालू वित्त वर्ष में अब तक एक लाख करोड़ रूपये का राजस्व अर्जित किया है जो पिछले वर्ष प्राप्त आमदनी 95 हजार करोड़ रूपये से चार प्रतिशत अधिक है।

रेलवे सूत्रों के अनुसार रेलवे का कुल राजस्व जरिए 940 टन माल लदान किया गया है जबकि पिछले वर्ष 907 टन माल लदान हुआ था।

सूत्रों के अनुसार रेलवे का कुल राजस्व

(मालभाड़ा एवं यात्री किराया मिला कर) डेढ़ लाख करोड़ रुपए को पार कर गया है। अनारक्षित यात्री किराये में 11 हजार 326 करोड़ रूपये का राजस्व हासिल हुआ है।

उन्होंने बताया कि सर्वाधिक आय कोयला परिवहन से हुई है जिसमें 50,937 करोड़ रूपये का राजस्व प्राप्त हुआ है। अन्य माल परिवहन में लौह अयस्क से 10,951 , सीमेंट और धातु से 8415 , लोहा और स्टील से 6263 , रासायनिक खाद से 4570 , पेट्रोलियम पदार्थ और गैस से 4120 , कंटेनर से 3716 तथा अन्य वस्तुओं से 5477 करोड़ रूपयों की आय हुई है।

5 साल की बच्ची से रेप-मर्डर के दोषी को सजा-ए-मौत

केरल के कोर्ट ने चिल्ड्रंस डे पर फैसला सुनाया; सीएम बोले- यह अपराधियों के लिए चेतावनी

एर्नाकुलम। केरल के एर्नाकुलम जिले के अलुवा में पांच साल की बच्ची से रेप और हत्या के दोषी को पॉसको (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्शुअल हैरेसमेंट) कोर्ट ने मंगलवार (14 नवंबर) को मौत की सजा सुनाई है। कोर्ट ने चिल्ड्रंस डे पर अपना फैसला सुनाया। खास बात यह है कि साल 2012 में आज के दिन ही पॉसको एक्ट भी लागू हुआ था। एर्नाकुलम में अश्वक आलम नाम के युवक ने 28 जुलाई को बच्ची से रेप करने के बाद गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी थी। फिर शव को बोरे में बांधकर कूड़े में फेंक दिया था। घटना के 100वें दिन 4 नवंबर को कोर्ट ने अश्वक को दोषी ठहराया था। जज के. सोमन के कोर्ट ने दोषी को आईपीसी और पॉसको एक्ट

मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन

के तहत पांच बार आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। कोर्ट ने कहा कि दोषी अपनी पूरी जिंदगी जेल में ही रहेगा। उस पर 6 लाख रुपए का जुर्माना भी लगा है। जज जब फैसला सुना रहे थे तो बच्ची के माता-पिता कोर्ट में ही थे।

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने कहा कि बच्ची सबसे जघन्य अपराध का शिकार हुई थी। क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम ने अपराधी को सबसे कड़ी सजा दिलाने की भरपूर कोशिश की। बच्चों के खिलाफ हिंसा करने वालों के लिए यह एक कड़ी चेतावनी है। बच्ची के मां-बाप का जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई तो कोई नहीं कर सकता। लेकिन हम उन्हें हर संभव मदद देने की कोशिश करेंगे।

वहीं एडीजीपी (लॉ एंड ऑर्डर) एम आर अजित कुमार ने कहा- इस घटना ने केरल सरकार और पूरे राज्य को झकझोर दिया था। ऐसा मामला शायद ही पहले कभी हुआ था। पूरे मामले की जांच 30 दिन में पूरी की गई। 100 दिन में आरोपी को दोषी ठहराया गया और 110वें दिन उसे सजा सुनाई गई।

हरियाणा में जहरीली शराब से 22 की मौत

अंबाला। हरियाणा में जहरीली शराब पीने से अब तक 22 लोगों की मौत हो चुकी है। अंबाला के मुलाना थाना के अंतर्गत आने वाले गांव सुहाना में एक और मौत हुई है। जिसके बाद गुस्साए ग्रामीणों ने शराब के ठेके पर ताला जड़ दिया। प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। गांव सुहाना में इससे पहले भी 6 लोगों की संदिग्ध मौत हो चुकी है। ग्रामीणों के मुताबिक, 7वीं मौत भी शराब पीने से हुई है। हालांकि, पुलिस का कहना है कि गांव सुहाना में जहरीली शराब पीने से मौत नहीं हुई है। उधर, सीआईए शहजादपुर ने अंबाला के बिंजलपुर में अवैध शराब की फैक्ट्री चलाने वाले मास्टरमाइंड अंकित उर्फ मोगली को कालाअंब से गिरफ्तार किया। मोगली को सीआईए ने कोर्ट में पेश करके 6 दिन के रिमांड पर लिया है। बता दें कि यमुनानगर में सोमवार को भी 2 और लोगों की मौत हुई थी। अब तक यमुनानगर में 20 मौत हो चुकी हैं। अंबाला में 2 लोग जान गंवा चुके हैं। हालांकि, मुलाना थाना के अंतर्गत कई लोगों की संदिग्ध मौत हो चुकी है।

रेत माफिया ने 2 को रौंदा, एसआई की मौत : होमगार्ड गंभीर

इस घटना को बिहार सरकार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर ने छोटी-मोटी घटना बताया

जमुई। बिहार के जमुई में मंगलवार सुबह ट्रैक्टर-ट्रॉली में रेत भरकर ले जा रहे ड्राइवर ने एसआई और एक होमगार्ड को रौंद दिया। एसआई प्रभात रंजन की मौत हो गई है। होमगार्ड राजेश कुमार की हालत गंभीर बनी हुई है। इस घटना को बिहार सरकार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर ने छोटी-मोटी घटना बताया।

उन्होंने कहा कि इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं। यह कोई नई बात नहीं है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश समेत कई राज्यों में भी तो घटना हुई है। यह कोई पहली घटना थोड़े ही है। यह सब होता रहता है।

बाइक से जवान के साथ निकले थे एसआई प्रभात रंजन

पुलिस को मंगलवार सुबह सूचना मिली थी कि मोहली टांड़ नदी से तस्कर अवैध रूप से बालू उठा रहे हैं। जिसके बाद स्ट्रे प्रभात रंजन, होमगार्ड

जवान राजेश कुमार के साथ बाइक से छापेमारी के लिए निकल गए। जैसे ही दोनों महोलियाटांड़ के पास पहुंचे तो उनकी नजर बालू से लदे ट्रैक्टर-ट्रॉली पर पड़ी। उसे रोकने की कोशिश की तो ड्राइवर ने दोनों को रौंद दिया।

दिल्ली में रहता है एसआई का परिवार

एसआई प्रभात रंजन गरही थाने में पदस्थ थे। वे वैशाली के महुआ के रहने वाले थे। उनका पूरा परिवार दिल्ली में रहता है।

मंगलवार रात 8 बजे तक उनका शव जमुई पहुंचेगा। दोपहर 2 बजे तक उनका पार्थिव शरीर मलयपुर पुलिस लाइन में गार्ड ऑफ ऑनर देने के लिए रखा गया।

हमले के बाद दोनों को इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टर ने प्रभात रंजन को मृत घोषित कर दिया। घायल होमगार्ड जवान राजेश कुमार की हालत गंभीर होने पर उन्हें शहर के प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती किया गया है। एसपी शौर्य सुमन ने कहा कि बालू लदे ट्रैक्टर से कुचलने की बात सामने आई है। मामले की जांच की जा रही।

ट्रैक्टर के मालिक की हुई पहचान

ट्रैक्टर मालिक की पहचान नवादा जिले के रेयडी निवासी कृष्णा रविदास के रूप में की गई है।

पुलिस ने उसके घर पर छापेमारी की, जहां से उसकी पत्नी को हिरासत में लिया गया है। ट्रैक्टर का ड्राइवर नवादा जिले के कौवाकोल का रहने वाला है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है।

डीएसपी अभिषेक कुमार सिंह ने बताया कि एसपी ने एक टीम का गठन किया है। जल्द ही आरोपी ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

टनल हादसा

रेस्क्यू के दौरान धंस रही टनल, अब 35 इंच चौड़े स्टील पाइप से निकालने की तैयारी

उत्तरकाशी टनल हादसा, अब भी 40 मजदूर फंसे, बचाव जारी

एजेंसी

देहरादून/उत्तरकाशी। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में 12 नवंबर की सुबह 4 बजे एक निर्माणाधीन टनल धंस गई थी। पिछले 60 घंटे से 40 मजदूर अंदर फंसे हुए हैं। चारधाम प्रोजेक्ट के तहत यह टनल ब्रह्मखाल और यमुनोत्री नेशनल हाईवे पर सिल्क्यारा और डंडलगांव के बीच बनाई जा रही है।

फंसे हुए मजदूर बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के हैं। नेशनल हाईवे एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NHIDCL), NDRF, SDRF, ITBP,

BRO और नेशनल हाईवे की 200 से ज्यादा लोगों की टीम 24 घंटे काम कर रहे हैं। NHIDCL के डायरेक्टर टेक्निकल अतुल कुमार ने सोमवार को बताया कि टनल से मलबा हटाने के दौरान ऊपर से लगातार मिट्टी धंस रही है। इससे रेस्क्यू में दिक्कत आ रही है। हमने अब स्टील पाइप के जरिए मजदूरों को निकालने का प्लान किया है।

कुमार ने बताया- मजदूरों तक पहुंचने के लिए हाइड्रोलिक जैक और ऑगर ड्रिलिंग मशीन की मदद से 900रूरूयानी 35 इंच के डायमीटर का स्टील पाइप टनल के अंदर डाला जा रहा है। सभी मजदूर सुरक्षित हैं। उन्हें पाइप के जरिए ऑक्सीजन, खाना-पानी और मेडिसिन पहुंचाया जा रहा है।

फंसे हुए मजदूरों में सबसे ज्यादा झारखंड के

स्टेट डिजाजस्टर मैनेजमेंट के मुताबिक, टनल के अंदर झारखंड के 15, उत्तर प्रदेश के 8, ओडिशा के 5, बिहार के 4, पश्चिम बंगाल के 3, उत्तराखंड के 2, असम के 2 और हिमाचल प्रदेश का एक मजदूर शामिल है।

बचाव कार्य देखने पहुंचे सीएम पुष्कर सिंह धामी ने बताया- सभी मजदूर सुरक्षित हैं, उनसे वॉकी-टॉकी के जरिए संपर्क किया गया है। खाना-पानी पहुंचाया जा रहा है।

प्लास्टर नहीं होने की वजह से टनल का 60 मीटर हिस्सा धंसा

एनडीआरएफ के असिस्टेंट कमांडर करमवीर सिंह ने बताया- साढ़े 4 किलोमीटर लंबी और 14 मीटर चौड़ी इस टनल टनल के स्टार्टिंग पॉइंट से 200 मीटर तक प्लास्टर किया गया था। उससे आगे कोई प्लास्टर नहीं था, जिसकी वजह से ये हादसा हुआ।

रोहतक में पिता ने 4 बच्चों को दिया जहर

दो बेटियों की मौत, एक बेटे-बेटी की हालत गंभीर; उधारी वापस मांगने वालों से परेशान था

एजेंसी

रोहतक। रोहतक के कबूलपुर गांव में मंगलवार को एक शख्स ने अपने 4 बच्चों को जहर दे दिया। जहर देने वाले शख्स का नाम सुनील है। उसकी 2 बेटियों की मौत हो गई जबकि एक बेटा और बेटी की हालत गंभीर बनी हुई है। दोनों को अस्पताल में दाखिल कराया गया है। बताया जा रहा है कि आरोपी शख्स कर्ज की वजह से परेशान था और इसी वजह से उसने यह कदम उठाया।

सुनील ने बच्चों को जहर उस समय दिया जब उसकी पत्नी काम पर गई हुई थी। घटना के बाद लौटी उसकी पत्नी ने पुलिस में शिकायत दे दी है।

कबूलपुर गांव में रहने वाली सुमन ने बताया कि उसकी शादी 11-12 साल पहले सुनील से हुई थी। उनके चार बच्चे हैं जिनमें से 3 बेटियां और एक बेटा है। तीन बेटियों में लिसिका (10), हिना (8) व दीक्षा (7) है। बेटा देव 1 साल का है।

मंगलवार सुबह वह रूटीन की तरह काम पर गई हुई थी। उसका पति सुनील चारों बच्चों के साथ घर पर ही था। उसके काम पर जाने के बाद सुनील ने चारों बच्चों को कोई जहरीला पदार्थ खिला दिया।

उल्टियां होने पर चाचा ले गया अस्पताल

जब चारों भाई-बहन को उल्टियां होने लगी तो लिसिका बगल में ही रहने वाले अपने चाचा सुंदर के पास पहुंची। इसके बाद सुंदर आनन-फानन में चारों बच्चों को सिविल अस्पताल लेकर पहुंचा। वहां इमरजेंसी में डॉक्टरों ने प्राइमरी जांच के बाद लिसिका और दीक्षा को मृत घोषित कर दिया। 8 आठ की हिना और 1 साल के देव की हालत गंभीर बनी हुई है।

शार्ट न्यूज

सात माह में बिकी 1,017 करोड़ की शराब

ग्रेटर नोएडा। जिले के लोग पिछले सात माह में 1,017 करोड़ की शराब गटक गए हैं। लोगों के इस शौक से राजस्व भी बढ़ गया है। पिछले तीन साल (अप्रैल से अक्तूबर तक) में आबकारी विभाग को 44 प्रतिशत अधिक राजस्व मिला है। गर्मी में लोगों ने बीयर पीना ज्यादा पसंद किया है। ऐसे में बीयर की खपत भी करीब दोगुना बढ़ी है। जिले में शराब की 535 दुकानें हैं। इनमें अंग्रेजी शराब की 140, देसी शराब की 231, बीयर की 138, 25 मॉडल शॉप और एक भांग की दुकान है। दुकानों पर शराब की बिक्री बढ़ती जा रही है। पिछले तीन वर्ष में अंग्रेजी शराब की बिक्री 60,54,556 से 79,67,355 बोतल तक पहुंची है। वहीं, देसी शराब की बिक्री 81,65,416 से 1,20,49,414 लीटर पर पहुंच गई है। अप्रैल से अक्तूबर के बीच गर्मी अधिक होने से लोग बीयर पीना ज्यादा पसंद करते हैं, इसका असर बिक्री पर भी देखने को मिला है। वर्ष 2021 में 1.80 करोड़ बीयर की केन बिकी थी, जबकि चालू वर्ष में 3.01 करोड़ बिकी है। वर्ष 2021 के अप्रैल से अक्तूबर के बीच जहां 677 करोड़ रुपये का राजस्व मिला था, वहीं चालू वित्तीय वर्ष में 1017 करोड़ रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में उत्तराखण्ड पैवेलियन हॉल नं-पांच में कर रहा प्रतिभाग

नयी दिल्ली/देहरादून। राष्ट्रीय राजधानी के प्रगति मैदान में चल रहे 42वें भारत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में उत्तराखण्ड पैवेलियन हॉल नं-5 पर प्रतिभाग कर रहा है। उत्तराखण्ड पैवेलियन के निदेशक प्रदीप नेगी ने मंगलवार को बताया कि राज्य के पैवेलियन में कुल 36 स्टॉल लगे हैं, जिसमें जनपद हरिद्वार, देहरादून, पौढ़ी गढ़वाल, चम्पावत, नैनीताल, अल्मोड़ा, उत्तरकाशी, चमोली एवं टिहरी जनपद के शिल्पियों द्वारा उत्पादित उत्पादों के विपणन हेतु स्टॉल लगाये गये है। पैवेलियन में सरकारी विभागों की ओर से पर्यटन, खादी बोर्ड, एवं औद्योगिक बोर्ड द्वारा प्रतिभाग गया है तथा उत्तराखण्ड हथकरघा एवं हस्ताशिल्प विकास परिषद् के अधीन हिमाद्रि का भी स्टॉल लगा है। पैवेलियन में दिसम्बर, 2023 में प्रस्तावित उत्तराखण्ड ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2023 पर भी फोकस किया गया है। उत्तराखण्ड पैवेलियन में अल्मोड़ा की प्रसिद्ध बाल मिठाई, चम्पावत लोहाघाट की लोहे की कढ़ाई, हरिद्वार की लोही शॉल, चम्पावत के ऊनी कपड़े, ऋषिकेश के स्टोन एवं उत्तराखण्ड की प्रमुख दालें मुख्य आर्कषण का केन्द्र बनी हुई है।

कांग्रेस ने तेलंगाना को नष्ट कर दिया: केसीआर

नरसंपेट। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने सोमवार को नरसंपेट में आयोजित आशीर्वाद जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी का इतिहास सभी लोगों के सामने है, जिसने मूल तेलंगाना को नष्ट कर दिया। कांग्रेस पार्टी वह पार्टी है जिसने तेलंगाना को सूखा छोड़ दिया। अगर इस राज्य में दो नदियां कृष्णा और गोदावरी बहती हैं, तो किस पार्टी ने हमें मीठे पानी और सिंचाई के पानी के लिए इतनी परेशानियां दी है? मुख्यमंत्री केसीआर ने कहा कि तेलंगाना में बिजली नहीं थी, न ताजा पानी, न सिंचाई का पानी, अगर था तो किसानों की आत्महत्या, कारीगरों की भुखमरी। बीआरएस सरकार ने इन 10 वर्षों में आपके लिए हर काम ऐसा किया जिससे लोगों को फायदा हुआ। रबी फसल 35 हजार एकड़ में उगाई जाती थी, आज नरसंपेट में एक लाख 35 हजार एकड़ में यासांगी की खेती हो रही है। इसलिए आप सुदर्शन रेड्डी को भारी बहुमत से जिताएं। उन्होने कहा कि केसीआर से पहले भी कई लोग मुख्यमंत्री बने, दोनों नदियां यहां थी तो मीठे पानी की कमी क्यों थी? उत्तर प्रदेश राज्य, जहां गंगा बहती है, वहां अभी भी ताज़ा पानी नहीं है। बीआरएस ने इसे इतनी गंभीरता से लिया है। पानी इसलिए आया है क्योंकि हर विधायक ने यहां कड़ी मेहनत की है। यहां बिजली नहीं थी।

कांग्रेस होती तो अयोध्या में दीपोत्सव नहीं होता

रीवा/छतरपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राम मंदिर को लेकर कांग्रेस पर हमला करते हुए आज कहा कि अयोध्या में दीपोत्सव धूमधाम से मनाया गया। 22 जनवरी 2024 को राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा समारोह होगा। कांग्रेस होती तो न तो राम मंदिर का निर्माण होता और न ही अयोध्या में दीपोत्सव मनाया जाता। योगी ने रीवा जिले के सेमरिया में भाजपा प्रत्याशी केपी त्रिपाठी के समर्थन में जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस आस्था का सम्मान नहीं कर सकती और न ही सुरक्षा दे सकती है। कांग्रेस कभी विकास नहीं कर सकती क्योंकि कांग्रेस के पास कोई विजन नहीं है। भाजपा मतलब खुशहाली और कांग्रेस का मतलब बदहाली है। इस मौके पर रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा, भाजपा प्रत्याशी केपी त्रिपाठी, पार्टी के प्रदेश मंत्री राजेश पांडे सहित पार्टी के अन्य पदाधिकार मौजूद रहे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश में 403 विधानसभा सीटें हैं। कांग्रेस की दो और बसपा का केवल एक विधायक है। मध्यप्रदेश में कांग्रेस और बसपा का खाता नहीं खुलना चाहिए। विकास, सुरक्षा, सुशासन के लिए मॉडल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिया। भाजपा की सरकार ने पिछले 20 सालों में यहां विकास ही विकास किया है। मध्यप्रदेश में विकास ने रफ्तार पकड़ रखी है। यह रफ्तार रुकना नहीं चाहिए, क्योंकि यहां पर हर वर्ग का विकास और हर क्षेत्र में विकास हो रहा है।

कांग्रेस ने किसानों को लालच दिया, भाजपा ने परिश्रम को सम्मान दिया : पटेल

छिंदवाड़ा। केन्द्रीय मंत्री प्रहलाद पटेल ने आज कांग्रेस पर किसानों को लालच देने का आरोप लगाते हुए आज कहा कि कांग्रेस ने किसानों को लालच दिया, जबकि भाजपा ने किसानों के परिश्रम को सम्मान देने के लिए संकल्प लिया है। पटेल ने यह बात जिले की अमरवाडा विधानसभा के ग्राम पौनार में पार्टी प्रत्याशी मोनिका बट्टी के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए कही। केंद्रीय मंत्री पटेल ने अमरवाड़ा में घर-घर भाजपा अभियान के तहत मतदाता पर्चियों का वितरण किया और पीले चावल देकर 17 नवंबर को मतदान करने की अपील भी की। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि आने वाले साल से गेहूं का समर्थन मूल्य 2700 और धान का समर्थन मूल्य 3100 रुपये किया जाएगा। ये लालच नहीं है, बल्कि अन्नदाता के अथक परिश्रम को सम्मान है। जो बांध सरकार ने बनाए हैं, वे पेयजल के लिए बनाए जा रहे हैं। दिसंबर 2024 तक हर घर को पानी दिया जाएगा, ये आश्वासन नहीं गारंटी है। भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने महिला आरक्षण बिल पास किया, जो अब महिलाओं के सम्मान की नई गाथा लिखेगा। पटेल ने कहा कि भाजपा ने संकल्प पत्र में लिखा है कि 600 रुपये मिलता है अब 1500 रुपये दिए जाएंगे। भाजपा सामाजिक सुरक्षा की चिंता भी की है, ये वोट के लिए नहीं है, ये विशुद्ध रूप से जनहित के कार्य हैं।

जनता तय करेगी उसे कैसा प्रदेश चाहिए

मुरैना। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने आज कहा कि 17 तारीख को होने वाला चुनाव मध्यप्रदेश के भविष्य का चुनाव है, यह किसी प्रत्याशी या पार्टी का चुनाव नहीं है, इसलिए मतदाता को तय करना है कि उसे प्रदेश को किस ओर ले जाना है। कमलनाथ ने जिले के जौरा और दिमनी में कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में चुनावी सभाओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अब केवल दो दिन बचे हैं और 17 तारीख को होने वाले मतदान में आपको तय करना है कि कैसा प्रदेश आपको चाहिए है। आज आपके बीच में आकर उन्हें बहुत खुशी है और आपके जो उम्मीदवार है वो मेरे प्रीतिनिधि भी है। वे पुलिस, प्रशासन और भाजपा के लोगों को बताना चाहते हैं कि कमलनाथ अब 2018 के मॉडल नहीं हैं अब 2023 का मॉडल हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि आज प्रदेश की तस्वीर आपके सामने है आज प्रदेश को चौपट प्रदेश बनाकर रख दिया है। आज प्रदेश में स्वास्थ्य और शिक्षा व्यवस्था चौपट है। वे नौजवानों को देखते हैं तो उन्हें बड़ी चिंता होती है, क्योंकि इन नौजवानों से पूरे मध्यप्रदेश का निर्माण होना है। लेकिन अगर इन्हीं का भविष्य अंधकार में रहा तो किस तरह से निर्माण होगा। आज मध्यप्रदेश में एक करोड़ नौजवान बेरोजगार हैं। आज प्रदेश में पैसे दो और रोजगार लो की व्यवस्था चल रही है, प्रदेश में 250 से अधिक घोटाले हुए हैं।

तीन साल में तैयार होगा चिल्ला एलिवेटेड रोड

यूपी स्टेट ब्रिज कॉरपोरेशन लिमिटेड ने निकाला टेंडर, 680 करोड़ होगी निर्माण लागत

नोएडा। यूपी स्टेट ब्रिज कॉरपोरेशन लिमिटेड ने मयूर फ्लाईओवर के करीब चिल्ला रेगुलेटर से महामाया फ्लाईओवर तक 5.96 किमी लंबे चिल्ला एलिवेटेड रोड का टेंडर निकाला है। छह लेन के एलिवेटेड रोड का काम तीन साल में पूरा करना होगा। पांच साल तक इसकी रखरखाव करनी होगी। इसकी निर्माण लागत 680 करोड़ रुपये होगी। परियोजना में यूपी शासन और नोएडा प्राधिकरण को 50-50 प्रतिशत धनराशि वहन करनी होगी। इस परियोजना का काम पाने के लिए 13 दिसंबर तक आवेदन किया जा सकेगा। इसकी प्री-बिड बैठक 29 नवंबर का होगी। इसकी तकनीकी बिड 14 दिसंबर को खुलेगी।

परियोजना में प्राधिकरण करीब 74 करोड़ रुपये खर्च कर चुका है और इसका 13 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। शासन को इस परियोजना में जो पैसा देना था, वह नहीं दिया गया। प्राधिकरण के बार-बार आग्रह के बाद भी फंड नहीं मिलने पर काम बंद हो गया। प्राधिकरण ने साफ किया था कि जब तक शासन फंड रिलीज नहीं करता है तब तक काम नहीं हो पाएगा। इसके

बाद शासन स्तर पर निर्माण लागत के बाबत चर्चा शुरू हुई। आखिर में शासन ने उक्त परियोजना की निर्माण लागत 787 करोड़ तय की। इस परियोजना में मुख्य एलिवेटेड रोड के दो कैरेज होंगे। एक कैरेज 5198 मीटर तो दूसरा 4273 मीटर लंबा होगा।

शाहदरा ड्रेन के साथ बनेगा एलिवेटेड रोड

नोएडा लिंक रोड और डीएनडी फ्लाईओवर पर वाहनों का दबाव कम करने के लिए प्राधिकरण ने एलिवेटेड रोड की योजना बनाई है। दिल्ली में चिल्ला रेगुलेटर से शुरू होने वाली सड़क शाहदरा ड्रेन के साथ ऊपर बनेगी। करीब छह किमी लंबी सड़क का दूसरा हिस्सा महामाया फ्लाईओवर से थोड़ा पहले खत्म हो जाएगी। इसके तैयार होने पर नोएडा-ग्रेनो एक्सप्रेसवे को जोड़ने वाली सड़क पर भी ट्रैफिक का दबाव कम हो जाएगा। बगैर जाम में फंसे लोग चिल्ला रेगुलेटर से सीधे महामाया फ्लाईओवर व एक्सप्रेसवे तक पहुंच सकेंगे। इसका सीधा फायदा पूर्वी दिल्ली के साथ गाजियाबाद से नोएडा-ग्रेनो के बीच सफर करने वाले लोगों को मिलेगा।

सेक्टर-15, 16 और 18 में बनेंगे पांच रैंप

एलिवेटेड रोड से चढ़ने और उतरने के लिए पांच रैंप बनेंगे। यह रैंप सेक्टर-15, 16 और 18 को जोड़ेंगे। अधिकारियों के मुताबिक, सेक्टर-15 से चढ़ने के लिए एक रैंप एलिवेटेड रोड पर बनाया जाएगा। सेक्टर-16 में दोनों ओर उतरने के लिए एक-एक रैंप बनेगा।

वहीं, सेक्टर-16 में चढ़ने के लिए एक रैंप बनेगा। इसके अलावा सेक्टर-18 में उतरने के लिए एक रैंप बनेगा। चढ़ने और उतरने वाले रैंप तीन लेन के होंगे। वहीं इंटरमीडिएट रैंप दो लेन का होगा।

पांच लाख लोगों को मिलेगा लाभ

निर्माण से अक्षरधाम, मयूर विहार से नोएडा, परी चौक, कालिंदी कुंज, सरिता विहार तक जाम की समस्या से लोगों को मुक्ति मिलेगी। साथ ही शहर में ट्रैफिक व्यवस्था बहाली में भी मदद मिलेगी।

इसके बनने से देश के अलग-अलग हिस्सों में जाने वाले पांच लाख लोगों को फायदा होगा। यहां से रोजाना नोएडा-दिल्ली का सफर करने वाले दो लाख लोगों को जाम से मुक्ति मिलेगी।

फॉरेंसिक की टीम को मिला सुसाइड नोट, नवीन ने खुद को लगाई थी आग

शिमला। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में सरकाघाट उपमंडल के बडाल गांव निवासी मृतक नवीन के जले हुए शरीर से जो जला हुआ पर्स मिला उसमें पुलिस और फॉरेंसिक की टीम को सुसाइड नोट मिला है।

उल्लेखनीय है कि जिस दामाद को पत्नी और ससुरालियों द्वारा जलाकर मौत के घाट उतारने की शंका जाहीर की जा रही थी, उस दामाद के पर्स से सुसाईड नोट मिलने से अब इस मामले में नया मोड़ आ गया है।

पुलिस ने बताया जा रहा है कि पर्स काफी हद तक जल गया लेकिन सुसाइड नोट बच गया है। पुलिस ने सुसाइड नोट को जांच के लिए फॉरेंसिक लैब भेज दिया है। वहां पर हैंडराइटिंग का मिलान किया जाएगा, उसके बाद ही पुलिस इस एंगल से जांच को आगे बढ़ाएगी। बता दें कि यह सारी घटना नवीन के सैण गांव स्थित ससुराल में घटी है।

मृतक नवीन ने अपने सुसाइड नोट में लिखा है,मैं अपने जीवन से परेशान हो चुका हूं। मेरी पत्नी और बेटी मेरे साथ नहीं रहते। इसलिए मैं यह कदम उठाने जा रहा हूं। मेरा निवेदन है कि इसके लिए किसी को भी जिम्मेदार न ठहराया जाए। मेरी जो भी संपत्ति है वह मेरी बेटी को दे दी जाए।''

अभी तक हुई पुलिस की जांच में यह बात सामने आई है कि मृतक नवीन बिस्लेरी की खाली बोतल में पेट्रोल भरकर अपने साथ ले गया था। उसने ससुराल में खुद पर तेल छिड़का और आग लगा दी।

इस दौरान उसकी सास और वहां मौजूद दो अन्य लोगों ने उसे बचाने की कोशिश भी की। इस घटना में सास भी झुलसी है और मेडिकल कॉलेज नेरचौक में उसका उपचार जारी है। लेकिन पुलिस इस मामले की हर पहलू से जांच कर रही है ताकि किसी भी प्रकार की कोई शंका शेष न रह जाए। पुलिस अधीक्षक मंडी सौम्या सांबशिवन ने सुसाइड नोट मिलने की पुष्टि की है।

पंजाब में रात को हवा की गुणवत्ता में सात प्रतिशत का सुधार

चंडीगढ़। पंजाब में औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में पिछले वर्ष 2022 की तुलना में 7.6 प्रतिशत और 2021 की तुलना में 22.8 प्रतिशत की कमी देखी गई है।

पर्यावरण मंत्री गुरमीत सिंह मीत हेयर ने सोमवार को कहा कि हवा की गुणवत्ता में सुधार के लिए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के अनुसार वास्तविक समय के आधार पर वायु गुणवत्ता की निगरानी के लिए राज्य के अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, खन्ना, मंडी गोबिंदगढ़ और पटियाला पीपीसीबी ने छह शहरों में सतत परिवेश वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशन (सीएएक्यूएमएस) स्थापित किए हैं। पिछले वर्ष 2022 और 2021 की दीपावली के दिनों की तुलना में 2023 में इसी अवधि के दौरान वायु गुणवत्ता सूचकांक के तुलनात्मक स्तर में सुधार हुआ है। यह डेटा दीपावली के दिन सुबह 7.00 बजे से अगले दिन सुबह 6.00 बजे तक के आंकड़ों पर आधारित हैं।

मंत्री ने कहा कि राज्य के पांच शहरों अमृतसर, लुधियाना, खन्ना, मंडी गोबिंदगढ़ और पटियाला के वायु गुणवत्ता सूचकांक में पिछले दो साल की दीपावली के दिनों 2022 और 2021 की तुलना में इस साल दीपावली के दौरान कमी देखी गई है। राज्य में वायु गुणवत्ता सूचकांक 207 था (जोकि मध्यम श्रेणी के लिए अधिकतम वायु गुणवत्ता सूचकांक 200 से थोड़ा अधिक है) जबकि 2022 में वायु गुणवत्ता सूचकांक 224 और 2021 में वायु गुणवत्ता सूचकांक 268 था।

जालंधर में 20 नवंबर को पहुंचेगी सशस्त्र सेना झंडा दिवस साइकिल रैली

जालंधर। आम लोगों को सशस्त्र सेना झंडा दिवस की महत्ता के बारे में जागरूक करने के लिए साइकिल रैली निकाली जा रही है जो सात नवंबर को चंडीगढ़ से शुरू हुई और यह 20 नवंबर को स्थानीय वार मैमोरियल जालंधर पहुंचेगी। सरकारी प्रवक्ता ने इस बारे में जानकारी देते बताया कि देशभर में 07 दिसंबर को सशस्त्र सेना झंडा दिवस मनाया जाता है। लोगों को इस दिन के बारे में जानकारी देने और सेना में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, रक्षा सेवाएं कल्याण निदेशालय, पंजाब 07 दिसंबर तक एक साइकिल रैली आयोजित कर रहा है। उन्होंने बताया कि यह साइकिल रैली राज्य के सभी जिलों से होकर आगामी 07 दिसंबर (झंडा दिवस) को पंजाब राजभवन, चंडीगढ़ में समाप्त होगी।

शरद ऋतु की जादुई छटा देखने के लिए पर्यटक कश्मीर के मुगल उद्यानों में उमड़े

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर में शरद ऋतु की जादुई छटा देखने के लिए पर्यटक मुगल गार्डन में उमड़ रहे हैं।

कश्मीर घाटी में सर्दियों की शुरुआत से पहले शरद ऋतु का मौसम अपने चरम पर है और बगीचों में शक्तिशाली चिनार सहित पेड़ हरे से लाल और सुनहरे से पीले रंग में बदल गए हैं जो चारों ओर एक पूरी तरह से अलग वातावरण का दृश्य पेश कर रहे है। इंदौर के आनंद कोठारी कश्मीर में शरद ऋतु के बदलते रंगों को देखने के लिए अपने परिवार के साथ सीधे मुगल गार्डन निशात पहुंचे। उन्होंने कहा, मुगल गार्डन निशात में शक्तिशाली चिनार के पेड़ों का पीला रंग बिल्कुल सुंदर दिखता है।

पर्यटक कोठारी की पत्नी ने कश्मीर के मौसम, माहौल और पतझड़ के मौसम को बेहद खूबसूरत बताया और बेहतरीन तरीके से यहां आने पर खुशी जताई।

उन्होंने कहा, मैं देख सकता हूं कि माहौल और मौसम इतना अच्छा है कि हम यहां अपनी यात्राओं का बहुत अच्छे से आनंद ले सकते हैं। जब हमारा विमान कश्मीर घाटी के ऊपर से गुजर रहा था तो हम पहाड़ों पर बर्फ देखकर बहुत उत्साहित थे। बेंगलुरु के एक अन्य पर्यटक संजय सूबेदार, जो जम्मू में वैष्णो देवी मंदिर के दर्शन के बाद पहली बार कश्मीर आए हैं, ने शरद ऋतु के रंगों को मंत्रमुग्ध करने वाला बताया। उन्होंने कहा, मुगल गार्डन निशात में शक्तिशाली चिनार के पेड़ों का पीला रंग बिल्कुल सुंदर और आश्चर्यजनक लगता है।

हिमाचल में दिवाली पर अग्निकांड की 40 घटनाएं, 1.13 करोड़ की सम्पत्ति राख

शिमला। हिमाचल प्रदेश में छोटी और बड़ी दीपावली की रात प्रदेशभर में 40 जगहों पर आग लगने की घटनाएं सामने आई। ज्यादातर अग्निकांड के मामले रविवार और सोमवार की रात को घटित हुए है। हालांकि इन घटनाओं में कोई जान-माल का नुकसान नहीं हुआ। अग्निशमन विभाग से मिली जानकारी के मुताबिक 40 में से हाउस फायर की 19 और फारेस्ट फायर की तीन घटनाएं हुई हैं। जबकि 18 अन्य आग जनित घटनाएं सामने आई हैं। इन घटनाओं में 1 करोड़ 13 लाख की संपति राख हुई, जबकि विभाग ने 10 करोड़ 51 लाख की संपति को राख

होने से बचाया है। कांगड़ा जिला में अग्निकांड की सबसे ज्यादा 11 घटनाएं हुई है। शिमला जिला में नौ जगह आग लगी। इसी तरह सोलन में आठ, हमीरपुर व मंडी में तीन-तीन, सिरमौर व ऊना में दो-दो, किन्नौर, कुल्लू व लाहौल-स्पीति में आग लगने की एक-एक घटना सामने आई है। चम्बा और बिलासपुर जिलों में अग्निकांड के कोई मामले दर्ज नहीं किए गए। वही, नुकसान की बात करें तो किन्नौर जिला में सबसे ज्यादा 70 लाख की संपति आग से तबाह हुई। कांगड़ा जिला में 11.76 लाख, सोलन में 11 लाख, शिमला में 6.62 लाख, हमीरपुर में 5.85 लाख और मंडी में 2.70 लाख की संपति का नुकसान हुआ है।

मोदी चुनाव में करते हैं लोगों को भड़काने वाली बात

कोटा। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भारतीय जनता पार्टी पर चुनाव में लोगों को जाति एवं धर्म के नाम पर भड़काने का आरोप लगाते हुए कहा है कि ये लोग चुनाव में मुद्दे की बात नहीं कर केवल लोगों को भड़काने एवं ध्यान भटकाने की बात करते हैं। गहलोत मंगलवार को कांग्रेस की गारंटी यात्रा के अगले चरण की शुरुआत के मौके पर यहां पहुंचने पर मीडिया से बातचीत में यह बात कही। विधानसभा चुनाव में मोदी के दौरे को लेकर किए सवाल पर उन्होंने कहा कि वह मुद्दे पर बात नहीं करते और लोगों को भड़काने वाली बात करते हैं।

निर्माणाधीन टनल में फंसे मजदूरों को बचाने के कार्यों की लगातार समीक्षा कर रहे है मुख्यमंत्री

देहरादून। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में निर्माणाधीन टनल में भूस्खलन के कारण आए मलवे में फंसे चालीस श्रमिकों को सुरक्षित निकालने के लिए लगातार तीसरे दिन भी राहत कार्य (रेस्क्यू) जारी हैं। खुद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी लगातार रेस्क्यू कार्यों की समीक्षा कर रहे हैं। मुख्यमंत्री धामी ने मंगलवार को अपने आवास में शासन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर निर्देश दिये कि मौके पर तैनात जिला प्रशासन के अधिकारियों एवं वहां पर कार्य कर रही एजेंसियों से निरन्तर समन्वय बनाकर रखें, राहत सामग्री की किसी भी प्रकार की आवश्यकता पड़ने पर, शीघ्र उपलब्ध कराई जाए। मुख्यमंत्री के निर्देश पर शासन द्वारा सिल्क्यारा सुरंग में हुए भूस्खलन के अध्ययन एवं कारणों की जांच के लिए निदेशक उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण एवं प्रबंधन केंद्र की अध्यक्षता में गठित समिति में शामिल विशेषज्ञों ने स्थल का निरीक्षण कर जांच की कार्रवाई शुरू कर दी है। राहत एवं बचाव के कार्य तेजी से चल रहे हैं। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव राधा रतूड़ी, विशेष प्रमुख सचिव अभिनव कुमार, सचिव आर. मीनाक्षी सुंदरम, शैलेश बगोली, विनय शंकर पाण्डेय, एडीजी ए.पी. अंशुमन, सूचना महानिदेशक बंशीधर तिवारी एवं अपर सचिव जे.सी. काण्डपाल उपस्थित रहे।

त्रिपुरा में हत्या के आरोप में वकील को 12 दिन की न्यायिक हिरासत

एजेंसी

अगरतला। एक स्थानीय अदालत ने सोमवार को एक वकील को 12 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया, जो कथित तौर पर अदालत के क्लर्क अमित अचार्जी की हत्या में शामिल था।

क्लर्क अमित की कोलकाता के एक अस्पताल में इसी साल पांच सितंबर को शहर के अदालत परिसर में अधिवक्ता गोपाल सिंह के नेतृत्व वाले एक समूह द्वारा हमला किए जाने के बाद मौत हो गई थी। पीड़ित के पिता दिलीप अचार्जी ने 23 सितंबर को पश्चिम अगरतला पुलिस थाने में अधिवक्ता गोपाल सिंह के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी थी।

पुलिस में शिकायत दर्ज कराने के तुरंत बाद अधिवक्ता सिंह अन्य चार आरोपियों के साथ भाग रहा था। लोगों के एक समूह द्वारा पकड़े जाने के बाद पुलिस ने रविवार को उसे शहर के एक बाजार से गिरफ्तार कर लिया था।

भारत-नेपाल सीमा पर जौलजीवी मेले का धामी ने किया उद्घाटन

पिथौरागढ़/नैनीताल। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को पिथौरागढ़ के ऐतिहासिक जौलजीवी मेले का उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि जौलजीबी मेला भारत और नेपाल की साझा संस्कृति का प्रतीक है और यह दोनों को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नेपाल न केवल मित्र राष्ट्र है बल्कि उसके साथ हमारा पीढ़ी दर पीढ़ी का रिश्ता है। खासकर उत्तराखंड के साथ रोटी बेटी का संबंध है। हमारी एक संस्कृति है। एक जैसा रहन सहन और

एक जैसी पूजा पद्धति है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के प्रयास से भारत नेपाल की मित्रता प्रगाढ़ हुई है। दोनों देशों में आपसी सहयोग बढ़ा है और ऐतिहासिक साझेदारी को अटूट शक्ति के रूप में फिर से पुनर्स्थापित करने का काम हो रहा है।

कार्यक्रम को सांसद अजय टमटा और पूर्व मंत्री विशन सिंह चुफाल ने भी संबोधित किया। मुख्यमंत्री ने बच्चों को बाल दिवस पर बधाई दी और चॉकलेट भी भेंट की। साथ ही काली नदी पर राफ्टिंग का भी उद्घाटन किया। भारत नेपाल सीमा पर काली और गोरी नदी के संगम पर लगने वाले अंतरराष्ट्रीय मेले में स्थानीय उत्पादों की भरमार है।

खासकर बुनकरों द्वारा निर्मित ऊनी उत्पाद जैसे दन, चुटका, पंखी, पसमीना शाल शामिल हैं। तिब्बत का चुरू कंबल यहां लोगों के बीच काफी चर्चित हो रहा है। भारी भीड़ के चलते व्यापारियों के चेहरे खिले नजर आ रहे हैं।

स्वामी प्रसाद के दिमाग का इलाज करायें अखिलेश : चौधरी

मथुरा। उत्तर प्रदेश के गन्ना विकास मंत्री लक्ष्मीनारायण चौधरी ने समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष को सलाह दी है कि वें हिन्दू देवी देवताओं और धर्मग्रंथों के बारे में अनर्गल बयानबाजी करने वाले सपा विधायक स्वामी प्रसाद मौर्य का मानसिक परीक्षण समय रहते करा लें, वरना यह उनके ही दल के लिये घातक सिद्ध हो सकता है।

चौधरी ने सोमवार को कहा कि स्वामी प्रसाद मौर्य उनके पुराने साथी

रहे हैं। जब वे विधायक थे तो मौर्य लोकदल के ब्लाक अध्यक्ष थे।

उन्होंने कहा कि कभी कभी ऐसा होता है कि परिस्थितियों के कारण कोई व्यक्ति विक्षिप्त हो जाता है।मौर्य संभवत: उसी स्थिति से गुजर रहे हैं। इसलिए सपा अध्यक्ष को स्वामी प्रसाद मौर्य के दिमाग का आगरा या बरेली में परीक्षण कराना चाहिए।

गन्ना विकास मंत्री ने कहा कि उनका मानना है कि नारी की सदैव पूजा की जानी चाहिए।

मौर्य ने धन और एश्वर्य की देवी मां लक्ष्मी पर अशोभनीय टिप्पणी की है, जो सरासर अनुचित और करोड़ों भारतीयों की भावनाओं को आहत करने वाली है और इसके लिए उन्हे तुरंत माफी मांगनी चाहिए।

गौरतलब है कि स्वामी प्रसाद मौर्य ने हाल में ही एक पोस्ट डालकर कहा था कि उन्होंने चार, आठ, 16, 20 हाथ के आदमी के बारे में न सुना न देखा है क्योंकि सामान्य बच्चे के दो हाथ, दो पैर, दो आंख, दो कान, दो छेदवाली नाक, सिर और पेट ही देखा है फिर चार हाथों वाली लक्ष्मी कैसे पैदा हो सकती हैं।

सिंधिया ने भिंड दौरे को लेकर कमलनाथ पर किया हमला

भिंड। केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के भिंड दौरे को लेकर आज उन पर जमकर हमला किया और कहा कि भिंड एक स्वाभिमानी ज़िला है, अगर यहां की जनता के साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है तो वे जनता से निवेदन करते हैं कि वह कांग्रेस का बोरियां बिस्तर बांध कर उस पर ताला लगा दें। सिंधिया ने यह बात भिंड में पार्टी प्रत्याशी के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि 15 महीने कांग्रेस की सरकार थी, लेकिन क्या एक बार भी तत्कालीन मुख्यमंत्री भिंड आए। उन्होंने कहा कि अभी चुनाव चल रहे है। अभी भी नहीं आए, जो मुख्यमंत्री ज़िला मुख्यालय में नहीं आए, वो अगर सरकार में आ गया, तो क्या पाँच साल में कभी आएगा।

शार्ट न्यूज

दिल्ली जमीन घोटाला : मंत्री आतिशी ने सौंपी सीएम केजरीवाल को 650 पन्नों की रिपोर्ट

नई दिल्ली। दिल्ली की सतर्कता मंत्री आतिशी ने बामनोली भूमि अधिग्रहण मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को रिपोर्ट सौंप दी है। मुख्य सचिव नरेश कुमार के खिलाफ शिकायत के संबंध में 650 पेज की प्राथमिक रिपोर्ट तैयार की गई है। शिकायत में आरोप लगाया गया कि मुख्य सचिव के बेटे को एक ऐसे व्यक्ति के रिश्तेदार ने नौकरी पर रखा था, जिसे एक सड़क परियोजना के लिए अधिग्रहीत जमीन के लिए बढ़ा हुआ मुआवजा दिया गया था। रिपोर्ट के मुताबिकत, दिल्ली मंत्री ने 650 पन्नों की रिपोर्ट केजरीवाल को सौंपी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस मामले में 850 करोड़ रुपये का नाजायज फायदा पहुंचाया गया है। यह जमीन 2015 में द्वारका एक्सप्रेसवे के पास केवल 75 लाख रुपये में खरीदी गई थी।। मुख्य सचिव की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। फिलहाल, केजरीवाल ने आतिशी से शिकायत की जांच कराने को कहा था।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय पं. जवाहर लाल नेहरु को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किए

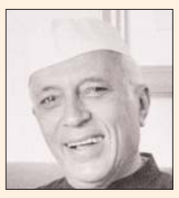

नई दिल्ली। नेशनल चाइल्ड एंड वूमेन ड्वलपमेंट चेरिटेबल ट्रस्ट बरवाला,दिल्ली में आज ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिक्षाविद् दयानंद वत्स भारतीय ने ट्रस्ट के मुख्यालय बरवाला में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु की 134 वीं जयंती पर कृतज्ञ राष्ट्र की और से उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। अपने संबोधन में दयानंद वत्स ने कहा कि पंडित नेहरु आधुनिक भारत के निर्माता थे। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रेरणादायी था। भारत के नव-निर्माण में उनका योगदान अविस्मरणीय है। पं. नेहरू के कार्यकाल में भारत ने पंचवर्षीय योजनाऐं बनाकर देश के विकास को नई गति प्रदान की थी। उनका जन्मदिन प्रति वर्ष 14नवंबर को बाल दिवस के रुप में मनाया जाता है।

नोएडा में परचून की दुकान में फटा सिलेंडर

नोएडा। नोएडा के सेक्टर-73 सर्फाबाद में मकान के अंदर बनी परचून की दुकान में सिलेंडर फट गया। बताया गया कि यहां गैस रिफलिंग का काम किया जा रहा था। छोटा सिलेंडर फटा है। इसके कारण दुकान में आग लग गई। आग की वजह से दुकान में रखा मॉल जलकर राख हो गया। सिलेंडर फटने की आवाज इतनी तेज थी कि आसपास लोगों में हड़कंप मच गया। मौके पर दमकल की एक गाड़ी ने आग पर काबू पाया। इस हादसे में एक व्यक्ति झुलस गया है। इसकी पहचान जय करण के रूप में हुई है। प्राथमिक उपचार के लिए जिला अस्पताल में भेजा गया है। पुलिस ने बताया, सेक्टर-73 के सर्फाबाद के एक मकान में परचून की दुकान संचालित हो रही थी। यही पर छोटे गैस सिलेंडर रीफ़िल होते थे। सुबह करीब सवा नौ बजे यहां रीफ़िल के दौरान छोटा सिलेंडर फट गया। बताया गया प्रेशर ज्यादा होने की वजह से सिलेंडर फटा होगा। इससे आग लग गई। आग की चपेट में जयकरण आया। आग ऊपर की तरफ नहीं गई। अन्यथा बड़ा हादसा हो सकता था। बता दे इससे पहले भी सलारपुर गांव में सिलेंडर फटने की घटना हो चुकी है।

गाजियाबाद में पानी को लेकर आंदोलन उग्र

गाजियाबाद। गाजियाबाद के खोड़ा के स्थानीय निवासी पानी को लेकर पिछले 6 दिन से भूख हड़ताल पर बैठे हैं। मंगलवार को आंदोलन उग्र हो गया। सैकड़ों की संख्या में पुरुष और महिलाएं सड़क पर आ गए और उन्होंने नेशनल हाईवे को जोड़ने वाली सर्विस रोड को जाम कर दिया। खोड़ा नगर पालिका के स्थानीय लोगों का आरोप है की लाखों की आबादी होने के बावजूद उन्हें पीने के लिए पानी नहीं मिल रहा है। जो आदमी 5 से 7 लाख रुपए खर्च कर सकता है। वह समरसेबल लगवा लेता है। लेकिन यह भी स्थाई समाधान नहीं है। लोगों का आरोप है कि जब यहां सांसद विधायक सब सत्ताधारी पार्टी के हैं, तो फिर भी उनसे ऐसा सौतेलापन वाला व्यवहार क्यों किया जा रहा है। खोड़ा रेजिडेंट एसोसिएशन इसी को लेकर पिछले 6 दिनों से भूख हड़ताल कर रही है। मंगलवार को अचानक से सैकड़ों की संख्या में महिला और पुरुष सड़क पर आ गए। थाली बजाते हुए इन्होंने प्रदर्शन किया और नेशनल हाईवे 9 को खोड़ा से जोड़ने वाली सर्विस रोड को जाम कर दिया। खोड़ा काफी बड़ी नगर पालिका है। यहां लाखों लोग निवास करते हैं।

पुलिस और बदमाशों के बीच मुड़भेड़

गाजियाबाद। गाजियाबाद के कौशांबी इलाके में मंगलवार की सुबह करीब 4: 00 बजे पुलिस और बदमाशों के बीच मुड़भेड़ हो गई। इस मुड़भेड़ में एक बदमाश के पैर में गोली लगी है वही उसका साथी बदमाश भी गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के मुताबिक यह लोग लुटेरे है और इनके कब्जे से बाइक, कंट्री मेड पिस्तौल और इलाके से लूट गया मोबाइल बरामद किया है। इंदिरापुरम एसीपी स्वतंत्र सिंह ने बताया कि मंगलवार की सुबह 4: 00 बजे एक बाइक पर दो संदिग्ध लोग आते दिखाई दिए। जिनको रोकने का प्रयास पुलिस ने किया लेकिन यह पुलिस पर फायरिंग करते हुए फरार होने लगे। इसके बाद पुलिस ने चारों तरफ घेराबंदी करके इन्हें रोका तो उन्होंने दोबारा पुलिस पर फायरिंग कर दी। स्वतंत्र सिंह के मुताबिक पुलिस ने भी जवाबी फायरिंग की जिसमें दोनों बदमाश सड़क पर गिर गए। पास जाने पर पता चला की अंकित नाम के बदमाश के पैर में गोली लगी है, और वही उसका साथी विकास को भी गिरफ्तार किया गया है। इनके कब्जे से बाइक कंट्री मेड़ पिस्तौल और इलाके से लूट गया, एक मोबाइल बरामद हुआ है।

तीन जगह सड़क हादसा, एक की मौत

गाजियाबाद। गाजियाबाद में तीन भयंकर एक्सीडेंट हुए। एक एक्सीडेंट में युवक की मौत हो गयी। वहीं एक बेकाबू कार मेडिकल स्टोर में घुस गई। जबकि इंदिरापुरम में दो कारों की जबरदस्त भिंड़त हुई है। गाजियाबाद के लोनी थाना क्षेत्र के बंथला चिरोड़ी रोड पर निठोरा गेट के पास्स एक मोटरसाइकिल बिजली के खंभे से टकरा गई। जिसमें मोटरसाइकिल सवार शकलपुर गांव निवासी अनमोल की मौके पर मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं एक हादसा गाजियाबाद के थाना साहिबाबाद क्षेत्र में हुआ। जिसका हैरान करने वाला सीसीटीवी भी सामने आया है। थाना क्षेत्र की सेवियर सोसाइटी में एक बेकाबू कार मेडिकल स्टोर में घुस गई। गनीमत यह रही कि उस समय मेडिकल स्टोर में कोई नहीं था। नहीं तो गंभीर हादसा हो सकता था।

शिक्षाविद् दयानंद वत्स भारतीय ने आज श्रीहरि विष्णु निवास बरवाला में परिवार सहित श्री गौवर्धन महाराज की विधि विधान से पूजा अर्चना की और विश्व शांति और मानव कल्याण की मंगलकामनाएं की।

दिल्ली सरकार ने पानी छिड़काव के विशेष अभियान का किया आगाज

नयी दिल्ली। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने मंगलवार को वायु प्रदूषण के मद्देनजर पूरी दिल्ली में पानी के छिड़काव के लिए विशेष अभियान की शुरूआत की।

गोपाल राय ने यहाँ हरी झंडी दिखाकर पानी छिड़काव वाले मशीनों को रवाना किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि पानी का छिड़काव करने के लिए 215 मोबाइल एंटी स्मॉग गन लगाए गए हैं। सभी 70 विधानसभा छिड़काव कराया जाएगा।

उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार ने लोगों के सहयोग से प्रदूषण को कम करने में सफलता पायी है। सरकार प्रदूषण को कम करने के लिए कई अभियान चला रही है। जिसमें एंटी डस्ट अभियान, एंटी ओपन बर्निंग

अभियान, बायो डीकम्पोज़र का छिड़काव, वृक्षारोपण अभियान आदि शामिल है। एक्यूआई को देखते हुए मंगलवार से पूरे दिल्ली में सड़कों पर 215 मोबाइल एंटी स्मॉग गन से पानी के छिड़काव का अभियान शुरू किया गया है।

पर्यावरण मंत्री ने बताया कि बारिश का असर अब खत्म हो रहा है और हवा की गति भी कम हो रही है इसलिए हम पाने छिड़काव का विशेष अभियान शुरू कर रहे हैं।

इसके लिए हमारे पास पहले 345 वाटर स्प्रिंकलिंग मशीनें काम कर रही है, जिसमें 30 मशीने और बढ़ गई हैं और अब कुल 375 वाटर स्प्रीकलिंग मशीनें दिल्ली की सड़कों पर पानी का छिड़काव करेंगी।

इसके साथ ही, मोबाइल एंटी स्मॉग गन जो पहले 192 थे, उसमें 23 की बढ़ोत्तरी हुई और अब 215 मोबाइल स्माग गन सड़कों पर चलाई जाएंगी। इसी तरह जो हाईराइज बिल्डिंगें हैं उसपर 106 एंटी स्मॉग गन तैनात हैं वे अपना काम कर रही हैं।

उन्होंने कहा कि पंजाब में सरकार की पहल से पराली के जलने की संख्या में कमी आई है। पंजाब सरकार के प्रयासों का ही परिणाम है कि पिछले सालों की तुलना में इस वर्ष पराली जलने की घटना में 60 प्रतिशत की कमी आई है।

व्यापार मेले में लगे उत्तराखंड पैवेलियन में सजे हैं 36 स्टॉल

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 42वें भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला में उत्तराखंड भी प्रतिभाग कर रहा है और इसमें राज्य की तरफ से 36 स्टॉल लगाए गए हैं।

उत्तराखण्ड पैवेलियन के निदेशक प्रदीप नेगी मे यह जानकारी देते हुए बताया कि व्यापार मेले में उत्तराखण्ड पैवेलियन हॉल संख्या 5 में है जिसमें राज्य की तरफ से 36 स्टॉल सजे हैं।

उन्होंने बताया कि उत्तराखंड पैवेलियन में हरिद्वार, देहरादून, चम्पावत, नैनीताल, अल्मोड़ा, उत्तरकाशी, टिहरी, चमोली और पौड़ी जिलों के शिल्पियों के उत्पादों के विपणन स्टॉल लगाये गये है। पैवेलियन में सरकारी विभागों की ओर से पर्यटन, खादी बोर्ड एवं औद्योगिक बोर्ड द्वारा प्रतिभाग किया जा रहा है। इसमें उत्तराखण्ड हथकरघा एवं हस्तशिल्प विकास परिषद् के अधीन हिमाद्रि का भी स्टॉल लगा है।

श्री नेगी ने कहा कि पैवेलियन में दिसम्बर में प्रस्तावित उत्तराखण्ड ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट पर भी फोकस किया गया है। पैवेलियन में अल्मोड़ा की प्रसिद्ध बाल मिठाई, चम्पावत लोहाघाट की लोहे की कढ़ाई, हरिद्वार की लोही शॉल, चम्पावत के उलन के कपडें, ऋषिकेश के स्टोन एवं उत्तराखण्ड में उगाई जाने वाली कई तरह की दालें मुख्य आर्कषण का केन्द्र है।

गौरतलब है कि इस वर्ष व्यापार मेले की थीम ''वसुधैव कुटुंबकम'' है जिसमें फोक्स राज्यों में दिल्ली, जम्मू-कश्मीर और झारखंड है जबकि बिहार और केरल पार्टनर राज्य के रूप में प्रतिभाग कर रहे है।

सांप तस्कर की डायरी में एल्विश के मीडिएटर्स के नाम

रेव पार्टी में बदरपुर से लाता था सांप, ये गांव सपेरों के लिए प्रसिद्ध

नोएडा। एल्विश यादव केस में शामिल सांप तस्कर राहुल की डायरी नोएडा पुलिस को मिली है। दिल्ली के बदरपुर स्थित उसके घर से बरामद हुई डायरी में एल्विश और राहुल के कई मीडिएटर्स के नाम हैं।

डायरी से यह भी पता चला है कि राहुल रेव पार्टीज के लिए बदरपुर से ही सांप लाता था।

इधर, नोएडा पुलिस ने मंगलवार को राहुल समेत पांचों आरोपियों की दोबारा रिमांड के लिए सूरजपुर कोर्ट में अर्जी दी है। इसमें 14 दिन की रिमांड मांगी है। इससे पहले पुलिस ने सभी आरोपियों को 54 घंटे की रिमांड पर लिया था। रविवार शाम रिमांड पूरी हो गई थी। इसके बाद सभी को जेल भेज दिया था।

रेव पार्टी में बदरपुर से लाते थे सांप

सूत्रों के मुताबिक, रिमांड के दौरान राहुल ने पुलिस को बताया कि वह रेव पार्टी में सांप और जहर का इंतजाम करता था। जैसी डिमांड होती थी। उसके अनुसार सपेरे से लेकर ट्रेनर और बाकी चीजें प्रोवाइड कराता था। वह इसे बदरपुर के पास के एक गांव से लाता था। इस गांव को सपेरों का गढ़ माना जाता है।

एल्विश के मीडिएटर तक पहुंची पुलिस

राहुल ने पुलिस को कुछ ऐसे लोगों के नाम भी बताए हैं, जो रेव पार्टी में बीन प्रोग्राम और सांपों का खेल करवाते थे। उनमें से कुछ ऐसे भी हैं। जिनका बिग बॉस ओटीटी-2 के विनर और यूट्यूबर एल्विश यादव और सिंगर फाजिलपुरिया से कनेक्शन है। सूत्रों के मुताबिक, एल्विश जिस मीडिएटर के जरिए राहुल से पार्टी में सांप और वेनम मंगवाता था।

पुलिस को उसका पता लग गया है। पुलिस जल्द ही उसको गिरफ्तार कर सकती है।

इस्कॉन में गोवर्धन पूजा का आयोजन

नोएडा के सेक्टर-33ए स्थित इस्कॉन नोएडा मंदिर में गिरिराज गोवर्धन पूजा उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर इस्कॉन नोएडा मन्दिर से जुड़े भक्तों ने सवा टन पके हुए चावल एवं हलवा से लगभग 15 फुट लम्बे गोवर्धन पर्वत का निर्माण किया। सुबह 8 बजे से ही मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लग गया। मुख्य उत्सव सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक चला। भक्तों ने गिरिराज जी की पूजा परिक्रमा की। गिरिराज जी को विभिन्न प्रकार की मिठाई यों, फलों, सूखे मेवा एवं पकवानों का भोग लगाया गया। मन्दिर के अध्यक्ष वंशीधर दास ने गिरिराज धरण हम तुम्हरी शरण के भजन कीर्तन से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। श्यामा नंद स्वामी महाराज जी ने गोवर्धन पूजा के महत्त्व और किस प्रकार इसे सम्पन्न किया जाना चाहिए पर विशेष प्रवचन दिया। उपस्थित भक्तों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक कीर्तन में भाग लिया एवं नृत्य के साथ उत्सव का आनन्द उठाया। अन्त में सभी को भरपूर स्वादिष्ट प्रसाद वितरित किया गया। इस उत्सव में लगभग 1000 भक्तों ने भाग लिया।

यूपी के मुख्य सचिव ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में उत्तर प्रदेश मंडप का किया शुभारंभ

ओडीओपी स्टालों का मुख्य सचिव ने लिया जायजा

नई दिल्ली। दिल्ली के प्रगति मैदान में मंगलवार से शुरू हुए 42 वां अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला- 2023 में उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव श्री दुर्गा शंकर मिश्र ने उत्तर प्रदेश मंडप का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। उन्होंने व्यापार मेले में उत्तर प्रदेश पवेलियन के ओडीओपी मार्ट में हस्त निर्मित उत्पादों के विभिन्न स्टॉल्स का अवलोकन किया और कारीगरों एवं हस्तशिल्पियों से संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया।

मुख्य सचिव ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि अयोध्या में 22 जनवरी, 2024 को 500 वर्ष पश्चात रामलला अपने मंदिर में विराजेंगे और हम बड़े भाग्यशाली हैं कि हम सब इसके साक्षी बनेंगे। उत्तर प्रदेश पवेलियन में प्रदेश के सभी जनपदों के ओडीओपी उत्पादों को प्रदर्शित किया गया है। उत्तर प्रदेश को महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर तथा दिल्ली राज्यों के साथ-साथ फोकस स्टेट के रूप में प्रदर्शित किया गया है। पिछले वर्ष 2022 में भी उत्तर प्रदेश को फोकस स्टेट के रूप में प्रदर्शित किया गया था।

मुख्य सचिव ने कहा उत्तर प्रदेश कारीगरी के लिए बहुत मशहूर है। उत्तर प्रदेश में 96 लाख एमएसएमई की छोटी-छोटी यूनिट कार्यरत है।अभी कुछ समय पूर्व उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो आयोजित हुआ था, जहां पर लगभग 70 हजार से अधिक देश-विदेश से खरीददार आए थे। उन्होंने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में ओडीओपी के माध्यम से प्रत्येक जिले के उत्पाद को अंतरराष्ट्रीय मार्केट में निर्यात किए जाने पर कार्य किया जा रहा है।आज उत्तर प्रदेश का एक्सपोर्ट 86 करोड़ से बढ़कर 1.74 लाख करोड़ हो गया है।

दिल्ली के शकरपुर में इमारत में आग लगने से एक की मौत, 26 को बचाया

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के शकरपुर इलाके में में मंगलवार को एक इमारत में आग लगने से एक महिला की मौत हो गई और अन्य 10 लोग घायल हो गए। दिल्ली अग्निशमन सेवा ने यह जानकारी दी।

दिल्ली अग्निशमन सेवा (डीएफएस) के निदेशक अतुल गर्ग ने कहा कि शकरपुर में एक इमारत में लगी आग में 26 लोगों को बचा लिया गया, जबकि अन्य पांच लोगों ने बालकनी से कूद कर जान बचायी।

शकरपुर के ग्राउंड प्लस तीन मंजिला इमारत में कम से कम 31 लोग फंस गए थे। जिसमें से 26 लोगों को दिल्ल दमकल विभाग के कर्मियों ने बचाया और अन्य पांच ने बालकनी से छलांग लगा दी। डीएफएस अधिकारियों ने बताया कि उनमें से दस लोगों को जीटीबी अस्पताल, एलबीएस अस्पताल और हेडगेवार अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने 40 वर्षीय महिला को मृत घोषित कर दिया।

गर्ग ने कहा, सांस लेने में समस्या होने के कारण डीएफएस कर्मी समय सिंह गिर गया जिससे वह घायल हो गया और उसे एलबीएस अस्पताल ले जाया गया और प्राथमिक उपचार के बाद उसे छुट्टी दे दी गई।

डीएफएस के मुताबिक शुरुआत में तीन दमकल गाड़ियों को घटनास्थल पर भेजा गया, लेकिन बाद में जब विभाग को फोन आया कि इमारत के अंदर कई लोग फंसे हुए हैं तो पांच और दमकल गाड़ियों में कर्मियों सहित को मौके पर पहुंचे।

डेंगू के बाद दो मरीजों को हुआ फंगल इंफेक्शन

गाजियाबाद। डेंगू से स्वस्थ होने के बाद फंगल इंफेक्शन भी लोगों को परेशान करने लगा है। तीन दिन में दो लोगों का ऑपरेशन कर फंगल इंफेक्शन निकाला गया। ऑपरेशन के बाद दोनों के स्वास्थ्य में सुधार है। आरडीसी स्थित वरिष्ठ नाक, कान गला रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्यागी ने बताया कि संजय नगर निवासी नवीन (30) और नाहल गुलफाम (39) की नाक में ब्लैक फंगस की पुष्टि हुई है। दोनों को ब्लैक फंगस नाक से शुरू होकर आंख तक पहुंच गया था। डॉ. त्यागी ने बताया कि नवीन के चेहरे पर भी फंगस पहुंचने लगा था।

सेंट्रल नोएडा में चोरों ने घरों पर बोला धावा

गौतम बुद्ध नगर। त्योहारों पर सेंट्रल नोएडा में चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम दिया। सूरजपुर थाना क्षेत्र के एक पाली गांव में चोरों ने तीन घरों में चोरी का प्रयास किया। इसके बाद एक घर में घुसने के बाद उन्होंने सोने, चांदी के जेवरात और नगदी चोरी कर ली। इस दौरान चोरों ने करीब 2 लाख की चोरी की घटना को अंजाम दिया। यह चोरी की पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हो गई। सेंट्रल नोएडा के सूरजपुर थाना क्षेत्र के पाली गांव में नकाबपोश चोरों ने जमकर आतंक मचाया। सोमवार की रात को चोरों ने तीन घरों को अपना निशाना बनाया, लेकिन यह दो घरों में चोरी करने में असफल रहे, जबकि तीसरे घर में इन लोगों ने घर में रखे हुए सोने च चांदी के जेवरात और नगदी चोरी कर ली। पाली के रहने वाले कपिल के घर में इन लोगों ने चोरी की घटना को अंजाम दिया। इस दौरान करीब 2 लाख की चोरी करने के बाद यह लोग मौके से फरार हो गए, जिस समय चोर घरों में घुसे उसी दौरान घर में लगे हुए सीसीटीवी कैमरे में भी यह चोर कैद हो गए। पीड़ित कपिल ने सूरजपुर थाना पुलिस से शिकायत करते हुए बताया कि पाली गांव में उनके ही परिवार के तीन घर हैं। वह लोग एक घर में सो रहे थे इसी दौरान रात को करीब 3:00 इन चोरों ने हमारे घर में चोरी की घटना को अंजाम दिया।

रेरा कंसिलिएशन फोरम ने बायर को दिलाया इकाई पर कब्जा

एजेंसी

नोएडा। उप्र रेरा ने आवंटी को न सिर्फ इकाई पर कब्जा दिलाया बल्कि प्रमोटर की ओर से मांगी जा रही रकम से भी कई अनुचित शुल्क को हटाया। बायर ने इस मामले में यूपी रेरा से शिकायत की थी। रेरा की कंसिलीएशन फोरम ने सुनवाई के दौरान प्रमोटर को ये आदेश दिया। रेरा की कंसिलीएशन फोरम अब तक 1300 से ज्यादा मामलों में 510 करोड़ की परिसंपत्ति के विवाद का निपटारा कर चुकी है।

बायर नीतू ठाकुर ने गौर संस हाईटेक इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा.लि. में एक इकाई बुक की। आवंटी के अनुसार उसने परियोजना में साल 2015 में इकाई की बुकिंग की थी। इसके लिए नीतू ने 10 लाख 52 हजार की रुपए का पूरा भुगतान कर दिया था। एग्रीमेन्ट फोर सेल के अनुसार लगभग पूरी राशि का भुगतान किया जा चुका था। आवंटी को अगस्त 2018 तक कब्जा मिलना था। लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

इसके विपरीत प्रमोटर ने बायर को अंतिम मांग राशि के रूप में 1.40 लाख रुपए जमा करने को कहा। बायर ने इकाई का कब्जा प्राप्त होने में हो रही देरी, अंतिम मांग राशि में सम्मिलित कई प्रकार के शुल्कों और विलंबित अवधि के लिए 2020 में यूपी रेरा में शिकायत दर्ज की।

कंसिलिएशन फोरम ने अपने फैसले में प्रमोटर की ओर से जारी अंतिम मांग राशि लगभग 1.40 लाख में से कई शुल्कों को हटा दिया। साथ ही आवंटी को रुपए 35 हजार का ब्याज देने को तैयार हुआ। इसका समायोजन अंतिम मांग राशि में करवा दिया गया।

आवंटी की देनदारी न्यूनतम करवाते हुए इकाई का कब्जा दिलाया गया। कंसिलिएशन फोरम की सुनवाई में प्रमोटर को अधिकतम शुल्क हटाकर केवल वास्तविक बकाया राशि पर इकाई का कब्जा देने का प्रस्ताव दिया। जिसे आवंटी ने स्वीकार करके अपनी सहमति दे दी। इसके बाद दोनों पक्षों ने समझौता कर विवाद समाप्त कर लिया। वाद मुक्त कराया गया है।

बजरंग बली के अन्नकूट के नाम पर एकजुट हुए लोग

संजय वन में हर मंगलवार को आयोजित करते हैं हनुमान चालीसा का पाठ

नई दिल्ली। नासै रोग हरे सब पीड़ा, जपत निरंतर हनुमत बीरा... । हनुमान जी रोग और पीड़ा तो दूर करते ही हैं, साथ ही लोगों को एकजुट भी करते हैं। दिल्ली के महरौली स्थित संजय वन में इसकी बानगी साक्षात तौर पर देखी जा सकती है। दरअसल, संजय वन निवासी और समाजसेवी सुनील सनसनवाल संजय वन में हर मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ आयोजित करते हैं, जिसमें आसपास के करीब 36 गांव के लोग एकत्रित होते हैं और उनका सहयोग करते हैं।

सुनील सनसनवाल जी के मुताबिक संजय वन, जो कि मेहरौली का दिल है और कई गांवों जैसे मेहरौली, किशनगढ़, छत्तरपुर, लाडो सराय,कटवारिया सराय, वसंत कुंज, बेर सराय, अधचिनी से घिरा हुआ है। संजय वन के अंदर एक प्राचीन शिव मंदिर भी है। इस मंदिर में कई शताब्दी से पूजा की जा रही है और मंदिर की देखभाल आस पास के गांव के लोग कर रहे हैं। इस मंदिर को काफी समय पहले खंडित कर दिया गया था। मंदिर में हनुमान जी की एक प्राचीन प्रतिमा भी ठीक उसी वक्त से है जब से यह मंदिर हैं और यहां सालो से सुनील सनसनवाल जी की अगुवाई में हर मंगलवार हनुमान चालीसा का पाठ किया जाता है। इनके साथ आस पास के ग्राम निवासियों द्वारा मंदिर की साफ सफाई एवम् देखभाल किया जाता है और यहां आने वाले समस्त श्रद्धालुओं की ये इच्छा है की इस प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार किया जाए।

नोएडा के मेट्रो स्टेशन के पास युवक मारी गोली

नोएडा। थाना सेक्टर 142 क्षेत्र के अंतर्गत आपसी विवाद में कपिल शर्मा ने पुष्पेंद्र कुमार मिश्र को गोली मार दी गई। गंभीर हालत में पुष्पेंद्र को कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहां पुष्पेंद्र का इलाज चल रहा है। चिकित्सक द्वारा गोली को निकाल दिया गया है। इस मामले में पीड़ित परिजनों की ओर से थाना सेक्टर 142 में मुकदमा दर्ज किया गया है।

पुलिस ने बताया कि 13 नवंबर की रात करीब पौने नौ बजे पुष्पेंद्र कुमार मिश्रा सेक्टर-145 मेट्रो स्टेशन पर थे। इसी दौरान सचिन शर्मा वहां आया और उसने पुष्पेंद्र को गोली मार दी। मौके पर हड़कंप मच गया। इसका फायदा उठाकर सचिन शर्मा वहां से फरार हो गया। आसपास के लोगों की मदद से सचिन को ग्रेटरनोएडा के परिचौक स्थित कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया । वहां से नॉलेज पार्क थाना को जानकारी दी गई। घटना स्थल सेक्टर-145 मेट्रो स्टेशन होने के चलते थाना सेक्टर-142 में मुकदमा दर्ज कराया गया। पुष्पेंद्र नोएडा के बरौला का रहने वाला है। पुलिस ने बताया कि दोनों बाउंसर का काम करते है। पिछले कई दिनों से दोनों के बीच विवाद चल रहा था। इसकी जानकारी परिजनों को नहीं है। सुबह करीब चार बजे परिजन अस्पताल पहुंचे। फिलहाल चिकित्सकों ने पुष्पेंद्र की गोली को निकाल दिया है। इस दौरान पुष्पेंद्र ने एक वीडियो भी बनाया। जिसमें उसने कहा कि मुझे सचिन ने गोली मारी है। ये बयान पुलिस रिकार्ड में है।

संपादकीय

धोखे की तकनीक

एक अध्ययन के मुताबिक, डीप फेक तकनीक के जरिए तैयार किए गए अश्लील वीडियो में आमतौर पर महिलाओं को ही दिखाया जाता है। इसका मकसद अश्लील फिल्मों का कारोबार बढ़ाने से लेकर किसी महिला को बदनाम करना, बदला लेना या भयादोहन हो सकता है।

वक्त के साथ विज्ञान हर रोज नई ऊंचाई छूने की ओर बढ़ रहा है। मानव जीवन को सुविधाजनक बनाने के लिहाज से इसकी उपलब्धियों से इनकार नहीं किया जा सकता। मगर इसके समांतर तकनीकी के दुरुपयोग से जिस तरह के खतरे खड़े हो रहे हैं, उनका सामना करना आम लोगों से लेकर सरकार तक के लिए चुनौती साबित हो रहा है। इस संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोगों, संभावनाओं और आशंकाओं पर बहस चल रही है। मगर मुश्किल यह है कि यह उच्च स्तरीय तकनीक फिलहाल जिस अवस्था में है, उसमें उपयोगिता के मुकाबले इसके खतरे भी मुख्य रूप से सामने आ रहे हैं।

पिछले कुछ दिनों में देश की दो अभिनेत्रियों का जो वीडियो फैला दिया गया, वह छेड़छाड़ कर तैयार किया गया था। उसके स्वरूप और नतीजे का सिर्फ अंदाजा ही लगाया जा सकता है। दरअसल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तहत 'डीप फेक' तकनीक के जरिए एक अभिनेत्री का चेहरा किसी अन्य महिला की आंगिक भंगिमा से जोड़ कर उसे अश्लील स्वरूप दे दिया गया था। यह किसी महिला की गरिमा के हनन का मामला है। मगर इसके लिए जिस डीप फेक तकनीक का उपयोग किया गया, वह इसके व्यापक खतरों का संकेत देता है।

दो अभिनेत्रियों के साथ हुई इस घटना के बाद स्वाभाविक ही इस पर व्यापक चिंता उभरी है। इस मसले पर सरकार ने भी प्रमुख सोशल मीडिया कंपनियों को गलत सूचना, डीप फेक और नियमों का उल्लंघन करने वाली अन्य सामग्री की पहचान करने और जानकारी देने के छत्तीस घंटों के भीतर उन्हें हटाने का परामर्श जारी किया है।

दरअसल, डीप फेक वीडियो को 'सिंथेटिक मीडिया' भी कहा जाता है। इसके जरिए किसी व्यक्ति की सहमति या उसे जानकारी दिए बिना उसकी तस्वीर या वीडियो को अन्य व्यक्ति की तस्वीर या वीडियो से बदल दिया जाता है। बीते कुछ समय से जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लैस तकनीकों का विस्तार हुआ है, उसमें बहुत सारे ऐसे लोगों की पहुंच भी इस तकनीक तक बनी है, जो इसका बेजा इस्तेमाल कर सकते हैं। किसी जानी-मानी हस्ती की तस्वीरों या उसके वीडियो से अगर छेड़छाड़ की जाती है तो ऐसे मामलों में कानूनी उपायों को लेकर सक्रियता बढ़ेगी। मगर इसके जरिए निशाना बनाए जाने पर साधारण लोगों की स्थिति क्या हो सकती है, यह समझा जा सकता है। एक अध्ययन के मुताबिक, डीप फेक तकनीक के जरिए तैयार किए गए अश्लील वीडियो में आमतौर पर महिलाओं को ही दिखाया जाता है। इसका मकसद अश्लील फिल्मों का कारोबार बढ़ाने से लेकर किसी महिला को बदनाम करना, बदला लेना या भयादोहन हो सकता है। इसके जमीनी असर को देखें तो यह तकनीक महिलाओं के खिलाफ लैंगिक हिंसा का एक नया रूप बन कर उभरा है।

मगर इसके खतरे का दायरा इससे भी आगे है, जिसमें किसी भी व्यक्ति का मनमाना वीडियो तैयार करके उसका भयादोहन किया जा सकता है, उसे किसी वैसी गतिविधि में फंसाया जा सकता है, जिसमें वह कभी शामिल न रहा हो। इसके अलावा, बहुस्तरीय साइबर खतरे पैदा होने से लेकर इससे आम राय को गलत दिशा दी जा सकती है। तकनीक अपने आप में विज्ञान की उपलब्धि होती है, लेकिन इसका असर सकारात्मक होगा या नकारात्मक, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसका इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति कैसा है। जाहिर है, मौजूदा कानूनी व्यवस्था के समांतर समय के साथ तकनीक के बेजा इस्तेमाल के बदतर होते स्वरूप पर काबू पाने की ठोस व्यवस्था नहीं की गई तो इसके घातक नतीजे आएंगे।

विकास के लिए बन रही सुरंग में हादसा, आपदा में जीवन

सड़कों और पनबिजली परियोजनाओं की वजह से पहाड़ इस कदर भंगुर हो चुके हैं कि मामूली तेज बरसात में भी भरभरा कर गिरने शुरू हो जाते हैं। ऐसे में सुरंग बन कर तैयार हो भी जाए, मुसाफिरों को कुछ दूरी कम तय करनी पड़े, आने-जाने में बेशक कम वक्त खर्च हो, पर जब पहाड़ ही नहीं बचेंगे, तो स्थानीय लोगों को इन परियोजनाओं का आखिर हासिल क्या होगा।

उत्तराखंड के उत्तरकाशी में सुरंग में हुए हादसे के बाद अंदर फंसे श्रमिकों को निकालने के लिए रास्ता बनाने की कोशिश करते बचाव दल के कर्मचारी।

उत्तराखंड के उत्तरकाशी में निर्माणाधीन सुरंग का एक हिस्सा धंस जाने से चालीस मजदूर उसमें फंस गए हैं। हालांकि बताया जा रहा है कि सभी मजदूर जीवित हैं और उन्हें जल्दी ही सुरक्षित बाहर निकाल लिया जाएगा। मगर इस हादसे के बाद एक बार फिर उत्तराखंड में चल रहे विकास कार्यों और पहाड़ों को काट कर किए जा रहे निर्माण आदि को लेकर स्वाभाविक रूप से सवाल उठने लगे हैं। बताया जा रहा है कि इस साल मार्च में भी इस सुरंग का एक हिस्सा धंस गया था, मगर गनीमत है, उसमें कोई हताहत नहीं हुआ।

यह हादसा भूस्खलन की वजह से हुआ। सुरंग का करीब पंद्रह मीटर हिस्सा धंस गया। यह सुरंग 'आल वेदर रोड' परियोजना का हिस्सा है, जो गंगोत्री और यमुनोत्री को जोड़ती है। इस सुरंग की लंबाई करीब साढ़े चार किलोमीटर बताई जा रही है, जिसका करीब चार किलोमीटर हिस्सा बन कर तैयार हो गया है। इस सुरंग के बनने के बाद यात्रियों को छब्बीस किलोमीटर दूरी कम तय करनी पड़ेगी। दावा किया जा रहा है कि इससे लोगों का काफी वक्त और पैसा बचेगा। वस्तुओं और सेवाओं की पहुंच तेज होगी। सैलानियों और श्रद्धालुओं की तादाद बढ़ेगी और स्थानीय लोगों के लिए कारोबार तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। निस्संदेह बुनियादी ढांचे के विकास से आर्थिक तरक्की के रास्ते खुलते हैं। इसलिए पिछले कुछ सालों से सड़कों के विस्तार पर जोर दिया जा रहा है। उन्हें तेज रफ्तार और भारी वाहनों के लायक बनाया जा रहा है। चूंकि पहाड़ी इलाकों तक विकास कार्यों की पहुंच मंद पड़ी हुई थी, जिसके चलते वहां के लोगों के सामने रोजगार का संकट बड़ा मुद्दा था। खासकर उत्तराखंड में इसके चलते काफी बड़ी तादाद में पलायन होने लगा। इसके मद्देनजर वहां अनेक विकास परियोजनाओं को मंजूरी दी गई। कंपनियों को अपने उद्यम शुरू करने को प्रोत्साहित किया जाने लगा। बड़े पैमाने पर होटल खुले, पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से अनेक गतिविधियां शुरू की गईं। मगर इन्हें तभी अधिक गति मिल सकती है, जब उन जगहों तक आवागमन सुविधाजनक हो। इसलिए सड़कों को विस्तृत करने की परियोजना शुरू की गई। 'आल वेदर रोड' सरकार की महत्त्वाकांक्षी परियोजना है। हालांकि तमाम पर्यावरणविद शुरू से विरोध करते रहे हैं कि इस परियोजना के चलते पहाड़ों पर भूस्खलन बढ़ेगा। उत्तराखंड के पहाड़ पहले ही जर्जर हो चुके हैं। हल्का कंपन भी उनके लिए खतरनाक साबित हो सकता है। इस तर्क के साथ परियोजना को रोकने की अदालत में गुहार लगाई गई, मगर वह विफल रही। विकास परियोजनाओं और अंधाधुंध निर्माण कार्यों के चलते उत्तराखंड पिछले कुछ सालों में कई भयावह आपदाएं झेल चुका है। पहाड़ों के धंसने और दरकने से सैकड़ों लोगों को बेघर होना पड़ा है। इसके बावजूद हैरानी है कि सड़क बनाने की योजना पर पुनर्विचार करने की जरूरत नहीं समझी गई। सुरंग खोदने के लिए जिस तरह की भारी मशीनों का उपयोग किया जाता है, उनके कंपन से पूरा पहाड़ हिल जाता है। उत्तराखंड के पहाड़ उसे सहन कर सकने के लायक नहीं हैं। सड़कों और पनबिजली परियोजनाओं की वजह से पहाड़ इस कदर भंगुर हो चुके हैं कि मामूली तेज बरसात में भी भरभरा कर गिरने शुरू हो जाते हैं। ऐसे में सुरंग बन कर तैयार हो भी जाए, मुसाफिरों को कुछ दूरी कम तय करनी पड़े, आने-जाने में बेशक कम वक्त खर्च हो, पर जब पहाड़ ही नहीं बचेंगे, तो स्थानीय लोगों को इन परियोजनाओं का आखिर हासिल क्या होगा।

हिन्दू भाई-बहन के पवित्र प्यार का पर्व है भैया दूज

ललित गर्ग

हिन्दू समाज में भाई-बहन के पवित्र रिश्तों का प्रतीक पर्व है यह भैया दूज पर्व। दीपावली पांच पर्वों का संगम है, उसी से जुड़ा है यह पर्व। एक ऐसा पर्व जो घर-घर मानवीय रिश्तों में नवीन ऊर्जा का संचार करता है। बहनों में उमंग और उत्साह को संचरित करता है, वे अपने प्यारे भाइयों के टीका लगाने को आतुर होती हैं। बेहद शालीन और सात्विक यह पर्व सदियों पुराना है। इस पर्व से भाई-बहन ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवीय संवेदनाओं का गहरा नाता रहा है। भाई और बहन के रिश्ते को यह फौलाद-सी मजबूती देने वाला है। आदर्शों की ऊंची मीनार है। सांस्कृतिक परंपराओं की अद्वितीय कड़ी है। रीति-रिवाजों का अति सम्मान है। भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को फिर स्थापित करने, एक श्रेष्ठ और मूल्यनिष्ठ समाज एवं परिवार की स्थापना करने, पूरे विश्व को एकता, सौहार्द एवं प्रेम के सूत्र में बांधने तथा सभी मनुष्यों को पवित्रता के संकल्प में बंधकर हर एक को इसकी पहल करने का अलौकिक संदेश देता है भैया दूज का पर्व।

भैया दूज भारत में कई जगह अलग-अलग नामों के साथ मनाई जाती है। बिहार में भिन्न रूप में मनाया जाता है, जहां बहनें भाईयों को खूब कोसती हैं फिर अपनी जबान पर कांटा चुभाती हैं और क्षमा मांगती हैं। भाई अपनी बहन को आशीष देते हैं और उनके मंगल के लिए प्रार्थना करते हैं। गुजरात में यह भाई बीज के रूप में तिलक और आरती की पारंपरिक रस्म के साथ मनाया जाता है। महाराष्ट्र और गोवा के मराठी भाषी समुदाय के लोग भी इसे भाई बीज के तौर पर मनाते हैं। यहां बहने फर्श पर एक चैकोर आकार बनाती हैं, जिसमें भाई करीथ नाम का कड़वा फल खाने के बाद बैठता है। भैया दूज के बहाने स्वजनों और भाइयों से भेंट की भावना छिपी होती थी। सभी शादीशुदा लड़कियां अपने ससुराल में भाई को बुलाती है और खूब सत्कार करती है।

बहन के द्वारा भाई की रक्षा के लिये मनाये जाने वाले इस पर्व को हिन्दू समुदाय के सभी वर्ग के लोग हर्ष उल्लास से मनाते हैं। इस पर्व पर जहां बहनें अपने भाई को टीका लगाकर उनके जीवन रक्षा, दीर्घायु व सुख समृद्धि की कामना करती हैं तो वहीं भाई भी सगुन के रूप में अपनी बहन को उपहार स्वरूप कुछ भेंट देने से नहीं चूकते। यह पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। पारिवारिक सुदृढ़ता, सांस्कृतिक मूल्य एवं आपसी सौहार्द के लिये त्यौहारों का विशेष महत्व है। इन्हीं त्यौहारों में भाई-बहन के आत्मीय रिश्ते को दर्शाता है यह एक अनूठा त्यौहार। इस पर्व के पीछे यही संदेश है कि भाई-बहन के संबंध में पवित्रता, स्नेह, प्रेम, सहयोग, सौहार्द एवं अहिंसा की जैसी पवित्र भावना है, चह भावना हमें सभी मनुष्यजनों तथा सभी प्राणियों के प्रति धारण करनी चाहिए। ऐसे आचरण से ही इंसान इंसान बन सकता है। भैया दूज का आध्यात्मिक महात्म्य भूलने के कारण ही मर्यादाओं का दायरा सिकुड़ रहा है, महिलाओं एवं बहनों पर अत्याचार-व्यभिचार बढ़ रहे हैं। आज भाईयों की बहनों के प्रति रक्षा भावना एवं आत्मीयता कमजोर होती जा रही है। इसलिये समय की मांग है कि हम भैया दूज के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महात्म्य को जाने और उसे अपने जीवन में दृढ़तापूर्वक अपनाएं। तभी हमारे भीतर व्याप्त आसुरी प्रवृत्तियों का नाश हो सकता है और समाज में सच्ची शांति, प्रेम, सौहार्द एवं विश्वबंधुत्व की भावना का पुन: संचार हो सकता है।

इस त्यौहार को मनाने के पीछे की ऐतिहासिक कथा भी निराली है। पौराणिक आख्यान के अनुसार भगवान सूर्य नारायण की पत्नी का नाम छाया था। उनकी कोख से यमराज तथा यमुना का जन्म हुआ था। यमुना यमराज से बड़ा स्नेह करती थी। यमुना ने अपने भाई यमराज को आमंत्रित किया कि वह उसके घर आकर भोजन ग्रहण करें, किन्तु व्यस्तता के कारण यमराज उनका आग्रह टाल जाते थे। यमराज ने सोचा कि मैं तो प्राणों को हरने वाला हूं। मुझे कोई भी अपने घर नहीं बुलाना चाहता। बहन जिस सद्भावना से मुझे बुला रही है, उसका पालन करना मेरा धर्म है। बहन के घर आते समय यमराज ने नरक निवास करने वाले जीवों को मुक्त कर दिया। यमराज को अपने घर आया देखकर यमुना की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने स्नान कर पूजन करके व्यंजन परोसकर भोजन कराया।

यमुना द्वारा किए गए आतिथ्य से यमराज ने प्रसन्न होकर बहन को वर दिया कि जो भी इस दिन यमुना में स्नान करके बहन के घर जाकर श्रद्धापूर्वक उसका सत्कार ग्रहण करेगा उसे व उसकी बहन को यम का भय नहीं होगा। तभी से लोक में यह पर्व यम द्वितीया के नाम से प्रसिद्ध हो गया। भाइयों को बहनों टीका लगाती है, इस कारण इसे भातृ द्वितीया या भाई दूज भी कहते हैं।

इस पूजा में भाई की हथेली पर बहनें चावल का घोल लगाती हैं। उसके ऊपर सिन्दूर लगाकर कद्दू के फूल, पान, सुपारी मुद्रा आदि हाथों पर रखकर धीरे-धीरे पानी हाथों पर छोड़ते हुए मंत्र बोलती हैं कि 'गंगा पूजे यमुना को यमी पूजे यमराज को, सुभद्रा पूजा कृष्ण को, गंगा यमुना नीर बहे, मेरे भाई की आयु बढ़े'।

एक और मंत्र है- 'सांप काटे, बाघ काटे, बिच्छू काटे जो काटे सो आज काटे' इस तरह के मंत्र इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि ऐसी मान्यता है कि आज के दिन अगर भयंकर पशु भी काट ले तो यमराज भाई के प्राण नहीं ले जाएंगे। संध्या के समय बहनें यमराज के नाम से चौमुख दीया जलाकर घर के बाहर रखती हैं।

गौसेवा में मानवीय और प्राकृतिक संस्कृति - संरक्षण के स्त्रोत

प्रो. पुष्पिता अवस्थी
अध्यक्ष : हिंदी यूनिवर्स फाउंडेशन और गार्डियन ऑफ अर्थ एंड ग्लोबल कल्चर। नीदरलैंड्स, यूरोप

बचपन की शिक्षा गऊ माता के साथ जुड़ी हुई है। कलम थामने के साथ-साथ भाषा सीखने की कवायद जैसे ही जोर पकड़ती है। गाय पर हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में निबंध लिखने की याद आज भी ताजा है। गाय उसके बच्चो और बेलों की पूजा आरती की याद ताजा है। यह परंपरा जितनी भारत में है उतनी ही विदेशों में है। जहां प्रवासी भारतवंशी और भारतीयों का पीढ़ियों के प्रवास रहें है। इसका प्रमाण इसी वर्ष चुनाव के दौरान इंग्लैंड के प्रधान मंत्री ऋषि सुनक जी द्वारा अपनी पत्नी के साथ गाय की पूजा इसका उदाहरण है। कोरोना के बाद इम्यून सिस्टम बढ़ने के निमित्त गऊ माता के गले लगने सहलाने के व्यवसायिक उदाहरण से हम सब परिचित ही है।

गोमाता की सेवा करना मानवीय संस्कृति की पक्षधरता की पहचान कराती है। गहरे अर्थों में गऊ, इसलिए मां है क्योंकि मां के दूध के द्वारा पालन होने के बाद अजीवन मृत्यु पर्यन्त तक गाय का दूध हमारा पोषण करता है। हमारे धार्मिक अनुष्ठान और मिष्ठान का स्रोत गाय का दूध ही है। श्रीकृष्ण के साथ गाय को जोड़ने का विशेष दार्शनिक अर्थ है।

पिछले कुछ वर्षो में यूरोप की यात्रा में आस्त्रिया के इटली सीमा पर नाउदर गांव में गो सेवा का भारतीय पारंपरिक चलन देखा चार बजे तक गायों का दूध ग्वालो के द्वारा निकाल लिया जाता है और वे चरने चली जाती है और सूर्यास्त से पहले लोट आती है। उनके गले की घंटियों की आवाजे किसी धार्मिक नगर के मंदिरों के घंटो के एक साथ बजने की मांगलिक धुन को छोड़ते हुए जंगलों की ओर बड़ जाती है।

और उनके गोबर से उनके जाने की पगडंडी लिप जाती है। ऐसे में भारत की गायों के कई रास्ते और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काठ की घंटियों की याद ताजा हो आती है। नाउदर गांव में जब कोई गाय या उसका बच्चा नहीं रहता है तो उस घर में एक सप्ताह खाना नही बनता है और घर में किसी की मृत्यु होने जैसा शोक उस घर में ही नही बल्कि उस गांव में व्याप्त हो जाता है। ऐसे ही उड़ीसा जाने पर कोरापुट विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी जी ने बातों बातों में कहा कि यहां के गायों को दुहते नही है उसका दूध उसके बच्चों के लिए होता है।

भारत सहित विश्व के जिन भी देशों में परिवार के स्तर पर गो पालन और कुछ गाय के पालन से व्यवसाय होता है। वहां उसे परिवार में पालने वाले अन्य पशुओं की तरह रखा जाता है। वहां गो वध वर्जित है।

विश्व के बड़े शहरों और गांवों में रहने घूमने के बाद अनुभव हुआ कि जिन गांव में गो पालन है, वहां की ग्रामीण संस्कृति प्रकृति सम्मत है। वहां पर्यावरण की समस्या नहीं के बराबर है इसके साथ साथ वहां के जीवन में मनवोचित आचरण संहिता की प्रधानता है। इससे स्पष्ट है कि विश्व की अनेकानेक अमानवीय समस्याओं से निपटने के लिए ग्रामीण संस्कृति को अपनाना चाहिए जिसमे गो पालन की संस्कृति के संवर्धन से ग्रामीण संस्कृति को बल मिलेगा।

यह बात भी सही है कि पाश्चताय देशों में गोमांस लेने का चलन है उसकी भीषणता पर अगले आलेख में चर्चा होगी। विश्व मे केंसर सहित अनेक इलाज से परे की बीमारियों का कारण मांसाहारी भोजन ही नहीं बल्कि जीवन शैली भी है। इस सत्य को स्वीकारने में ही भलाई है।

देश की लोकतांत्रिक आस्था और उसका परिमार्जित मूल्यांकन

आजादी के 75 वे वर्ष के व्यतीत हो जाने के बाद स्वाधीनता एवं लोकतंत्र की आस्था का सही मूल्यांकन किया जाना चाहिए। हमें स्वतंत्रता अनथक मेहनत एवं खून पसीना बहाने के बाद प्राप्त हुई है। स्वाधीनता के बाद हमारे संवैधानिक इतिहास में लोकतंत्र की संरचना को सर्वाधिक महत्व दिया गया है।

इस महान लोकतंत्र की आस्था और विश्वास को हमें अनंत काल तक बनाए रखना है और इसके साथ ही स्वाधीनता को भी चिरकाल तक अस्मिता की तरह संजोए रखने की आवश्यकता है।

जातिभेद, रंगभेद और सामाजिक कुरीतियों को नजरअंदाज कर लोकतंत्र की अंतर्निहित शक्ति को और ताकतवर बनाना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत की सरकारें वर्ष 2022 तक यह प्रयास करती रही कि एक नवीन, मजबूत भारत का उदय हो, जहां अमीरी, गरीबी, जाति, संप्रदाय और सामान्य और दलित वर्ग भेद पूर्णता समाप्त हो जाए,पर भरसक प्रयास के बाद भी ऐसा हो नहीं पाया हैद्य वर्तमान में भारत की सामाजिक आर्थिक विभिन्नता एवं विषमता देश के आर्थिक तथा वैश्विक छवि के लिए अवरोध साबित हो सकते हैं।

देश में विभिन्न नीतियों के विरुद्ध राष्ट्रीय संपत्ति की तोड़फोड़, आपसी असहमति में हत्याये देश के सर्वांगीण विकास के लिए अच्छे संकेत नहीं है।

भारत को एक सशक्त आंतरिक नीति एवं सामाजिक सौहार्द्र की आवश्यकता है तब ही हम विकास के पथ पर आगे प्रशस्त हो सकते हैं। भारत की सफल विदेश नीति एक अच्छी नीति की शुरुआत है और विदेशों में भारत की एक अलग पहचान भी महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, पर केवल विदेश नीति से ही देश की 131 करोड़ जनता का पेट भरना और उसे विकास की राह में ले जाना मुमकिन नहीं है। देश की आवाम को सशक्त योजनाओं और आर्थिक तंत्र के मजबूत होने के साथ-साथ उत्पादन में आत्मनिर्भरता से ही मजबूत बनाया जा सकता है, तब जाकर देश की गरीबी एवं भूखमरी पर निजात पाई जा सकती है। धर्मनिरपेक्षता के मजबूत कंधों के सहारे देश को सांप्रदायिक सद्भाव के मार्ग पर ले जाने के साथ-साथ शांति और सौहार्द्र का वातावरण तैयार किया जा सकता है।

देश में शांति सौहार्द और उत्पादन में आत्मनिर्भरता ही विकास के सच्चे पैमाने हैं। पंचवर्षीय योजनाओं में लगातार गरीबी उन्मूलन, कृषि विकास की योजनाएं, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी, स्कूली एवं कॉलेज की शिक्षा, स्वास्थ्य की तमाम परेशानियों को दूर करने के लिए बड़ी-बड़ी आर्थिक योजनाएं बनती रही हैं,पर न तो पूरी तरह योजनाओं में अमल हो पाया और ना ही भरपूर वित्तीय संसाधनों का सही-सही समुचित दोहन ही हो पायाद्य वैसे तो यह कल्पना की गई थी कि स्वतंत्रता के पश्चात भारत की सरकारें ग्रामीण विकास को प्राथमिकता देकर शहर तथा गांव की सरहदों को मिटाने का प्रयास करेगी, हमारा लोकतांत्रिक ढांचा इतना समावेशी और मजबूत नहीं हो पाया कि हम देश के संपूर्ण विकास के लिए कटिबद्ध हो पाए।

कागजी ही रहा एससी का पटाखों पर रोक का आदेश

अशोक मधुप
वरिष्ठ पत्रकार

सर्वोच्च न्यायालय का दीपावली पर आतिबाजी की रोक का आदेश कागजी ही रह गया। दीपावली पूर्व सर्वोच्च न्यायालय ने राजधानी दिल्ली एनसीआर में पूरी तरह आतिशबाज़ी पर प्रतिबंध लगाया था। सुप्रीम कोर्ट ने सात नवंबर को यह भी कहा था कि बेरियम युक्त पटाखों पर प्रतिबंध लगाने का आदेश हर राज्य पर लागू होता है। आदेश हुआ। आदेश सरकारों को भी गया। आदेश को लागू करने वाली नियामक एसेंसियों को भी गया। किंतु इसका असर कहीं दिखाई नही दिया। दीपावली पर आतिशबाजी के प्रतिबंध के बावजूद राजधानी दिल्ली और एनसीआर में जमकर पटाखे फोड़े गए। अन्य प्रदेशों में तो लगा ही नही कि कहीं कोई आदेश भी है। दिल्ली एनसीआर की रिपोर्ट के अनुसार रविवार (12 नवंबर) को दीपावली के दिन सुबह से ही कई इलाकों में आतिशबाजी शुरू हो गई थी जो शाम होते ही बड़े पैमाने पर बढ़ती चली गई। राजधानी के कमोबेश हरेक इलाके समेत एनसीआर में हर तरफ रात करीब 10 बजे तक चंद सेकेंड के अंतराल पर 90 डेसीबल की आवाज की सीमा को पार कर पटाखों का शोर सुना जाता रहा है। दस बजे के बाद भी कई जगह से पटाखों के छूटने की आवाज आती रही।इस भारी आतिशबाजी के कारण और इसकी वजह से दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण भी सामान्य से कई गुना बढ़ गया है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़े के अनुसार दिल्ली में सोमवार (13 नवंबर) की सुबह ही एयर क्वालिटी इंडेक्स (आईक्यूआई) 296 रहा जो सामान्य से करीब छह गुना अधिक है। सीपीसीबी के मुताबिक ङ्कतड़के 2.5 पर और छह बजे लोनी गाजियाबाद में एक्यूआई- 414 था जबकि नोएडा सेक्टर 62 में - 488 , पंजाबी बाग - 500 और रोहिणी में एक्यूआई 456 रहा है। आईक्यूआई के डाटा के मुताबिक सोमवार को दिल्ली दुनिया की सबसे प्रदूषित शहर है. यहां सुबह पांच बजे दिल्ली में वायु गुणवत्ता का स्तर 514 पर है जो खतरनाक रूप में चिन्हित है। मौसम एजेंसी एक्यूआईसीएन.ओआरजी के अनुसार दिल्ली के आनंद विहार क्षेत्र में वायु प्रदूषण सबसे खराब दर्ज किया गया है। यहां सुबह पांच बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक खतरनाक स्तर पर 969 था ।यह सामान्य से 20 गुना अधिक है। हालाकि दीपावली के दिन रविवार को राजधानी दिल्ली में इस साल साफ हवा रही। उसने ने पिछले इठ साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, राजधानी में रविवार सुबह साफ आसमान और खिली धूप के साथ हुई और शहर के वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 218 रहा, जो पिछले आठ साल में दीपावली के दिन सबसे कम था। रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली में पिछले साल दिवाली पर एक्यूआई 2022 में 312, 2021 में 382, 2020 में 414, 2019 में 337, 2018 में 281, 2017 में 319 और 2016 में 431 दर्ज किया गया था.

अपने आदेश में वायु प्रदूषण से जूझ रहे दिल्ली एनसीआर के लिए भी सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कर लिया था की राजधानी में आतिशबाजी नहीं होनी चाहिए। दिल्ली में तो आतिशबाजी रूकी ही नही। पूरे देश में भी ये ही साल रहा। जमकर बेरियम युक्त पटाखे फोड़े गए। देश के अन्य प्रदेशों में तो लगाही नही कि बेरियम से बने पटाखों पर रोक है। वहां तो हर साल जैसा ही माहौल रहा। आतिशबाजी का जमकर प्रयोग हुआ। रात एक बजे तक जमकर आतिशबाजी हुई। उसके बाद भी पटाखें छूटने की आवाज आती रहीं।

दरअस्ल हर साल दीपावली से कुछ पहले ही पटाखों के प्रयोग का आदेश होता है। इनके निर्माण और बिक्री पर रोक का आदेश नही होता। 12 नवंबर को दीपावली थी। यह आदेश सात नवंबर को हुआ तब तक आतिशबाजी बड़ी संख्या में बाजार से छोड़ने वालों के पास पंहुच गई थी। आतिशबाजी की आवाजाही प्राय: बरसात के मौसम में होती है।ऐसा इसलिए होता है कि तुरंत बनी नमी वाली आतिशबाजी को ले जाने के दौरान ऐसा न हो।सुरक्षा के लिहाज से आतिशबाजी बरसात में ले जाई जाती है। जो बरसात में ही बाजार में या व्यापारियों के गोदाम में पंहुच जाती है। इस सीजनल सामान से व्यापारी को भी गोदाम खाली करने होते हैं।इसलिए उन्होंने इस आदेश को धत्ता बताया और अपना माल बेचा। इस तरह का आदेश नियामक एजेंसियों के लिए भी लाभकर होता है। वे जानती है कि व्यापारी मानेगा नहीं।इसलिए वह भी इसे अपने आर्थिक हित में मान उनके बिकी करने को नजर अंदाज कर देते हैं।एक बात और दीपावली पर आतिशबाजी हिंदुओं की आस्थाओं से जुड़ी है।पिछले कुछ दिन से इस प्रकार का अभियान चल रहा है। कुछ लोग प्रचार कर रहे हैं कि बहुंसख्यकों की धार्मिक आस्थाओं के मामले में न्यायालय इस तरह के आदेश करते हैं। अन्य लोगों की आस्थाओं के बारे में नहीं। ऐसे में अब इन आदेश के विपरित बहुसंख्यक आचरण करने लगे हैं। जानकर वह आतिशबाजी छोड़ते हैं।दिखाते हैं कि उसकी आस्था का मामला है,वह आदेश तोड़ेगा। न्यायालय के आदेश को लागू करने वाली एजेंसी और पुलिस आम लोगों का क्यों विरोध ले,इसलिए वह भी चुप्पी साध लेतें है।

न्यायालय हर साल आदेश करता है। करता है दीपावली से कुछ पूर्व । जब वह जानता और मानता है कि बेरियम वाले पटाखें नुकसान दायक हैं।पूरे देश में उनके प्रयोग पर उसने रोक भी लगाई है।प्रश्न यह है कि बेरियम युक्त पटाखों के प्रयोग पर ही रोक क्यों लगती है। उनके निर्माण पर रोक क्यों नही लगती। सर्वोच्च न्यायालय एक बार आदेश पर इनके निर्माण पर रोक लगवा दे।ज्यादा आवाज करने वाले पटाखों के निर्माण पर भी प्रतिबंध लगा दे। आदेश के पालन से जुड़ी एजेंसी को सख्त आदेश करे कि इनका निर्माण ही न होने दिया जाए।समय- समय पर आतिशबाजी निर्माताओं के प्रतिष्ठानों का निरीक्षण कर देखा जाए कि आदेश का पालन हो रहा है, या नही। अपने इस आदेश की मोनिटरिंग को आदेश जिला न्यायालयों को सौंपे।ऐसा आदेश होगा तभी घातक श्रेणी के पटाखों पर रोक लग सकेगी।

एक चीज और न्यायालय के आदेश के साथ ही प्रदेश सरकार और नियामक एजेंसियों को इनके प्रयोग पर रोकके ,इनके बारे में जनजागरण अभियान चलाना होगा। जनजागरण अभियान में समाज और जनता को बताना होगा कि ये पटाखें, अतिशबाजी प्रदूषण बहुत करती हैं। ये हमारे स्वास्थय के लिए हानिकारण है। नुकसानदेह है। अस्थमा के साथ कई तरह की बीमारी पैदा करते हैं। हमें अपने और अपने परिवार के स्वास्थय के लिए इतना प्रयोग नही करना चाहिए।ये ही बात पटाखा निर्माताओं को समझानी होगी, तभी इन पर रोक लग सकेंगी। बेरियम से बने पटाखें क्या हैं? उनके नुकसान क्या हैं? इसके लिए भी जनजागरण चलाने की जरूरत है।

एक बात और न्यायलय को पटाखों पर बिक्री पर रोक के आदेश से पूर्व यह भी देखना चाहिए कि भारत चीन के बाद दूसरा सबसे ज्यादा पटाखा उत्पादक देश है। ।तमिलनाडु के शिवकाशी में पहली पटाखा फैक्ट्री शुरू हुई। आज शिवकाशी भारत में पटाखों का सबसे बड़ा बाजार है। देश के 85 प्रतिशत पटाखे सिर्फ शिवकाशी में ही बनते हैं।

पराली जलाने की घटनाओं पर योगी सरकार अलर्ट मोड पर

2023-24 में किसानों को वितरित किए गए 4 हजार से ज्यादा एकल कृषि यंत्र

लखनऊ। सर्दियों में पराली जलाने के कारण होने वाले पॉल्यूशन को लेकर योगी सरकार सजग है। पराली जलाने की घटनाओं को रोकने के लिए सरकार की ओर से शुरू से तैयारी की गई है। किसी भी सूरत में पराली जलाने की घटनाओं को रोकने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत जागरूकता अभियान के साथ सरकार ने किसानों में निशुल्क बायोडीकम्पोजर का वितरण किया है तो वहीं फसल अवशेष प्रबंधन के लिए अवशेष प्रबंधन वाले कृषि यंत्र वितरित किए जा रहे हैं।

17 लाख बायोडीकम्पोजर वितरित करने का लक्ष्य

मुख्य सचिव के समक्ष पराली प्रबंधन को लेकर कृषि विभाग के

प्रस्तुतिकरण में बताया गया कि एकल कृषि यंत्रों पर 50 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जा रहा है। अब तक 44,363 एकल कृषि यंत्र वितरित किए जा चुके हैं। 2023-24 में 4439 एकल कृषि यंत्र की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है।

वहीं एफपीओ सहकारी समिति एवं ग्राम पंचायत मद में अब तक कुल 7621 फार्म वितरित किए जा चुके हैं। 2023-24 में 296 को स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। गत वर्ष 1322250 बायोडीकम्पोजर वितरित किए गए हैं, जबकि 2023-24 में 17 लाख बायोडीकम्पोजर वितरित करने का लक्ष्य रखा गया है। 2023-24 में अब तक 166600 बायोडीकम्पोजर पूर्ति प्रक्रिया में है।

इसके अलावा जनपद स्तर पर गन्ना, बेसिक शिक्षा, राजस्व, ग्राम्य विकास, पंचायती राज, स्थानीय निकाय, पुलिस एवं परिवहन, कृषि जैसे विभाग के अधिकारियों में समन्वय करके प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित कराई जाएगी।

जनपद में या निकटवर्ती जनपद में स्थापित फसल अवशेष आधारित इकाइयों का प्रचार-प्रसार करके उनमें पराली की आपूर्ति कराना सुनिश्चित किया जा रहा है। ग्राम, न्याय पंचायत, विकास खंड, तहसील, जनपद स्तरीय टास्क फोर्स का गठन किया जा रहा है।

शार्ट न्यूज

72 लाख के गबन के मामले में पूर्व सचिव को जेल

फर्रुखाबाद । उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में कोतवाली पुलिस ने फतेहगढ़ जिला बार एसोसिएशन के 72 लाख रुपए गबन के मामले में पूर्व सचिव वरिष्ठ अधिवक्ता संजीव पारिया को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पुलिस प्रवक्ता ने मंगलवार को बताया कि फर्रुखाबाद शहर कोतवाली के मोहल्ला नवाब न्यामतखा पश्चिम निवासी अधिवक्ता राजीव कुमार बाजपेई ने 27 जुलाई को दी थी कि बार एसोसिएशन सचिव पद पर रहते हुए पारिया ने एल्डर्स कमेटी को कोई भी लेखा जोखा नहीं दिया गया तथा अधिवक्ताओं की सदस्यता शुल्क का करीब 72 लाख रुपए का गबन कर लिया। इस संबंध में फतेहगढ़ कोतवाली पुलिस ने मुकदमा संख्या 377/23 धारा 147/409/420/332/307/506 /419/ 120बी/342 के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। कोतवाली पुलिस ने सोमवार कल13 नवंबर को, बार एसोसिएशन पूर्व सचिव संजीव पारिया को उनके आवास फतेहगढ़ ओल्ड ग्रांट बगला नंबर 10 कैन्ट से गिरफ्तार किया गया। फतेहगढ़ कोतवाली प्रभारी निरीक्षक सचिन कुमार सिंह ने तो मंगलवार को बताया कि फतेहगढ़ जिला बार एसोसिएशन पूर्व सचिव,अधिवक्ता संजीव पारिया को सोमवार सायं काल जेल भेज दिया गया।

कार ने स्कूटी सवार 2 दोस्तों को कुचला

मुरादाबाद। मुरादाबाद में एक निर्यातक की ओवरस्पीड कार ने सोनकपुर फ्लाईओवर पर स्कूटी सवार दो दोस्तों को कुचल दिया। हादसे में स्कूटी सवार दोनों युवकों की मौत हो गई। मरने वालों में एक रेलवे के चीफ लोको इंस्पेक्टर का बेटा था। पुलिस का कहना है कि हादसे के वक्त कार को निर्यातक नहीं बल्कि उसका ड्राइवर चला रहा था। हादसे में दम तोड़ने वाले दोनों युवक रविवार रात को कांशीराम नगर स्थित काली मंदिर में दीपावली की पूजा करके लौट रहे थे। तभी नीरज (27 साल) और अर्नव (25 साल) को सोनकपुर फ्लाईओवर पर निर्यातक की तेज रफ्तार कार ने रौंद दिया। कार काफी दूर तक स्कूटी समेत दोनों युवकों को घसीटते हुए भी ले गई। मूल रूप से पश्चिम बंगाल 24 परगना उत्तरी के मूल निवासी असीम कुमार मित्रा रेलवे में चीफ लोको इंस्पेक्टर हैं। इन दिनों वह मुरादाबाद में तैनात हैं। इसलिए परिवार के साथ कांठ रोड स्थित गौर ग्रेसियस कालोनी में रहते हैं। असीम मित्रा ने मीडिया को बताया कि रविवार की रात उनका बेटा अर्नव मित्रा अपने दोस्त नीरज आर्या निवासी शाहपुर तिगरी के साथ स्कूटी पर सवार होकर कांशीराम नगर स्थित कालीमंदिर में पूजा करने गया था। दूसरे वाहन पर उसके साथ छोटा भाई अनिरुद्ध मित्रा और उसका दोस्त भी था।

चंदौली पुलिस ने 3 महिला स्नेचरों को पकड़ा

चंदौली। चंदौली जिले की सदर कोतवाली पुलिस ने जामडीह स्थित आयोजित मेले में चोरी करने वाली तीन महिलाओं को गिरफ्तार किया है। ये दूर-दूर से मेले में आई महिला दर्शनार्थियों के सोने की चेन और मंगलसूत्र को पलक झपकते हुए गायब कर देती थीं। पुलिस ने आरोपी महिलाओं के पास से दो चैन, एक अंगूठी और एक कर्णफूल बरामद किया है। वहीं एक महिला भीड़ में पुलिस को चकमा देकर फरार हो गई। हालांकि एसपी ने लापरवाही के आरोप में एक पुलिसकर्मी को निलंबित कर दिया है। सदर कोतवाली क्षेत्र के जामडीह गांव स्थित सरोवर पर दो दिवसीय मेले का आयोजन होता है। मान्यता है कि दीपावली के अगले दिन इस सरोवर में स्नान करने से पूजा करने से महिलाओं में बांझपन की समस्या का समाधान हो जाता है। हालांकि, सोमवार की रात को मेले के दौरान कई महिलाओं के साथ चेन स्नेचिंग की घटना हुई थी। इसी मामले की जांच के दौरान पुलिस ने चोरी के सामान के साथ तीन महिलाओं को गिरफ्तार किया है। इनकी शिनाख्त मऊ जिले के चिरैयाकोट निवासी माया हरिजन, सुनीता हरिजन, कुमकुम हरिजन शामिल हैं। वहीं फरार महिला लक्ष्मी को भी पुलिस ने चिह्नित कर लिया है। कोतवाल राजीव सिंह ने बताया कि आरोपियों के पास से पीली धातू की दो चेन, एक अंगूठी और एक कर्णफूल बरामद हुआ है।

सीवर में गिरने से मासूम की मौत

वाराणसी। वाराणसी में निर्माणाधीन सीवर लाइन में गिरकर 9 साल के बच्चे की मौत हो गई। सोमवार को देर शाम मासूम दुकान से कुरकुरे लेकर लौट रहा था, तभी उसका पैर फिसल गया और सीवर में गिर गया। काफी देर तक मलबे में दबा रहा, जिससे उसकी मौत हो गई। बच्चे की मौत के बाद परिजनों और ग्रामीणों ने हंगामा कर दिया। उन्होंने कहा कि दोषियों पर केस दर्ज कर तत्काल कार्रवाई होनी चाहिए। इस दौरान ग्रामीणों की पुलिसकर्मियों से झड़प हुई। हालांकि, बाद में पुलिस ने परिजनों को समझाकर शांत कराया। हालांकि अभी भी गांव में 4 थानों की फोर्स तैनात है। पूरी घटना जंसा थाना क्षेत्र के भतसार गांव की है। मृतक बच्चे का नाम प्रिंस कुमार (9) है। वह जय सरस्वती शिक्षा निकेतन लहिया में कक्षा-1 में पढ़ता था। वह तीन भाइयों में सबसे बड़ा था। पिता जितेंद्र राजभर मुंबई में गाड़ी चलाते हैं। दरअसल, भतसार गांव में सीवर लाइन का काम चल रहा है। इसके लिए ग्राम पंचायत विभाग ने गांव की सड़क खोद डाला है। सोमवार शाम जितेंद्र कुमार राजभर का बेटा प्रिंस घर से कुछ दूर स्थित एक दुकान से कुरकुरे लेने गया था। वहां से लौटते वक्त उसका पैर फिसल गया और निर्माणाधीन सीवर लाइन में गिर गया। प्रिंस के गिरते ही उस पर पुलिया का मलबा भी गिरने लगा। जिसमें वह दब गया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

देसी पटाखे से दो लोगों की मौत

मेरठ। मेरठ में दीपावली पर गंधक, पोटाख के देसी पटाखे ने दो लोगों की जान ले ली। भाईदूज से पहले 4 बहनों का इकलौता भाई गुजर गया। वहीं दीपावली के दिन घर का मुखिया ही नाल से बारुद दागते वक्त चल बसा। दो घरों में दीपावली पर मातम छा गया। पाइप के धमाके से दो घरों की खुशियां मातम में बदल गईं। परतापुर के शताब्दीनगर में रहने वाले रामकुमार उम्र 40 साल के सीने में नाल घुसने के कारण उसकी मौत हो गई। इंचौली निवासी वरदान जो अपनी बहन के यहां रहकर पढ़ाई कर रहा था,उसकी मौत भी गंधक, पोटाश कूटते वकत हो गई। फलावदा थाना क्षेत्र के सकौती गांव निवासी युद्धवीर सिंह उर्फ गुड्डू पीएसी में हैं। उनकी बेटी वर्णिका की शादी इंचौली थाना क्षेत्र के फिटकरी गांव निवासी प्रवेश के साथ हुई थी। युद्धवीर सिंह का 11 वर्षीय बेटा वरदान बहन के घर पर रहकर ही कक्षा पांच की पढ़ाई कर रहा था। रविवार को इंचौली में वरदान उम्र 11 साल अपनी बहन के ससुराल में इमामजस्ते में गंधक, पोटाश को साथ मिलाकर कूट रहा था। उसे नाल से पटाखे का धमाका करना था। तभी धमाका हुआ उसका हाथ, पैर बस्ट हो गया। आनंद अस्पताल में सोमवार सुबह मौत हो गई। वरदान चार बहनों का इकलौता भाई था। भाई दूज से पहले इकलौते छोटे भाई के गुजरने से बहनों का रो रोकर बुरा हाल है। परतापुर के शताब्दीनगर ई पाकेट वन में हुई। रामकुमार(40) पुत्र शीशुपाल गंधक पोटाश मिलाकर पाइप वाले धमाके से छोड़ रहा था। गंधक पोटाश की मात्रा ज्यादा होने के कारण नाल फट गई और रामकुमार की छाती में घुस गई।

बागपत में 6 साल के बच्चे से कुकर्म

बागपत। बागपत में बिनौली थाना क्षेत्र में एक युवक ने घिनौनी वारदात को अंजाम दिया है। युवक ने 6 वर्षीय बच्चे को बहला फुसलाकर कुकर्म की वारदात को अंजाम दिया। घायल अवस्था में बच्चे को अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया गया है। वहीं आरोपी मौके से फरार हो गया। पुलिस पूरे मामले की पड़ताल में जुटी है। युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। पूरा मामला बिनौली थाना क्षेत्र का है, जहां एक 6 वर्षीय बच्चा धार्मिक स्थल से अपने घर लौट रहा था। तभी गांव के एक युवक ने उसे बहला फुसला लिया अपने घर बुला लिया और उसके साथ कुकर्म किया। बच्चा जब गंभीर हालत में घर पहुंचा तो उसने आप बीती अपने परिजनों को बताई जिसके बाद परिजनों ने बच्चों की हालत गंभीर देखते हुए अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया। वहीं पीड़ित परिवार ने मुकदमा दर्ज कराते हुए आरोपी पर सख्त कार्रवाई की मांग की है। फिलहाल पुलिस ने आरोपी युवक पर गम्भीर धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। उसकी तलाश शुरू कर दी है। बिनौली थाना प्रभारी एमपी सिंह का कहना है मामले की जांच की जा रही है। मामला दर्ज किया गया है। आरोपी को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

4 साल के बच्चे की अपहरण के बाद हत्या

पहले गला घोंटकर मार डाला, फिर बोरे में भरकर लाश तालाब में फेंकी

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर में चार साल के बच्चे की अपहरण के बाद हत्या कर दी गई। 3 दिन पहले वह खेलते-खेलते घर के सामने से लापता हो गया था। सोमवार देर शाम बच्चे का शव बोरे में घर से 500 मीटर दूर तालाब में उतराता मिला है। इसके बाद ग्रामीणों ने पुलिस बुलाई। पुलिस ने शव को बाहर निकलवाया।

फिलहाल पुलिस को आशंका है कि बच्चे की पहले गला घोंटकर हत्या की गई। फिर शव को बोरे में भरकर तालाब में फेंका गया।

पूरा मामला ककरौली थानाक्षेत्र के तेवड़ा गांव का है। यहां के रहने वाले शहजाद खान शनिवार को परिवार के साथ खेत में काम करने गए थे, जबकि उनका बेटा अरसलान (4) उस समय गली में खेल रहा था। इसी दौरान वह गायब हो गया था। दोपहर तक जब वह घर नहीं पहुंचा, तो घरवालों ने उसकी

तलाश शुरू की।

पूरे गांव में ढूंढा। लेकिन बच्चे का पता नहीं चला। इसके बाद परिवार के लोगों ने थाने गुमशुदगी की रिपोर्ट लिखवाई। इसके बाद से पुलिस बच्चे की तलाश में जुटी थी।

गले-चेहरे पर मिले चोट के निशान

सोमवार देर शाम तालाब में गांव वालों को एक बंद बोरा दिखाई पड़ा। गांव के लोगों को शक हुआ। इसके बाद लोगों ने पुलिस को सूचना दी। इसके बाद मौके पर एसपी देहात फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। फिर बोरे को तालाब से निकलवाया। बोरे को खोला गया, तो बच्चे का शव मिला। उसके गले और चेहरे पर चोट के निशान थे।

फोरेंसिक टीम को नहीं मिले कोई सबूत

इसके बाद स्क्वॉड डॉग स्क्वायड और फोरेंसिक टीम को भी गांव बुलाया। दोनों टीमें देर रात तक तालाब के आस-पास जांच करती रहीं, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। इसके बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

ग्रामीणों को बच्चे की बलि देने की आशंका

मृतक बच्चे के मामा नौशाद ने बताया कि मेरा भांजा तीन दिन से लापता था। उसका शव तालाब से बरामद हुआ है। उसकी हत्या की गई है। मेरी मांग है कि दोषियों के कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। वहीं, ग्रामीणों का आशंका है कि किसी तांत्रिक ने बच्चे को उठाकर बलि दी है।

गला घोंटकर की गई हत्या : एसपी

एसपी ग्रामीण अतुल कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि बच्चा दिन से लापता था। बच्चे की डेड बॉडी एक बोरे में मिली है।

मामले की जांच की जा रही है। घटना की वजह और दोषियों का पता करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए कई टीमें लगी हुई हैं। मुखबिर तंत्र की मदद भी ली जा रही है। ग्रामीणों से भी जानकारी जुटाई जा रही है। आशंका है कि बालक की हत्या गला घोंटकर की गई है।

उत्तराखंड टनल हादसे में फंसा है मिर्जापुर का युवक

मिर्जापुर। उत्तराखंड टनल हादसे से मिर्जापुर जिले के अदलहाट थाना क्षेत्र के घरवासपुर गांव में मातम पसरा है। इस गांव का एक युवक अखिलेश टनल में फंसा हुआ है।

दीपावली के उत्सव में भी पूरे गांव में अंधेरा पसरा रहा। पूरे परिवार का एक एक पल भारी हो गया है।आस पड़ोस के लोग पल पल की सूचना जानने के लिए अखिलेश के दरवाजे पर जमा हो जाते हैं। पूरा गांव अखिलेश की सलामती के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है। समय बढ़ने के साथ चिन्ता बढ़ रही है।

दीपावली पर उत्तराखंड में हुए टनल दुर्घटना में मिर्जापुर जिले के घरवासपुर गांव का अखिलेश भी फंसा है। यहां उसकी पत्नी गर्भवती हैं। अखिलेश के पिता रमेश ने बताया कि वह पिछले तीन सालों से कार्यदायी संस्था नवयुग कम्पनी से जुड़ा है। वह सुपरवाइजर पद पर तैनात हैं। उन्होंने बताया कि घटना के एक दिन पहले उससे फोन पर बात हुई थी। उसने पत्नी की डिलिवरी पर आने की बात कही थी। क्या मालूम था कि जब दिपावली का त्योहार मनाया जाएगा तब हम पल पल मर रहे और जी रहे हैं। रमेश बताते हैं कि उनका छोटा भाई विजय हेल्पलाइन पर बात कर वस्तुस्थिति से अवगत कराता है। मेरी तो किसी अनहोनी को लेकर चिंता बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि किसी अधिकारी ने मुझसे सम्पर्क नहीं किया है। उत्तराखंड टनल हादसे को लेकर प्रधानमंत्री मोदी खुद मानिटरिंग कर रहे हैं।टनल में फंसे लोगों को बचाव में किसी तरह की कोताही नहीं बरती जा रही है। आक्सीजन पानी खाना दिया जा रहा।पर घरवासपुर गांव में एक एक पल भारी है। हादसे की जानकारी मिलने पर नात रिश्तेदार पहुंच रहे हैं।वे परिवार वालों को ईश्वर पर भरोसा रखने बात करते हैं जो होगा अच्छा होगा।

अमरोहा में कार डिवाइडर से टकरायी, दो मरे तीन घायल

अमरोहा। उत्तर प्रदेश में अमरोहा जिले के डिडौली कोतवाली क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या नौ पर कार के डिवाइडर से टकरा कर पलटने से कार सवार दो श्रमिकों की मौत हो गयी जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गये।

पुलिस उपाधीक्षक विजय कुमार राणा ने मंगलवार को बताया कि बरेली जिले के भोजीपुरा थाना क्षेत्र के गांव दोहरा टांडा निवासी जियाउर्रहमान, अब्दुल कलीम, परवेज तथा ज़लील समेत अन्य हरियाणा के सिरसा की मंडी में मज़दूरी करते थे। सोमवार रात सभी लोग कार में सवार होकर बरेली से हरियाणा सिरसा मंडी जा रहे थे, जैसे ही कार नेशनल हाईवे-09 स्थित डिडौली कोतवाली क्षेत्र के भोलेनाथ ढाबे के सामने पहुंची कि कार से चालक नियंत्रण खो बैठा जिससे तेज़

रफ्तार कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। जिससे कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।

चीख़ पुकार सुनकर घटनास्थल पर पहुंचे आस-पास के लोगों ने पुलिस को सूचना देते हुए कार में फंसे लोगों को बाहर निकाला। तब तक में जियाउर्रहमान (36) तथा अब्दुल (32) की मौत हो चुकी थी जबकि कलीम, परवेज तथा ज़लील घायल हो गए हैं। घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती करा दिया गया है।

मिर्जापुर में युवक गंगा में डूबा

मिर्जापुर। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में मां विंध्यवासिनी देवी के दर्शन के लिए आए एक दर्शनार्थी की मंगलवार सुबह स्नान के दौरान गंगा नदी में डूब जाने से मृत्यु हो गई। पुलिस के अनुसार आजमगढ़ जिले के कप्तानगंज थाना क्षेत्र के हरईया गांव से कुछ लोग विंध्याचल मंदिर में दर्शन पूजन के लिए आए थे। आज सुबह अंगद यादव का पुत्र रामजन्म यादव (36) स्थानीय अखाड़ा घाट पर स्नान कर रहा था कि पांव फिसलने से वह डूब गया। घाट पर लोगों ने पुलिस को सूचना दी तथा शोर मचाने लगे। मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय गोताखोरों की सहायता से युवक को गंगा नदी से बाहर निकला और उसे विंध्याचल अस्पताल ले गए जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

लखनऊ में 16 नवंबर से शुरु होगी भारतीय सेना में अग्निवीर भर्ती रैली

लखनऊ । भर्ती क्षेत्र उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के तत्वावधान में भर्ती कार्यालय (मुख्यालय) लखनऊ 16 नवंबर से एएमसी सेंटर और कॉलेज स्टेडियम में अग्निवीर के लिए एक भर्ती रैली आयोजित करेगा।

मध्य कमान के प्रवक्ता ने मंगलवार को बताया कि यह रैली उत्तर प्रदेश में रैलियों की श्रृंखला में तीसरी होगी और सात दिनों की अवधि के लिए निर्धारित है और इसमें पिछले अप्रैल के महीने में आयोजित ऑनलाइन कॉमन एंट्रेंस एग्जाम (सीईई) पास करने वाले उम्मीदवार भाग लेंगे। लगभग 11 हजार उम्मीदवारों को शॉर्टलिस्ट किया गया है। उन्होने बताया कि अग्निवीर जनरल ड्यूटी, अग्निवीर टेक्निकल, अग्निवीर ट्रेड्समैन (10वीं और 8वीं) और अग्निवीर क्लर्क/स्टोर कीपर

टेक्निकल की रिक्तियों के लिए इस रैली में उत्तर प्रदेश के 13 जिलों के उम्मीदवारों के भाग लेने की उम्मीद है। ऑनलाइन सीईई पास करने वाले औरैया, चित्रकूट, कन्नौज, बांदा, महोबा, हमीरपुर, बाराबंकी, गोंडा, कानपुर देहात, उन्नाव, कानपुर नगर, फतेहपुर और लखनऊ जिलों के सभी उम्मीदवारों के लिए एडमिट कार्ड जारी कर दिए गए हैं। उम्मीदवार सुबह एक बजे एएमसी सेंटर और कॉलेज स्टेडियम, लखनऊ में रिपोर्ट करेंगे।

इच्छुक उम्मीदवारों को रैली अधिसूचना और प्रवेश पत्र में सूचित सभी दस्तावेजों की मूल प्रति कलित करने की सलाह दी जाती है। उम्मीदवारों को यह भी सलाह दी जाती है कि वे सतर्क रहें और दलालों के शिकार न बनें या किसी अनुचित साधन का सहारा न लें, क्योंकि सेना में चयन पूरी तरह से निष्पक्ष और पारदर्शी है, जिसका उद्देश्य सशस्त्र बलों के लिए उपयुक्त सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार का चयन करना है।

बहन पर तेजाब फेंकने वाले का 10 साल बाद मर्डर

200 मीटर तक लाश घसीटी, फिर नदी में फेंका; पुलिस ने 2 सगे भाइयों को पकड़ा

गोरखपुर। गोरखपुर में एक युवक की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी गई। हत्यारों ने लाश को करीब 200 मीटर तक घसीटा। फिर बाइक पर लादकर नदी में फेंक दिया। इस मामले में पुलिस ने 2 सगे भाइयों समेत तीन युवकों को हिरासत में लिया है।

छानबीन में इस मर्डर के पीछे 10 साल पुरानी रंजिश सामने आई है। जिस लड़के का कत्ल किया गया। दरअसल उसने एकतरफा प्यार में एक लड़की पर तेजाब फेंका था। उसी लड़की के भाइयों ने ये कत्ल किया। घटना गीडा इलाके के पिपरी की है। मृतक युवक का नाम उमेश चौहान (35) है। वह

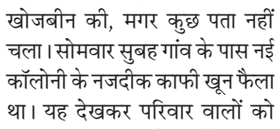

गीडा इलाके के पिपरी गांव का रहने वाला था। दिवाली की रात अचानक वह घर से गायब हो गया। घरवालों ने खोजबीन की, मगर कुछ पता नहीं चला। सोमवार सुबह गांव के पास नई कॉलोनी के नजदीक काफी खून फैला था। यह देखकर परिवार वालों को हत्या की आंशका हुई। उन्होंने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची। गांव के लोगों से पूछताछ की गई। इसके बाद 10 साल पुरानी रंजिश की बात सामने आई। फिर पुलिस उपेंद्र को उठाया। उससे सख्ती से पूछताछ की, तो उसने जुर्म कबूल लिया।

युवक ने 10 साल पहले आरोपियों की बहन पर फेंका था तेजाब

एसपी नॉर्थ मनोज कुमार अवस्थी को उपेंद्र ने बताया, उमेश मेरी बहन से एकतरफा प्यार करता था। वह बहन से शादी करना चाहता था। मगर बहन और घरवाले राजी नहीं थे। इससे नाराज होकर उमेश ने बहन पर तेजाब फेंक दिया। बहन को बचाने के लिए मैं दौड़ा तो उसने मुझ पर भी तेजाब फेंक दिया।

तेजाब से बहन बुरी तरह से घायल हो गई थी। उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई थी। वहीं मेरा चेहरा इलाज के बाद भी खराब हो गया था। इसके बाद से मैंने उमेश की हत्या की कसम खा ली थी। मगर, घटना के बाद उमेश जेल चला गया था। 3 साल पहले वह जमानत पर छूटकर बाहर आया था। इसके बाद से मैं उसे मारने की कोशिश कर रहा था। मगर प्लान फेल हो जा रहा था। दिवाली के दिन उसे मारने के मौका मिला।

रोटावेटर की चपेट में आने से एक बच्चे की मौत

झांसी। महोबा में रोटावेटर की चपेट में आने से घायल हुए 8 साल के बच्चे ने मंगलवार को झांसी में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। 17 दिन पहले वह अपनी ताई के साथ खेत की मेढ़ पर बैठा था और ताऊ खेत में रोटावेटर चला रहे थे। अचानक ट्रैक्टर का संतुलन बिगड़ गया और रोटावेटर के साथ ट्रैक्टर पीछे दौड़ने लगा।

इसी दौरान बच्चा रोटावेटर में फंस गया। बचाने दौड़ी ताई भी रोटावेटर की चपेट में आ गई। किसी तरह ट्रैक्टर को रोका गया और परिजन बच्चे और ताई को अस्पताल ले गए थे। इधर, सदमे में ताऊ ने उसी दिन सुसाइड कर लिया था। अब बच्चे की मौत होने से घर में कोहराम मच गया। अभी ताई की हालत नाजुक बनी हुई है।

पूरी घटना महोबा के महोबकंठ थाना क्षेत्र के रिवई गांव की है। यहां के अशोक अहिरवार खेती करते थे। उनके भतीजे विजय का कहना है कि मौसा अशोक 28 अक्टूबर को खेत पर रोटावेटर चला रहे थे।

उनकी पत्नी देवकी और भतीजा 8 साल का रमाशंकर उर्फ भोला खेत की मेढ़ पर बैठे थे। संतुलन बिगड़ने से ट्रैक्टर मेढ़ पर आ गया। इससे भोला रोटावेटर में फंस गया।

प्रतापगढ़ : महिला की ट्रेन से गिरकर मौत

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ में खुंडौर रेलवे स्टेशन पास अयोध्या से दर्शन कर के लौट रही प्रधान की बहू की सरयू एक्सप्रेस ट्रेन से उतरते समय गिरकर मौत हो गई। सूचना पर पहुंची जीआरपी पुलिस ने शव को पीएम के लिए भेज दिया है। महिला अपनी सहेलियों के साथ धार्मिक यात्रा पर गई थीं। वहां से लौटते समय हादसा हो गया। प्रतापगढ़ के कोहंडौर थाना क्षेत्र के ग्राम सभा नरहरपुर के ग्राम प्रधान ज्ञान सिंह के छोटे भाई विनोद सिंह की पत्नी बीनू सिंह (42) अपने गांव की कई महिलाओं के साथ अयोध्या रामलला के दर्शन करने सोमवार को गई थीं। मंगलवार सुबह अयोध्या रामलला के दर्शन करके अयोध्या स्टेशन से सरयू एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ कर अपने घर नरहरपुर वापस आ रही थीं। खुंडौर रेलवे स्टेशन पर ट्रेन एक मिनट स्टेशन पर रुकने के बाद चल पड़ी। इसी दौरान बीनू सिंह का पैर फिसल गया। जिसके चलते ट्रेन के नीचे चली गईं और घायल हो गयीं। ट्रेन चलने लगी तो चेन पुलिंग कर के ट्रेन रोक दी गई। एम्बुलेंस से महिला को अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। महिला के दो लड़के हैं। जिसमें शिवम (18) व दीपांजल (21) पति विनोद सिंह खेती किसानी करता है। स्टेशन अधीक्षक कोहंडौर मिथिलेश कुमार ने बताया की सूचना पर जीआरपी मौके पर पहुंची। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

25 फीट ऊंचे विज्ञापन पोल पर चढ़ी महिला

आगरा। आगरा के थाना सदर के प्रतापपुरा में मानसिक रूप से कमजोर महिला विज्ञापन के पोल पर चढ़ गई। महिला दो घंटे तक पोल पर चढ़ी रही। लोगों की भीड़ लग गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने महिला को समझा बुझाकर नीचे उतारा। प्रतापपुरा चौराहे पर विज्ञापन का करीब 25 फीट ऊंचा पोल है। सुबह करीब 12 बजे एक मानसिक रूप से विक्षिप्त महिला पोल पर चढ़ गई। वो पोल के ऊपर बैठी रही। लोगों ने उसे आवाज देकर नीचे उतरने को कहा, लेकिन महिला ने उनकी बात नहीं सुनी। महिला बार-बार पोल पर लटकती रही।

आगरा में किसानों ने पंचायत में भरी हुंकार

आगरा। आगरा के ब्लॉक बरौली अहीर की ग्राम पंचायत सलेमाबाद में इनर रिंग रोड फेज 3 कार्य तेजी के साथ चल रहा है। इनर रिंग रोड पर गांव सलेमाबाद में एक ओवर ब्रिज बनाया जा रहा है। इस ओवर ब्रिज की ऊंचाई 5 फुट करने की किसानों ने मांग की है। किसानों का आरोप है कि किसानों को लगातार धोखा दिया जा रहा है। परंतु किसने की मांग को नहीं माना जा रहा है। ग्राम प्रधान शिव सिंह ने बताया कि इस रास्ते पर होकर लगभग एक दर्जन से अधिक गांव के लोग निकलते हैं। साथ ही साथ यह रोड ग्वालियर रोड को देवरी रोड से मिलता है।

भारतीय किसान यूनियन के जिलाध्यक्ष

दीपक तोमर ने बताया कि इससे पहले भी किसानों की कई बार इनर रिंग रोड का निर्माण कर रही कंपनी के साथ बैठक हुई है। परंतु हर बार उन्होंने सिर्फ आश्वासन दिया है। किसानों को ही साथ हर बार धोखा किया जा रहा है। उनका कहना है जब तक किसानों की बात नहीं मानी जाएगी। तब तक कार्य को शुरू नहीं होने दिया जाएगा। साथ ही साथ अनिश्चितकालीन धरना भी दिया जाएगा।

किसान मान सिंह ने बताया कि बरसात के समय में रोड पर पानी भर जाएगा, तो निकलना मुश्किल हो जाएगा। परंतु इनर रिंग रोड के पॉल को ऊपर ना बढ़कर नीचे कर दिया गया है। जिसके चलते उसमें जल भराव की स्थिति रहेगी।

शार्ट न्यूज

वसुधैव कुटुंबकम -व्यापार द्वारा एकजुट थीम पर 42वां आईआईएफटी प्रगति मैदान में शुरू

नयी दिल्ली। भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला (आईआईएफटी) का 42वां संस्करण आज से प्रगति मैदान में शुरू हुआ। वाणिज्य राज्य मंत्री अनप्रिया पटेल और वाणिज्य राज्य मंत्री सोम प्रकाश ने इस मेले का शुभारंभ किया। इस वर्ष की थीम, वसुधैव कुटुम्बकम प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरणा लेते हुए इसके महत्व पर जोर दिया गया है। सतत विकास हासिल करने के लिए व्यापार में परस्पर जुड़ाव और सहयोग तथा कल्याण.की भावना पर आधारित यह मेला भारतीय उत्पादों को प्रदर्शित करने और उनमें जोश भरने के लिए एक आदर्श मंच प्रदान करता है। भारत और विदेश दोनों से लगभग 3500 प्रदर्शकों के साथ आईआईटीएफ 2023 में भागीदार राज्यों में बिहार और केरल शामिल है जबकि दिल्ली, जम्मू कश्मीर, झारखण्ड, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश फोकस राज्यों के रूप में शामिल है। कुल 28 राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश इस वर्ष प्रदर्शनी में क्षेत्र सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। इसमें अफगानिस्तान, बंगलादेश, ओमान, मिस्र, नेपाल, थाईलैंड, तुर्किये, वियतनाम, ट्यूनीशिया, किर्गिस्तान, लेबनान, ईरान और संयुक्त अरब अमीरात भी भाग ले रहा है। यपिछले संस्करणों की तरह ही, राज्य दिवस समारोह, सेमिनार और सांस्कृतिक कार्यक्रम आगंतुकों के लिए अतिरिक्त आकर्षण के केन्द्र हैं।

फोर्टिस ने शुरू किया डायबिटीज़ निवारण क्लीनिक

नयी दिल्ली। प्री-डायबिटीज़ और डायबिटीज़ के बढ़ते मामलों से निपटने के लिए, फोर्टिस-सीडॉक (सेंटर फॉर एक्सीलेंस फॉर डायबिटीज़, मेटाबोलिक डिज़ीजेस, एंड एंडोक्राइनोलॉजी हॉस्पीटल फॉर डायबिटीज़, एंडोक्राइनोलॉजी) ने डायबिटीज़ रेमिशन क्लीनिक शुरू करने की घोषणा की है। कंपनी ने आज यहां कहा कि यह पहल फोर्टिस सी-डॉक और ट्विन हैल्थ यूएसए ने मिलकर की है और क्लीनिक में होल-बॉडी डिजिटल ट्विन टैक्नोलॉजी को उपलब्ध कराया गया है। यह लॉन्च आईसीएमआर द्वारा हाल में जारी कुछ नतीजों के मद्देनज़र किया गया है जिसके मुताबिक देश में डायबिटीज़ के मामले तेजी से बढ़े हैं और करीब 10 करोड़ से अधिक लोग इस रोग की चपेट में आ चुके हैं जबकि 13/6 करोड़ प्री-डायबिटिक हैं। इस नए क्लीनिक में डायबिटीज़ केयर और मैनेजमेंट के लिए टैक्नोलॉजी-आधारित सेवाएं प्रदान की गई हैं। होल-बॉडी डिजिटल ट्विन टैक्नोलॉजी, जिसमें एडवांस एलगॉरिदम और मशीन लर्निंग का मेल कराया गया है, की मदद से यह क्लीनिक मरीज़ों को पोषण, नींद, और शारीरिक गतिविधियों के मद्देनज़र रोगों के उपचार की कारगर रणनीतियां उपलब्ध कराएगा। ट्विन टैक्नोलॉजी सटीक और लाइफस्टाइल एडजस्टमेंट्स के लिए पर्सनलाइज़्ड मार्गदर्शन की पेशकश करती है।

80 बैठकों के बाद तैयार हुई ई-कॉमर्स पॉलिसी

केंद्र सरकार, बहुत जल्द देश में ई-कॉमर्स पॉलिसी एवं नियमों को लागू करने जा रही है। ई-कॉमर्स व्यापार के लिए काफी समय से लंबित पड़ी ई-कॉमर्स पॉलिसी एवं नियमों के घोषित होने का फायदा ग्राहकों और रिटेल व्यापारियों को पहुंचेगा। इस पॉलिसी को तैयार करने में लगभग दो वर्ष लगे हैं। वाणिज्य मंत्रालय एवं उपभोक्ता मामले मंत्रालय और सभी स्टेकहोल्डर्स के बीच लगभग 80 बैठकें हुई हैं। कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल से हुई मुलाकात के बाद यह बात कही है। गोयल ने उन्हें भरोसा दिलाया है कि उनके अमेरिका से लौटते ही देश में ई-कॉमर्स पॉलिसी एवं नियमों को लागू कर दिया जाएगा। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री, इंडो पैसेफिक इकोनॉमिक फोरम की मीटिंग में भाग लेने के लिए 4 दिन की यात्रा पर अमेरिका गए हैं। वे 17 नवंबर को स्वदेश लौटेंगे। बतौर प्रवीण खंडेलवाल, देश में लंबे समय से कैट द्वारा ई-कॉमर्स पॉलिसी एवं उपभोक्ता कानून के अंतर्गत नियमों को लागू करने की मांग की जा रही है। इसके पीछे ई-कॉमर्स बाजार में समानता की प्रतिस्पर्धा का माहौल तैयार करना है। अंतिम पड़ाव तक पहुंचने के लिए वाणिज्य मंत्रालय एवं उपभोक्ता मामले मंत्रालय की सभी स्टेकहोल्डर्स के साथ लगभग 80 बैठकों में विस्तृत बातचीत हुई है।

चेयरमैन और निदेशक के खिलाफ मुंबई पुलिस के पास मामला दर्ज

नई दिल्ली। मुंबई पुलिस ने महादेव सट्टेबाजी एप के संबंध में डाबर ग्रुप के निदेशक गौरव बर्मन और कंपनी के अध्यक्ष मोहित बर्मन सहित 32 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। इन लोगों पर धोखाधड़ी और जुए की अलग-अलग धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) के अनुसार, कथित महादेव सट्टेबाजी एप में कथित आरोपी के रूप में मोहित बर्मन 16वें आरोपी हैं। गौरव बर्मन 18वें नंबर पर हैं। मुंबई पुलिस के पास दर्ज मामले के अनुसार, 31 लोगों के खिलाफ नामजद प्राथमिकी है। 32 अज्ञात लोगों का भी जिक्र है। सामाजिक कार्यकर्ता प्रकाश बनकर की शिकायत पर सात नवंबर को प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। एफआईआर में एक्टर साहिल खान का नाम आरोपी नंबर 26 के रूप में शामिल किया गया है। साहिल खान पर कथित तौर पर महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी एप से संबंधित एक और सट्टेबाजी एप चलाने का आरोप है। एफआईआर के अनुसार, साहिल पर न केवल प्रमोशन का बल्कि एप चलाकर भारी मुनाफा कमाने का भी आरोप है। गौरतलब है कि इससे पहले साहिल खान को दुबई में ऑनलाइन बेटिंग एप की एक पार्टी के वीडियो में देखा गया था। शुरुआत में इसे प्रमोशनल वीडियो बताया गया था, लेकिन अब एप संचालक के तौर पर एफआईआर में नाम आने से साहिल खान की मुश्किलें बढ़ने वाली हैं।

नहीं रहे पीआरएस ओबेरॉय

नई दिल्ली। ओबेरॉय समूह के मानद चेयरमैन पृथ्वीराज सिंह ओबेरॉय (पीआरएस ओबेरॉय) का मंगलवार सुबह निधन हो गया। वे 94 साल के थे। पीआरएस ओबेरॉय ने भारत में होटल व्यवसाय को नई दिशा देने में अहम भूमिका निभाई थी। उन्हें इस व्यवसाय चेहरा बदलने के लिए जाना जाता था। पीआरएस ओबेरॉय ने 2022 में ईआईएच लिमिटेड के कार्यकारी अध्यक्ष और ईआईएच एसोसिएटेड होटल्स लिमिटेड के चेयरमैन पद छोड़ दिया था। उन्हें 2008 में पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया था। कंपनी की ओर से जारी बयान में कहा गया कि हमें अत्यंत दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि ओबेरॉय समूह के चेयरमैन पी. आर. एस ओबेरॉय का आज सुबह निधन हो गया। आतिथ्य उद्योग में एक महान हस्ती ओबेरॉय की विरासत किसी सीमा तक सीमित नहीं है। इसने वैश्विक परिदृश्य पर एक अमिट छाप छोड़ी है। बयान में कहा गया कि एक प्रतिभावन शख्स को खोने का शोक मनाते हुए उनकी विरासत को याद रखेंगे। श्रद्धांजलि सभा से जुड़ी जानकारी जल्द साझा की जाएगी। अंतिम संस्कार मंगलवार को शाम चार बजे कापसहेड़ा में भगवंती ओबेरॉय चैरिटेबल ट्रस्ट (ओबेरॉय फार्म) में किया जाएगा।

वनस्पति तेल आयात 16 फीसदी बढ़कर 167.1 लाख टन पहुंचा

नई दिल्ली। भारत का वनस्पति तेल आयात अक्तूबर, 2023 में समाप्त तेल वर्ष में 16 फीसदी बढ़कर 167.1 लाख टन पर पहुंच गया। ?कुछ खाद्य तेलों पर कम शुल्क की वजह से आयात बढ़ा है। तेल वर्ष 2021-22 (नवंबर-अक्तूबर) में 144.1 लाख टन खाद्य तेल का आयात हुआ था। सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) ने सोमवार को बताया, तेल वर्ष 2022-23 में कुल वनस्पति तेल आयात में 164.7 लाख टन खाद्य तेल था। गैर-खाद्य तेल की हिस्सेदारी सिर्फ 2.4 लाख टन रही। पिछले वर्ष की तुलना में खाद्य तेलों के आयात में 24.4 लाख टन की इस वृद्धि का कारणकच्चे पाम तेल, सोयाबीन तेल और सूरजमुखी तेल पर मौजूदा 5.5 फीसदी का निचला शुल्क है। बुनियादी ढांचा क्षेत्र की 150 करोड़ रुपये या इससे अधिक के खर्च वाली 417 परियोजनाओं की लागत इस साल सितंबर तक तय अनुमान से 4.77 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ गई है। देरी व अन्य कारणों से इन परियोजनाओं की लागत बढ़ी है। सांख्यिकी व कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक, इस तरह की 1,763 परियोजनाओं में से 417 की लागत बढ़ गई है।

कोयला खान नीलामी का 8वां दौर बुधवार को, 5 राज्यों में 35 खानें होंगी नीलाम

नयी दिल्ली। कोयला मंत्रालय पांच राज्यों बिहार, झारखंड , महाराष्ट्र, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में कुल 35 कोयला खानों के लाइसेंस की नीलमी बुधवार 15 नवंबर को कराएगा। यह जानकारी सोमवार को मंत्रालय की एक विज्ञप्ति में दी गयी। कोयला ब्लाकों की नीलामी का यह आठवां दौर होगा। विज्ञप्ति के अनुसार यह यह कोयला क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बड़ा कदम होगा। कोयला मंत्रालय ने वर्ष 2027 तक कोयले का वार्षिक उत्पादन वर्तमान करीब एक अरब टन से बढ़ा कर 140.4 करोड़ टन और वर्ष 2030 तक 157.7 करोड़ टन तक पहुंचाने की योजना बनाई है।

जून 2018 में वाणिज्यिक खनन की पहली सफल नीलामी शुरू कराने के साथ ही कोयला क्षेत्र 2020 में वाणिज्यिक कोयला खनन के लिए खुल गया है। तब से कोयला मंत्रालय ने वाणिज्यिक कोयला खनन नीलामी के सात दौर आयोजित किए हैं और 91 खदानों की नीलामी की गई है, जिनकी अधिकतम क्षमता 22.1 करोड़ टन प्रति वर्ष है।

आठवें दौर के लिए तैयार सूची में बिहार में तीन, झारखंड में 7 , महाराष्ट्र में 5, ओडिशा में 19 और पश्चिम बंगाल में 5 कोयला खानों की नीलामी की जाएगी। कुल 39 में से 12 खानों की नीलामी कोयला खान (विशेष प्रावधान) अधिनिमय 2015 के तहत तथा 27 की नीलामी खान एवं खनिज विकास अधिनिमय 1957 के प्रावधानों के तहत की जानी है। पर मंत्रालय का कहना है कि इस दौर में 35 खाने नीलामी के लिए उपलब्ध होंगी।

1957 के कामनून में 2015 के संशोधन से कोयला क्षेत्र को खोलने में सहायक बना है तथा वाणिज्यक खनन को प्रोत्साहन मिला है। इससे सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों की कंपनियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने और कोयले के अंतिम उपयोग पर किसी भी प्रतिबंध के बिना कोयला खदानों की नीलामी की अनुमति देने का रास्ता साफ हुआ। इन खदानों से निकलने वाले कोयले का उपयोग निजी खपत, बिक्री या किसी अन्य उद्देश्य के लिए किया जा सकता है। वाणिज्यिक कोयला खनन की शुरुआत से कई लाभ हुए हैं जिनमें कोयला समृद्ध राज्यों को राजस्व का लाभ भी शामिल है जिससे क्षेत्रीय विकास को गति मिली है।

मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि नीलामी के आगामी दौर में बोलियां लगाने के लिए कुल 35 कोयला खदानें होंगी, जिसमें सीएम (एसपी) अधिनियम 2015 के तहत 11 और एमएमडीआर अधिनियम 1957 के तहत 24 कोयला खदानें शामिल हैं। इनमें से 14 कोयला खदानें पूरी तरह से तैयार हैं, जबकि 21 आंशिक रूप से तैयार हैं। इसके अलावा, वाणिज्यिक कोयले के सातवें दौर के दूसरे प्रयास के तहत 4 कोयला खदानों को बोली लगाने के लिए रखा जा रहा है, जिसमें एक सीएमएसपी कोयला खदान और तीन एमएमडीआर कोयला खदानें शामिल हैं। इनमें से एक पूरी तरह से तैयार है और तीन आंशिक रूप से तैयार हैं।

गोयल अमेरिका में टेस्ला फैक्ट्री पहुंचे, कई देशों के व्यापार मंत्रियों से की मुलाकात

नयी दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल अमेरिका यात्रा के दौरान के प्रारंभ में फ्रेमोंट में टेस्ला की फैक्ट्री का भ्रमण किया और टेस्ला समूह के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बातचीत की।

वाणिज्य एवं द्योग मंत्रालय की एक विज्ञप्ति के मुताबिक श्री गोयल सोमवार को सान फ्रांसिस्को पहुंचे। टेस्ला भारत में अपनी इकाई स्थापित करना चाहती है पर उसकी योजना अभी परवान नहीं चढ़ सकी है। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार कंपनी भारत में कुछ ऐसे रियायतें चाह रही थी जिन पर सरकार सरकार सहमत नहीं थी।

गोयल के पास, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण तथा वस्?त्र मंत्रालय का भी प्रभार है।

गोयल ने यात्रा के पहले दिन अमेरिका की व्यापार वार्ता प्रतिनिधि कैथरीन ताई, कोरिया के व्यापार मंत्री डुकगेन आह्न और सिंगापुर के व्यापार एवं उद्योग मंत्री गैन किम योंग साथ अलग अलग द्विपक्षीय बैठकें भी कीं।

बयान में कहा गया है कि इन बैठकों के दौरान गोयल ने भारत-प्रशांत आर्थिक समझौते (आईपीईएफ) के तहत संभावित सहयोग और डब्ल्यूटीओ तथा आपसी हितों से संबंधित मुद्दो के संबंध में द्विपक्षीय व्यापार और वाणिज्य संबंधों को और आगे बढ़ाने के उपायों के बारे में चर्चा की।

सिंगापुर और दक्षिण कोरियाई के वाणिज्य-उद्योग मंत्रियों के साथ बातचीत में श्री पीयूष गोयल ने दोनों देशों के साथ पहले से चल रहे व्यापार समझौतों की समीक्षा जल्द पूरा करने का सुझाव दिया।

इन बैठकों के अलावा, उन्होंने भारत अमरीका स्टेटजिक पार्टनरशिप फोरम (यूएसआईएसपीएफ) और प्रवासी भारतीयों के सहयोग से आयोजित निवेशक गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया जिसमें ऊर्जा, विनिर्माण, लॉजिस्टिक्स और प्रौद्योगिकी क्षेत्र सहित विभिन्न क्षेत्रों के अमेरिकी उद्योगों के प्रतिनिधियों ने उद्यमियों ने भाग लिया।

गोयल ने एक परिचर्चा सत्र में गोयल ने प्रतिभागियों के साथ व्यापक विचार-विमर्श में भाग लिया और भारत सरकार द्वारा देश में कारोबार को आसान बनाने के लिए किए गए विभिन्न उपायों पर भी प्रकाश डाला।

अपनी इस यात्रा के दौरान वाणिज्य और उद्योग मंत्री गोयल तीसरी व्यक्तिगत भारत-प्रशांत आर्थिक समझौता (आईपीईएफ) मंत्रिस्तरीय बैठक में शामिल होंगेद्य इस फोरम में ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई, फिजी, भारत, इंडोनेशिया, जापान, मलेशिया, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, अमेरिका और वियतनाम शामिल हैं।

वह एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) के कार्यक्रमों में भी भाग लेंगे। वे अपनी इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच साझेदारी और व्यापार तथा आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए प्रतिष्ठित व्यापारिक प्रतिनिधियों, अमेरिकी अधिकारियों और उद्योग जगत की हस्तियों के साथ भी बातचीत करेंगे।

680 करोड़ की स्टार्ट अप योजना का जल्द होगा शुभारंभ : सुक्खू

शिमला। हिमाचल के मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने परिवहन विभाग की समीक्षा बैठक में विभाग से ई-चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के संबंध में 10 दिन के भीतर वस्तु-स्थिति पर रिपोर्ट मांगी है।

सुक्खू ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार युवाओं को स्वरोज़गार प्रदान करने लिए 680 करोड़ रुपये की एक स्टार्ट-अप योजना का प्रथम चरण जल्द ही शुरू करने जा रही है। उन्होंने कहा कि श्रम विभाग अब रोज़गार प्रदाताओं का भी पंजीकरण कर रही है ताकि उन्हें उनकी आवश्यकता अनुसार प्रशिक्षित युवा मिल सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ई-वाहनों के संचालन को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य में 107 ई-चार्जिंग स्टेशन का निर्माण प्रस्तावित है, जिनमें से 53 ई-चार्जिंग स्टेशन विभिन्न पेट्रोल पंपों पर तथा 54 का निर्माण परिवहन विभाग के माध्यम से किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस संबंध में विभाग उन्हें विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करे।

सुक्खू ने राज्य में प्रस्तावित छह हरित गलियारों (ग्रीन कोरिडोर) के निर्माण कार्य की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार ने परवाणू-नालागढ़-ऊना-हमीरपुर-संसारपुर टेरेस, पांवटा-नाहन-सोलन-शिमला,परवाणु-सोलन-शिमला-रामपुर-लोसर, मंडी-जोगिंदरनगर-पालमपुर-धर्मशाला-कांगड़ा- पठानकोट और कीरतपुर-बिलासपुर-मंडी-मनाली-केलंग-जिंगजिंगबार ग्रीन कोरिडोर का निर्माण किया जा रहा है।

उन्होंने इन हरित गलियारों पर बिजली ट्रासंफॉर्मर लगाने तथा निर्माण संबंधी टेंडर प्रक्रिया की जानकारी भी प्राप्त की।

उन्होंने कहा कि चरणबद्ध तरीके से हिमाचल पथ परिवहन निगम की डीजल बसों को ई-बसों के साथ बदला जाएगा तथा जल्द ही 300 नई ई-बसों की खरीद के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू की जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार निगम को घाटे से उबारने के लिए प्रयासरत है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिगत ई-वाहनों के संचालन को प्राथमिकता प्रदान कर रही है तथा सरकारी विभागों में भी ई-टैक्सी संबद्ध की जाएंगी।

केरल की संस्कृति का अंतरराष्ट्रीय मेले में आकर्षण

नयी दिल्ली। राजधानी दिल्ली के प्रगति मैदान में आज से शुरू हुये 42वें भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में केरल मंडल में प्रदेश की संस्कृति के साथ ही व्यापार की झलक देखी जा सकती है।

राज्य के मुख्य सचिव डॉ. वी. वेणु ने आज केरल मंडप का उद्घाटन किया। यह मेला 13 दिनों के व्यापार और प्रदर्शनी की पेशकश करेगा। इस वर्ष केरल, एक भागीदार राज्य के रूप में भाग लेते हुए विभिन्न उत्पादों का प्रदर्शन कर रहा है। साथ ही सहयोग और उद्यमों को बढ़ावा दे रहा है।

इस बार केरल भारत-अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला 2023 का भागीदार राज्य है।

पिछले वर्षों की तरह ही केरल ने इस मेले में मंडप स्थापित किया है। केरल मंडप में नए सहयोग को बढ़ावा देने और नए उद्यमों को आगे लाने के उद्देश्य से सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों द्वारा निर्मित विभिन्न उत्पाद व्यापार मेले में उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

केरल मंडप में सहकारिता विभाग केरल कला कारा कौशल गांव, अनुसूचित जनजाति विकास विभाग, कृषि विकास और किसान कल्याण विभाग, मत्स्य पालन विभाग, हथकरघा और कपड़ा निदेशालय, केरल राज्य हथकरघा विकास निगम लिमिटेड (हैनवीव), केरल राज्य सहकारी विपणन संघ(मार्केटफेड), केरल राज्य बांस मिशन, पंचायत विभाग, केरल शिल्प विकास सहकारी लिमिटेड, रस्सी विकास विभाग, कुदुम्बश्री, केरल राज्य हथकरघा बुनकर सोसायटी लिमिटेड (हंटेक्स), संस्कृति विभाग के उत्पाद शामिल हैं। इस मंडप से लोगों को केरल के उत्पादों के बारे में जानकारी दी जा रही है जिससे नए उद्यमों को बढ़ावा देने की राज्य की मांग भी पूरी हो सकेगी।

जालंधर की मंडियों से अब तक 10.25 लाख टन से अधिक धान की खरीद हुई

जालंधर। पंजाब के जिला जालंधर में धान की खरीद 10 लाख टन के आंकड़े को पार करते हुए निर्धारित लक्ष्य के करीब पहुंच गई है। जिला उपायुक्त विशेष सारंगल ने मंगलवार को बताया कि मौजूदा मंडीकरण सीजन दौरान जिले में 10.58 लाख टन धान की सरकारी तौर पर खरीद का लक्ष्य निर्धारित किया गया है और 13 नवंबर तक विभिन्न खरीद एजेंसियों द्वारा 10.25 लाख टन से अधिक धान की खरीद हो चुकी है। उन्होंने बताया कि सोमवार तक जिले की मंडियों में कुल 10 लाख 33 हजार 958 टन फसल की आमद हुई है, जिसमें पनग्रेन द्वारा तीन लाख 83 हजार 743 टन, मार्कफेड द्वारा दो लाख 83 हजार 105 टन, पनसप द्वारा दो लाख 58 हजार 839 टन, पंजाब स्टेट वेयरहाउस द्वारा 97337 टन और प्राइवेट व्यापारियों द्वारा 2266 टन धान खरीदा जा चुका है।

हैदराबाद में इस साल अक्टूबर में 5,787 आवासीय संपत्तियों के पंजीकरण कराए गए

एजेंसी

हैदराबाद। रियल स्टेट कंसल्टेंसी कंपनी नाइट फ्रैंक इंडिया की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार हैदराबाद में इस साल अक्टूबर में 5,787 आवासीय संपत्तियों के पंजीकरण कराए गए। यह सालाना आधार पर 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

नाइट फ्रैंक इंडिया की मंगलवार को जारी रिपोर्ट के अनुसार आलोच्य माह में पंजीकृत इन संपत्तियों का कुल मूल्य 3,170 करोड़ रुपये था, जो कि सालाना आधार पर मूल्य के हिसाब से 41 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है ।रिपोर्ट के अनुसार यह इस बात की ओर संकेत है कि इस साल अक्टूबर में उच्च मूल्य वाले घरों की बिक्री का रुझान तेज रहा।

यह रिपोर्ट हैदराबाद महानगर के चार जिलों हैदराबाद, मेडचल-मलकजगिरी, रंगारेड्डी और संगारेड्डी जिलों के आंकड़ों पर आधारित है।

अक्टूबर 2023 में, हैदराबाद में पंजीकृत कराई गयी आवासीय संपत्तियों में 50 प्रतिशत सम्पत्तियां 25 - 50 लाख रुपये की कीमत के दायरे की हैं। इस दौरान 25 लाख रुपये से कम कीमत की संपत्तियों का कुल पंजीकृत सम्पत्तियों में हिस्सा 16 प्रतिश था। वर्ष 2022 के दौरान दर्ज इस श्रेणी की संपत्तियों का अनुपात 22 प्रतिशत था।

इसी तरह इनमें 1 करोड़ रुपये और उससे अधिक मूल्य की संपत्तियों का हिस्सा 10 प्रतिशत रहा जो अक्टूबर 2022 के 8 की तुलना में अधिक है।

अक्टूबर 2023 में पंजीकृत 69 प्रतिशत संपत्तियाँ 1,000-2,000 वर्ग फुट के दायरे की रहीं। छोटे घरों (500 -1,000 वर्ग फुट) की मांग में नरमी देखी और इस श्रेणी के लिए पंजीकरण कहा हिस्सा अक्टूबर 2022 के 21 प्रतिशत से घटकर इस वर्ष अक्टूबर में 16 प्रतिशत पर आ गया।

इस दौरान 2,000 वर्ग फुट से बड़ी संपत्तियों की मांग बढ़ी और पंजीकृत सम्पत्तियों में इस वर्ग का हिस्सा सालाना आधार पर 10 प्रतिशत से बढ़कर 12 प्रतिशत हो गया।

पंजीकृत कुल सम्पत्तियों में 43 प्रतिशत मेडचल-मलकजगिरी , 42 प्रतिशत रंगारेड्डी में हैं। हैदराबाद जिले का हिस्सा 14 प्रतिशत रहा।

नाइट फ्रैंक की विज्ञप्ति में कहा गया है कि हैदराबाद, मेडचल-मलकजगिरी और रंगारेड्डी सभी में संपत्ति की कीमतों में सालाना आधार पर औसतन 6 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई।

सरसों और सूरजमुखी तेल महंगा

नयी दिल्ली। विदेशी बाजारों में तेजी के बावजूद स्थानीय स्तर पर मांग निकलने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में सरसों तेल और सूरजमुखी तेल महंगा हो गया तथा अरहर दाल और उड़द दाल के भाव भी चढ़ गए।

तेल-तिलहन = वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में नवंबर का पाम ऑयल वायदा 86 रिंगिट उबलकर 3759 रिंगिट प्रति टन हो गया। इसी तरह नवंबर का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.87 सेंट की तेजी के साथ 52.41 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा। सरसों तेल 147 रुपये और सूरजमुखी तेल 146 रुपये प्रति क्विंटल चढ़ गया जबकि पाम ऑयल 66 रुपये प्रति क्विंटल उतर गया।

वहीं, मूंगफली तेल, सोया रिफाइंड और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन बाजार में अरहर दाल में 500 रुपये और उड़द दाल में 200 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी को छोड़कर शेष में टिकाव रहा। इस दौरान चना, दाल चना, मसूर दाल और मूंग दाल में कोई बदलाव नहीं हुआ और वह पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिकी रही।

अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान चावल और गेहूं के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ।

सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के थोक दाम इस प्रकार रहे : -

दाल-दलहन : चना 6050-6150, दाल चना 7050-7150, मसूर काली 7650-7750, मूंग दाल 9500-9600, उड़द दाल 10600-10700, अरहर दाल 9000-9100 रुपये प्रति क्विंटल रहे।

अनाज : (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 2700-2800 रुपये और चावल = 2800-2900 रुपये प्रति क्विंटल रहा।

चीनी-गुड़ : चीनी एस 3640-3740, चीनी एम. 3900-4000, मिल डिलीवरी 3520-3620 और गुड़ 4400-4500 रुपये प्रति क्विंटल बोले गये।

खाद्य तेल : सरसों तेल 13187 रुपये, मूंगफली तेल 19780 रुपये, सूरजमुखी तेल 12234 रुपये, सोया रिफाइंड 11062 रुपये, पाम ऑयल 8200 रुपये और वनस्पति तेल 10066 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा है।

डाबर ने लॉन्च किया 'ओडोनिल एक्ज़ोटिक रूम स्प्रे'

नयी दिल्ली। भारत में कन्ज़्यूमर प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनी डाबर इंडिया लिमिटेड ने 'ओडोनिल एक्ज़ोटिक रूम स्प्रे' के लॉन्च के साथ अपने ओडोनिल पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। कंपनी ने आज यहां कहा कि यह अनूठा वॉटर-बेस्ड एरोसोल- स्प्रे लॉन्ग-लास्टिंग फ्रैगरेन्स देता है। कंपनी के होम केयर के विपणन प्रमुख सनथ रविन्द्रन पुलिक्ल ने कहा हमने ओडोनिल रूम स्प्रे के लॉन्च के साथ अपने ओडोनिल पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। ये स्प्रे एल्कॉहल से रहित हैं और भारत के बाहर उगने वाले प्राकृतिक फूलों जैसे लैटिन अमेरिका के सेंसुअल डेहलिया और जापान के सकूरा- की सुगंध का बेहतरीन अहसास देते हैं। 'ओडोनिल एक्ज़ोटिक रूम स्प्रे' रेंज के साथ हम नए स्प्रे फोर्मेट में भारतीय उपभोक्ताओं के लिए फ्रैगरेन्स का नया अनुभव लेकर आए हैं। उन्होंने कहा कि इसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म एमज़ॉन इंडिया पर लॉन्च किया गया है। यह प्रोडक्ट जल्द ही अन्य सेल्स चैनलों पर भी उपलब्ध होगा।

थोक मुद्रास्फीति अक्टूबर में शून्य से 0.52 प्रतिशत नीचे

नयी दिल्ली। देश में थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति इस वर्ष अक्टूबर में शून्य से 0.52 प्रतिशत नीचे रही है। सितंबर में यह शून्य से 0.26 प्रतिशत नीचे थी।

पिछले वर्ष अक्टूबर में थोक मुद्रास्फीति 8.67 प्रतिशत थी। थोक मुद्रास्फीति सात महीने से शून्य से नीचे है पर नवंबर में इसके फिर शून्य से हल्का ऊपर आने की संभावना है।

वाणिज्य एवं उद्योग मंगलवार की मंगलवार को जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया, ''अक्टूबर 2023 में मुद्रास्फीति की शून्य से 0.52 प्रतिशत नीचे रही। पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में रसायनों और रासायनिक उत्पादों, बिजली, कपड़ा, बुनियादी धातुओं, खाद्य उत्पादों, कागज और कागज उत्पादों आदि की कीमतों में गिरावट इसकी मुख्य वजह रही।''

अक्टूबर में खाद्य वस्तुओं के वर्ग में थोक मुद्रास्फीति घटकर 2.53 प्रतिशत पर आ गई। सितंबर में यह 3.35 प्रतिशत थी।

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी आंकड़ों के अनुसार खुदरा मुद्रास्फीति इस बार अक्टूबर में घटकर 4.87 प्रतिशत पर आ गयी, जबकि इससे पिछले महीने (सितंबर,23) में यह 5.02 प्रतिशत थी।

ताजा आंकड़ों के अनुसार ईंधन और बिजली वर्ग की मुद्रास्फीति अक्टूबर में शून्य से 2.47 प्रतिशत नीचे रही, जो सितंबर में शून्य से 3.35 प्रतिशत नीचे थी। विनिर्मित उत्पादों की मुद्रास्फीति सितंबर में शून्य से 1.34 प्रतिशत नीचे की तुलना में अक्टूबर में शून्य से 1.13 प्रतिशत नीचे रही।

रेटिंग एजेंसी इकरा की अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा कि वैश्विक बाजार में तेल और जिंसों की कीमतों में नरमी दिख रही है लेकिन देश के अंदर खाद्य कीमतों का ऊंचे दबाव और तुलनात्मक आधार के प्रभाव के चलते नवंबर 2023 की थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति शून्य से 0.1 प्रतिशत ऊपर रह सकती है जो पिछले साल नवंबर में 6.1 प्रतिशत थी।

नई दिल्ली
बुधवार 15 नवंबर 2023
Www.gauravshalibharat.com

शार्ट न्यूज

केन विलियमसन को रोकना भारतीय गेंदबाजों के लिये चुनौती होगा : गावस्कर

मुबंई। भारत के पूर्व कप्तान और कमेंटेटर सुनील गावस्कर का मानना है कि बुधवार को होने वाले विश्वकप के सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के केन विलियमसन से निपटना भारतीय गेंदबाजों के लिये चुनौती साबित हो सकता है। स्टार स्पोर्ट्स के साथ एक विशेष साक्षात्कार में गावस्कर ने कहा केन बहुत महान खिलाड़ी है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह बड़े ब्रेक से बाहर आया है। क्रीज पर वापस आते ही उसने रन बनाए हैं। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि चोट से वापसी का कोई खास फर्क पड़ने वाला है। जरूरत पड़ने पर टर्न को कम करने के लिए वह पिच के नीचे जाने के लिए अपने पैरों का बहुत अच्छी तरह से उपयोग करता है और क्रीज का भी उपयोग करता है। वह बहुत अच्छा खिलाड़ी है। कुलदीप यादव के सामने केन के असहज होने को नकारते हुये उन्होने कहा मुझे नहीं लगता कि वह कुलदीप को खिलाने को लेकर परेशान होंगे। उसे पता होगा कि उससे कैसे निपटना है। यदि जरुरी हो, तो आप उस पर बाउंड्री नहीं मारना चाहेंगे और ओवर में छह सिंगल्स निकालने की कोशिश करेंगे। किसी भी मानक के हिसाब से छह रन प्रति ओवर एक अच्छा स्कोरिंग रेट है, इसलिए वह ऐसा करने की कोशिश करेगा। जब बाउंड्री बॉल आएगी, तो वह बाउंड्री बॉल को हिट करेगा, इसलिए हमने अधिक जोखिम लेने की उसकी इच्छा देखी है।

हिमाचल की टीम चार रणजी मैच खेलेगी

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश की क्रिकेट टीम अपने प्रदेश में चार रणजी मैच खेलेगी। ये सभी मैच धर्मशाला के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाएंगे। अगले साल जनवरी और फरवरी में होने वाले रणजी मैचों में हिमाचल की टीम उतराखंड, बड़ौदा, मध्य प्रदेश और दिल्ली से भिड़ेगी। बीसीसीआई की ओर हिमाचल प्रदेश की क्रिकेट टीम को रणजी के एलीट ग्रुप-डी में रखा गया है। बीसीसीआई के घरेलू क्रिकेट सीजन में इसमें हिमाचल सहित अन्य चार टीमें शामिल हैं। धर्मशाला में पहला मैच 12 से 15 जनवरी तक हिमाचल प्रदेश और उतराखंड के बीच होगा। दूसरा मैच 19 से 22 जनवरी तक हिमाचल और बड़ौदा के बीच होगा। तीसरा मैच दो से पांच फरवरी तक मध्य प्रदेश और हिमाचल के बीच खेला जाएगा। चौथा मैच में 9 से 12 फरवरी तक हिमाचल और दिल्ली के बीच होगा। जो टीम अपने ग्रुप में टॉप पर रहेगी, वह रणजी के अगले दौर में प्रवेश करेगी। धर्मशाला में होने वाले रणजी मैच हिमाचल के लिए अहम होंगे। इनमें जीत हासिल करने की स्थिति में टीम क्वार्टर फाइनल में प्रवेश करेगी। एचपीसीए के सचिव अवनीश परमार ने कहा कि इस बार रणजी के चार मैच धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में खेले जांएगे। इसमें दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड और बड़ौदा की टीमें धर्मशाला आएंगी।

भारतीय ने ऑस्ट्रेलिया को दी कांटे की टक्कर

हरियाणा। हरियाणा के असंध में संपन्न आर्म रेसलिंग चैम्पियनशिप बाउट के दो सुपर मुकाबलों में भारत ने ऑस्ट्रेलिया के आर्म रेसलर को कड़ी टक्कर दी,नतीजन दोनों के बीच रोमांचक मुकाबला 1-1 से बराबरी पर छूटा। हैवीवेट डिविजन में ऑस्ट्रेलिया के मैट हॉलीवुड कोनेली का मुकाबला भारत के आभास राणा से था। मैट कोनेली पेशेवर आर्मरेसलिंग सर्किट में प्रसिद्ध नामों में से एक है, जिसने दुनिया भर में कई अंतरराष्ट्रीय मैचों में प्रतिस्पर्धा की है। दूसरी ओर, भारत के 15 वर्षीय उभरते आर्म रेसलर आभास राणा को हाल ही में कजाकिस्तान के अल्माटी में आयोजित डब्लूएएफ विश्व चैंपियनशिप में बाएं और दाएं हाथ दोनों वर्गों में विश्व चैंपियन का ताज पहनाया गया था। आभास राणा ने सुपर मैच में मैट कॉनली को 4-0 से हराया। मैच सात राउंड के लिए निर्धारित था। दूसरे सुपर मैच में ऑस्ट्रेलिया के रयान बोवेन ने भारत के मजाहिर सैदु को 4-3 से हराया। मजाहिर सैदु ने लड़ाई में शुरुआती फायदा उठाया और बोवेन को स्ट्रैप बैटल में आसानी से हरा दिया। दूसरे राउंड में, बोवेन ने सैदु को पिन कर बराबरी कर ली,तीसरे चरण में मज़ाहिर ने फिर बढत बनायी मगर पांचवें राउंड में स्कोर 2-2 था।

ब्राजील ने बेंटो क्रेपस्की को टीम में किया शामिल

रियो डी जनेरियो। अनकैप्ड एथलेटिको पैरानेंस के गोलकीपर बेंटो क्रेपस्की को कोलंबिया और अर्जेंटीना के खिलाफ फीफा विश्व कप क्वालीफायर के लिए ब्राजील की टीम में शामिल किया गया है। ब्राजील फुटबॉल परिसंघ (सीबीएफ) ने सोमवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि क्रेपस्की को कोलंबिया और अर्जेंटीना के खिलाफ मुकाबले के लिए टीम में बुलाया गया है और उन्हें मैनचेस्टर सिटी के एडर्सन की जगह टीम में शामिल किया गया है। एडर्सन रविवार को प्रीमियर लीग के मुकाबले में पैर में चोट लग गई थी। क्रेपस्की को पहली बार सितंबर में बोलीविया और पेरू के खिलाफ विश्व कप क्वालीफायर के लिए ब्राजील की राष्ट्रीय टीम में बुलाया गया था, लेकिन उन्होंने अभी तक अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी शुरुआत नहीं की है। ब्राजील गुरुवार को बैरेंक्विला में कोलंबिया से और 21 नवंबर को रियो डी जनेरियो के माराकाना स्टेडियम में अर्जेंटीना से खिलाफ खेलेगा। पांच बार के विश्व चैंपियन वर्तमान में अपने पहले चार क्वालीफायर से सात अंकों के साथ दक्षिण अमेरिकी समूह में तीसरे स्थान पर हैं।

महिला अंतर-विभागीय राष्ट्रीय चैम्पियनशिप आज से

नई दिल्ली। तीसरी हॉकी इंडिया सीनियर महिला इंटर-डिपार्टमेंट नेशनल चैंपियनशिप 2023 बुधवार से नई दिल्ली में शुरू होगी। 21 नवंबर तक चलने वाले टूर्नामेंट में आठ टीमों को दो पूल में विभाजित किया गया है। लीग चरण के दौरान, प्रत्येक टीम अपने पूल में अन्य सभी टीमों के खिलाफ खेलेगी। प्रत्येक पूल से शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। सेमीफाइनल 20 नवंबर को और फाइनल 21 नवंबर को खेला जायेगा। पूल ए में रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड, स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया, यूको बैंक और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया शामिल हैं। दूसरी ओर, पूल बी में सशस्त्र सीमा बल, अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड, तमिलनाडु पुलिस और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन शामिल हैं। टूर्नामेंट में नेशनल कोर ग्रुप के कुल 20 खिलाड़ी भाग लेंगे। बंसारी सोलंकी भारतीय खेल प्राधिकरण का प्रतिनिधित्व करेंगी, जबकि इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन का प्रतिनिधित्व अक्षता अबासो ढेकाले, महिमा चौधरी, ज्योति, अजमीना कुजूर, बलजीत कौर, बिचू देवी खारीबाम, दीपिका, इशिका चौधरी, शर्मिला देवी, उदिता और वैष्णवी विट्ठल फाल्के करेंगी। मौजूदा चैंपियन रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड की दीप ग्रेस एक्का, वंदना कटारिया, मारियाना कुजूर, रजनी एतिमारपू, गुरजीत कौर, मोनिका, नवनीत कौर और संगीता कुमारी अपने खिताब की रक्षा करना चाहेगी।

मेदवेदेव ने रुबलेव और ज्वेरेव ने अल्कराज को हराया

रोम। रूस के डेनियल मेदवेदेव ने पिछले साल की एटीपी फाइनल्स की हार का बदला लेते हुए साल के आखिरी टूर्नामेंट के ग्रुप मैच में अपने करीबी दोस्त आंद्रे रुबलेव को 6-4, 6-2 से हराया। वहीं रेड ग्रुप के एक अन्य मैच में स्पेन के कार्लोस अलकराज को जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव ने 6-7 (3), 6-3, 6-4 से हरा दिया। सोमवार को हुए मुकाबले में मेदवेदेव ने अपने रूसी हमवतन रुबलेव के खिलाफ अपने रिकॉर्ड को 7-2 तक सुधार लिया। उन्होंने कहा कि कोर्ट पर कोई दोस्त या दुश्मन नहीं होता है। उन्होंने कहा कि ईमानदारी से कहूं तो, कोर्ट पर, मुझे नहीं पता कि यह उसके लिए कैसा है कोर्ट पर मेरे लिए कोई दोस्त और दुश्मन नहीं। मैं सिर्फ मैच जीतने की कोशिश करता हूं। मैं किसी और चीज के बारे में नहीं सोचता। वहीं दो बार के चैंपियन ज्वेरेव ने स्पर्धा में दुनिया के नंबर दो अल्कराज के खिलाफ मजबूत शुरुआती प्रदर्शन किया, उन्होंने 2021 में ट्यूरिन और 2018 में लंदन में अपने पिछले दोनों मुकाबलों में खिताब जीता था। ज्वेरेव ने कहा, मेरी सर्विस से मुझे काफी मदद मिली। दूसरे सेट के पहले गेम में ब्रेक प्वाइंट बचाने से मुझे मदद मिली।

हॉकी इंडिया ने हॉकी पुरुष जूनियर विश्वकप टीम की घोषणा की

नयी दिल्ली। हॉकी इंडिया ने मलेशिया के कुआलालंपुर में पांच से 16 दिसंबर तक होने वाले एफआईएच हॉकी पुरुष जूनियर विश्व कप के लिए मंगलवार को भारतीय टीम घोषणा की।

हॉकी इंडिया ने आज यहां बताया कि भारत पूल सी में कनाडा, कोरिया और स्पेन के साथ है। भारत पांच दिसंबर को कोरिया के खिलाफ मुकाबले की शुरुआत करेंगा, उसके बाद क्रमश: सात और नौ दिसंबर को स्पेन और कनाडा के खिलाफ भिड़ंत होगी।

टूर्नामेंट के पूल ए में ऑस्ट्रेलिया, चिली और मेजबान देश मलेशिया के साथ मौजूदा चैंपियन अर्जेंटीना शामिल हैं। पूल बी में मिस्र, फ्रांस, जर्मनी और दक्षिण अफ्रीका हैं। पूल डी बेल्जियम, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान है।

क्वार्टरफाइनल 12 दिसंबर को होगा। 14 दिसंबर को सेमीफाइनल तथा 16 दिसंबर को ग्रैंड फाइनल मुकाबला खेला जायेगा।

उल्लेखनीय है कि टूर्नामेंट के पिछले संस्करण में भारत चौथे स्थान पर रहकर कांस्य पदक हासिल करने से चूक गया था।

इस अवसर भारतीय पुरुष जूनियर टीम के कोच सीआर कुमार ने कहा, मौजूदा एशियाई चैंपियन के रूप में वैश्विक मंच पर अपने कौशल का प्रदर्शन करने की संभावना हमें अत्यधिक उत्साह से भर देती है। पिछले जूनियर पुरुष टूर्नामेंटों में हमारे ट्रैक रिकॉर्ड ने सकारात्मक परिणाम दिए हैं, जिससे उच्च स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की हमारी क्षमताओं में आत्मविश्वास पैदा हुआ है।

उन्होंने कहा, इस बार, हम एक अच्छी तरह से तैयार, मजबूत टीम पेश करते हैं, जो जूनियर विश्व कप के प्रति हमारे दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है। इसके अलावा, हम 2016 जूनियर विश्व कप विजेता टीम द्वारा बनाई गई विरासत से प्रेरणा लेते हैं और इसे पूरा करने की इच्छा रखते हैं। इसने जो अपेक्षाएँ स्थापित की हैं।

उन्होंने कहा, इस प्रयास में हमारी सहायता करने के लिए, हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पास अनुभवी खिलाड़ियों का एक समूह है, जो भुवनेश्वर में पिछले जूनियर विश्व कप का हिस्सा थे। वे नेतृत्व की भूमिका निभाएंगे और अपने साथियों को मार्गदर्शन देंगे। हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता विश्व कप में जीत हासिल करना है। जूनियर विश्व कप, और हम इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में नपे-तुले कदम उठाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

घोषित की गई टीम इस प्रकार है : -

कप्तान उत्तम सिंह और अरिजीत सिंह हुंदल उपकप्तान है।

टीम में गोलकीपर मोहित एच एस और रणविजय सिंह यादव हैं।

डिफेंडर शारदानंद तिवारी, अमनदीप लाकड़ा, रोहित, सुनील जोजो और आमिर अली है।

मिडफील्ड विष्णुकांत सिंह, पूवन्ना सी बी, राजिंदर सिंह, अमनदीप और आदित्य सिंह है।

फॉरवर्ड पंक्ति में उत्तम सिंह, आदित्य लालगे, अरजीत सिंह हुंदल, सौरभ आनंद कुशवाह, सुदीप चिरमाको और बॉबी सिंह धामी के कौशल और प्रतिभा।

इसके अतिरिक्त, डिफेंडर सुखविंदर और मिडफील्डर सुनीत लाकड़ा को प्रतिस्थापन खिलाड़ी के रूप में नामित किया गया है।

पैराग्लाइडिंग : नेपाल के अमन पहले, भारत के जसवंत दूसरे स्थान पर

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के कस्बा नरवाणा में मंगलवार को पैराग्लाइडिंग एक्यूरेसी प्री वर्ल्ड कप पहले दिन ओवरऑल में नेपाल के अमन थापा पहले, भारत के जसवंत सिंह दूसरे तथा भारत के ही राजीव ठाकुर तीसरे नंबर पर रहे।

महिला वर्ग में भारत की तरान्नुम ठाकुर पहले, ऑस्ट्रिया की पोलीना दूसरे तथा भारत की स्वप्ना कुमारी तीसरे नंबर पर रही। टीम इवेंट में पहले नंबर पर आकाश एडवेंचर की टीम रही इस टीम में पायलट यशपाल, अश्विनी ठाकुर, योगराज तथा मनोज कुमार थे।

दूसरे नंबर पर भी आकाश एडवेंचर की टीम रही। इसमें अमित कुमार, राजीव ठाकुर, रणजीत सिंह, शिवराज ठाकुर शामिल थे। तीसरे नंबर पर आर्मी-2 की टीम रही। प्रतियोगिता के पहले दिन कुल 66 प्रतिभागियों ने उड़ान भरी थी। इस प्रतियोगिता के पहले दिन बतौर मुख्यातिथि विधायक सुधीर शर्मा ने कहा कि कस्बा नरवाणा में पैराग्लाइडिंग एक्यूरेसी प्री वर्ल्ड कप के आयोजन के बाद यहां पर रैंडम उड़ानों को बल मिलेगा इससे स्थानीय क्षेत्र के लोगों को स्वरोजगार के अवसर मिलेंगे जबकि धर्मशाला तथा इसके आसपास के क्षेत्रों में देशभर से आने वाले पर्यटक भी पैराग्लाइडिंग का लुत्फ उठा सकते हैं। विधायक सुधीर शर्मा ने कहा कि कांगड़ा जिला को पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित किया जा रहा है तथा इसी दिशा में कस्बा नरवाणा में पैराग्लाइडिंग की नई साइट को वर्ल्ड मैप पर दर्शाने के लिए पहल की गई है।

सुधीर शर्मा ने कहा कि धर्मशाला की खूबसूरत वादियां एवं यहां की आबोहवा देश-विदेश से सैलानियों को वर्षभर आकर्षित करती रही हैं। इसके दृष्टिगत ट्रैकिंग, कैम्पिंग, पैराग्लाइडिंग तथा रिवर राफ्टिंग जैसी साहसिक गतिविधियों को विशेष तौर पर बढ़ावा दिया जा रहा है।

फीफा अंडर-17 विश्व कप में इंडोनेशिया बनाम पनामा का मुकाबला रहा ड्रा

जकार्ता। फीफा अंडर-17 विश्व कप के ग्रुप ए के मुकाबले में दूसरे हाफ में हेडर के गोल की बदौलत मेजबान इंडोनेशिया और पनामा के बीच खेला गया मैच 1-1 से ड्रा। इंडोनेशिया के पूर्वी जावा प्रांत के गेलोरा बुंग टोमो स्टेडियम में सोमवार को हुए इस मुकाबले में इंडोनेशिया के पास पनामा की 13 की तुलना में कुल आठ शॉट थे। दो ड्रॉ के साथ इंडोनेशिया इस समय समूह में तीसरे स्थान पर है। ग्रुप के एक अन्य मैच में इक्वाडोर ने दूसरे हाफ में माइकल बरमूडेज़ के दो गोल की मदद से मोरक्को के खिलाफ 2-0 से आश्चर्यजनक जीत दर्ज की। चार अंकों के साथ समूह का नेता इक्वाडोर गुरुवार को पनामा से मुकाबला करेगा जबकि इंडोनेशिया की टीम मोरक्को से भिड़ेगी। ग्रुप बी में जुआन हर्नांडेज के दूसरे हाफ में किए गए गोल की बदौलत स्पेन ने माली पर 1-0 से जीत हासिल की। इसके अलावा अन्य ग्रुप में उज्बेकिस्तान ने अमीरबेक सैदोव के दो गोल और रिचर्ड चुक्कु के आत्मघाती गोल से कनाडा को 3-0 से हरा दिया।

एचएस प्रणॉय कुमामोटो मास्टर्स जापान टूर्नामेंट में कोर्ट पर करेंगे वापसी

कुमामोटो। भारत के स्टार शटलर एचएस प्रणॉय, चिराग शेट्टी-सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी, किदांबी श्रीकांत और लक्ष्य सेन आज से शुरु हो से कुमामोटो मास्टर्स जापान 2023 बीडब्ल्यूएफ सुपर 500 टूर्नामेंट में प्रतिस्पर्धा करेंगे।

एचएस प्रणॉय मंगलवार से शुरू हो रहे बैडमिंटन टूर्नामेंट में बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर पर वापसी करने के लिए तैयार हैं। बैडमिंटन रैंकिंग के शीर्ष 10 में शामिल भारत के प्रणॉय एकमात्र पुरुष एकल खिलाड़ी हैं। उन्हें पीठ की चोट के कारण डेनमार्क और फ्रेंच ओपन से बाहर होना पड़ा था।

सातवीं वरीयता प्राप्त भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी पुरुष एकल के शुरुआती दौर में हांगकांग के गैरवरीयता प्राप्त ली चेउक युई से भिड़ेंगे।

बैडमिंटन के लिए क्वालिफिकेशन विंडो इस वर्ष एक मई को शुरू हुई और अप्रैल 2024 तक रहेगी। विश्व नंबर 17 लक्ष्य सेन और विश्व नंबर 23 किदांबी श्रीकांत भी पुरुष एकल में पेरिस 2024 ओलंपिक के लिए अपनी संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण रैंकिंग अंक की तलाश में होंगे। लक्ष्य सेन को तीसरी वरीयता प्राप्त जापान के कोडाई नाराओका से भिड़ना होगा जबकि श्रीकांत को बेहतर ड्रा मिला है। पूर्व विश्व नंबर एक खिलाड़ी श्रीकांत क्वालीफायर में से एक का सामना करेंगे।

दुनिया के 30वें नंबर के खिलाड़ी प्रियांशु राजावत को क्वालीफायर से बाई मिला है और मुख्य ड्रॉ में उनका सामना चीनी ताइपे के लिन चुन-यी से होगा।

प्रोटेक्टिव रैंकिंग पाने का विकल्प चुनने वाली पीवी सिंधु बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर सुपर 500 टूर्नामेंट में प्रतिस्पर्धा नहीं करेंगी। पुरुष एकल में, शीर्ष वरीयता प्राप्त सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की दुनिया के पांचवें नंबर की जोड़ी, चीनी ताइपे की दुनिया की 21वें नंबर की जोड़ी चिंग याओ लू और पो हान यांग के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी।

ऋषि सुनक के खिलाफ अविश्वास पत्र

उनकी पार्टी की ही सांसद बोलीं- सुनक को पार्टी मेंबर्स ने नकारा; जनता भी साथ नहीं

ब्रिटेन में सियासी उथल-पुथल के बीच पीएम ऋषि सुनक के खिलाफ अविश्वास पत्र दाखिल हो गया है। सुनक की ही पार्टी की सांसद एंड्रिया जेन्किंस ने लेटर में लिखा अब बहुत हुआ। हमारी पार्टी का लीडर एक ऐसा व्यक्ति है, जिसे सदस्यों ने खारिज कर दिया था। अब पोल्स में साबित हो गया है कि जनता भी सुनक को नहीं पसंद करती है। अब समय आ गया है जब सुनक को चले जाना चाहिए।

दरअसल, सोमवार को सुनक ने होम मिनिस्टर सुएला ब्रेवरमैन को पद से हटा दिया था, जिस बात से उनकी पार्टी के कुछ नेता नाराज हैं। एंड्रिया ने आगे कहा- पहले सुनक ने बोरिस जॉनसन को हटने पर मजबूर कर दिया। अब कैबिनेट में मौजूद इकलौती ऐसी नेता जो सड़कों की खस्ताहाल स्थिति और पुलिस के डबल स्टैंडर्ड पर बोलने की क्षमता रखती थीं, को भी निकाल दिया गया है।

सुएला ब्रेवरमैन को गृह मंत्री पद से हटाने का विरोध

अगर ऋषि सुनक के खिलाफ 15 प्रतिशत सांसद नो कॉन्फिडेंस लेटर जमा कर देते हैं, तो यह अविश्वास प्रस्ताव में बदल जाएगा। सुएला को मंत्री पद से हटाने के लिए करीब 50 सांसदों ने सुनक का साथ दिया था। हालांकि, डेली मेल की रिपोर्ट के मुताबिक उन्हें कई ऐसे लेटर भी मिले थे, जिनमें सुएला को न निकालने की अपील की गई थी।

सुनक ने सोमवार शाम सुएला को पद से हटाने के बाद उनकी जगह विदेश मंत्री जेम्स क्लेवरली को गृह मंत्री बना दिया। इसके बाद उन्होंने पूर्व क्करूडेविड कैमरन को ब्रिटेन का विदेश मंत्री घोषित कर दिया। दरअसल, भारतीय मूल की सुएला ब्रेवरमैन ने हाल ही में कई विवादित बयान दिए थे।

पार्टी के ही सदस्यों ने सुएला को हटाने को कहा था

सुनक की पार्टी के अंदर से ही कई दिनों से यह मांग उठ रही थी कि सुएला की बयानबाजी ब्रिटेन की मिडिल ईस्ट पॉलिसी के खिलाफ है और वे अभिव्यक्ति की आजादी को दबाने की कोशिश कर रही हैं। गृह और विदेश मंत्री के अलावा भी सोमवार को कुछ पदों पर बदलाव किए गए।

इन बदलावों के बाद सुनक ने ट्वीट कर कहा था- हमने एक ऐसी टीम बनाई है, जो लंबे समय तक देश की जरूरतों को पूरा कर पाएगी। ये टीम वो बदलाव लेकर आएगी, जिसकी हमें जरूरत है। हम साथ मिलकर देश के हित में फैसले करेंगे। बता दें कि पिछले एक साल के अंदर ब्रिटेन में 3 प्रधानमंत्री बदल चुके हैं।

ब्रिटेन में 1 साल में बदले 3 प्रधानमंत्री

सितंबर 2022 में बोरिस जॉनसन ने पद से इस्तीफा दे दिया था। उन पर कोरोना की पाबंदियों के बीच पार्टी करने, संसद को गुमराह करने सहित कई घोटालों के आरोप थे। उनके बाद लिज ट्रस ब्रिटेन की पीएम बनीं। हालांकि, ट्रस की सरकार सिर्फ 50 दिन तक ही टिक सकी और पार्टी का भरोसा खोने के बाद अक्टूबर में उनकी सरकार गिर गई। इसके बाद ऋषि सुनक को ब्रिटेन का अगला पीएम चुना गया था।

म्यांमार में मिलिट्री ने फिर एयरस्ट्राइक की

5 हजार लोग भागकर मिजोरम पहुंचे; 2021 में तख्तापलट के बाद से 30 हजार लोगों ने पनाह ली

म्यांमार में मंगलवार को सेना भारत से लगी सीमा के पास एयरस्ट्राइक की, जिसके बाद करीब 5 हजार लोग भागकर मिजोरम आ गए। दरअसल, रविवार से म्यांमार में पीपुल्स डिफेंस फोर्सेस और मिलिट्री के बीच में मुठभेड़ चल रही थी। इस दौरान घायल लोग मिजोरम के चम्फाई शहर पहुंचे, जहां उनका इलाज चल रहा है।

चम्फाई के डिप्टी कमिश्नर जेम्स लालरिंचना ने बताया कि इस लड़ाई की शुरुआत तब हुई जब PDF ने भारतीय सीमा के पास स्थित म्यांमार के चिन राज्य में खावमावी और रिहखावदार में दो सैन्य ठिकानों पर हमला कर दिया। उन्होंने रिहखावदार सैन्य अड्डे को अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद उन्होंने खावमावी सैन्य अड्डे पर भी दोपहर तक कंट्रोल कर लिया। इसके बाद जवाबी कार्रवाई करते हुए म्यांमार की मिलिट्री ने खावमावी और रिहखावदार गांवों पर हवाई हमले किए। इसमें एक 51 साल के व्यक्ति की मौत भी हो गई। इसके अलावा करीब पीडीएफ के करीब 5 लोगों ने हमले में जान गंवाई है। मिजोरम के 6 जिले चम्फाई, सियाहा, लांग्टलाई, सेरछिप, हनाथियाल और सैतुअल म्यांमार के चिन राज्य के साथ 510 किमी लंबी सीमा साझा करते हैं।

2021 के तख्तापलट के बाद से करीब 30 हजार चिन शरणार्थी यहां रहते हैं। इससे पहले अप्रैल में म्यांमार सेना ने हवाई हमले किए थे, जिसमें करीब 100 लोग मारे गए थे। हमला पाजीगी कस्बे में हुआ था। आर्मी ने यह हमला तब किया था जब पाजीगी शहर में पीडीएफ का ऑफिस खोल रहे थे। दरअसल, पीडीएफ देश में मिलिट्री के खिलाफ अभियान चला रही है। हमले के वक्त 300 से ज्यादा लोग वहां मौजूद थे।

2021 में तख्तापलट के बाद से म्यांमार में इमरजेंसी

म्यांमार में सेना ने 1 फरवरी 2021 को तख्तापलट कर दिया था। वहां की लोकप्रिय नेता और स्टेट काउंसलर आंग सान सू की और राष्ट्रपति विन मिंट समेत कई नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था। इसके बाद मिलिट्री लीडर जनरल मिन आंग हलिंग ने खुद को देश का प्रधानमंत्री घोषित कर दिया था। सेना ने देश में 2 साल के आपातकाल की घोषणा की थी।

दरअसल, म्यांमार में नवंबर 2020 में आम चुनाव हुए थे। इनमें आंग सान सू की पार्टी ने दोनों सदनों में 396 सीटें जीती थीं। वहीं विपक्ष की यूनियन सॉलिडैरिटी एंड डेवलपमेंट पार्टी ने दोनों सदनों में मात्र 33 सीटें ही जीतीं। इस पार्टी को सेना का समर्थन हासिल था।

अर्मेनिया के शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लेने पर रूस ने व्यक्त किया खेद

मॉस्को। रूस ने अर्मेनिया के प्रधानमंत्री निकोल पशिन्यान के सामूहिक सुरक्षा संधि संगठन शिखर सम्मेलन में शामिल न होने के फैसले पर खेद व्यक्त किया है। क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने मंगलवार को यह जानकारी दी। इससे पहले दिन में, श्री पशिन्यान ने बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको को सूचित किया कि वह 23 नवंबर को मिन्स्क में सीएसटीओ शिखर सम्मेलन में भाग नहीं ले पाएंगे। पेसकोव ने संवाददाताओ से कहा,अगर सचमुच ऐसा है तो हम खेद व्यक्त कर सकते हैं; हम समझते हैं कि प्रत्येक शासनाध्यक्ष या राष्ट्रप्रमुख की कार्यसूची में उसके अपने कार्यक्रम, अपनी परिस्थितियाँ हो सकती हैं। लेकिन कोई केवल खेद व्यक्त कर सकता है, क्योंकि ऐसी बैठकें विचारों के आदान-प्रदान और नोट्स की तुलना करने का एक बहुत अच्छा कारण हैं।

यूक्रेन को स्थायी समर्थन की जरुरत

कीव। उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने मंगलवार को यूक्रेन को स्थायी समर्थन की जरुरत पर बल देते हुए उसके लिए सैन्य सहायता बढ़ाने का आह्वान किया। स्टोल्टेनबर्ग ने ब्रूसेल्स में रक्षा मंत्रियों के साथ यूरोपीय संघ की विदेश मामलों की परिषद की बैठक से पहले कहा मुझे उम्मीद है कि बैठक में हम यूक्रेन की स्थिति पर भी चर्चा करेंगे, तीव्र लड़ाई जारी है, युद्ध के मैदान में स्थिति कठिन है और इससे यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम यूक्रेन के लिए अपना समर्थन बनाए रखें और बढ़ाएं। नाटो महासचिव ने यह भी कहा कि रूस के साथ संभावित शांति वार्ता आयोजित करने के लिए स्वीकार्य शर्तों पर यूक्रेन खुद फैसला करेगा। फरवरी 2022 में रूस द्वारा देश में अपना सैन्य अभियान शुरू करने के तुरंत बाद पश्चिमी सहयोगियों ने कीव को वित्तीय सहायता प्रदान करना और यूक्रेन में हथियार और गोला-बारूद भेजना शुरू कर दिया, जिसमें यूक्रेन के लिए वित्तीय, मानवीय और सैन्य सहायता के लिए आवंटित धन की राशि 150 अरब डॉलर से अधिक थी। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने अक्टूबर 2022 में एक डिक्री पर हस्ताक्षर किए जिसमें कहा गया था कि जब तक श्री व्लादिमीर पुतिन रूस के राष्ट्रपति हैं, उनका देश शांति वार्ता नहीं कर सकता।

पूर्ण स्टारशिप रॉकेट सिस्टम की दूसरी परीक्षण उड़ान 17 नवंबर को : मस्क

वाशिंगटन। अमेरिका में पूर्ण स्टारशिप रॉकेट प्रणाली की दूसरी परीक्षण उड़ान आयोजित करने के लिए 17 नवंबर को संघीय मंजूरी समय पर दी जा सकती है। स्पेसएक्स के संस्थापक एलन मस्क ने यह जानकारी दी है। मस्क ने सोमवार देर रात कहा,अभी सूचित किया गया है कि प्रक्षेपण की मंजूरी शुक्रवार के प्रक्षेपण के समय पर मिलनी चाहिए। स्टारशिप रॉकेट प्रणाली राज्य के दक्षिणी सिरे पर दक्षिण पाद्रे द्वीप के पास स्थित स्टारबेस, टेक्सास से प्रक्षेपित होगी। पूर्ण स्टारशिप रॉकेट प्रणाली का पहला प्रक्षेपण 20 अप्रैल को हुआ, जो अब तक का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली रॉकेट बन गया। परीक्षण उड़ान के दौरान अंतरिक्ष यान को जानबूझकर समाप्त कर दिया गया था क्योंकि कई इंजनों के विफल होने पर इसकी ऊंचाई कम होने लगी थी। अंतरिक्ष यान मेक्सिको की खाड़ी के ऊपर लगभग 39 किलोमीटर की ऊंचाई तक गया, जो कार्यक्रम के इतिहास में आज तक किसी भी स्टारशिप अंतरिक्ष यान तक पहुंचने वाला उच्चतम बिंदु है। मस्क ने हाल ही में कहा कि स्पेसएक्स ने स्टारशिप रॉकेट सिस्टम में प्रमुख उन्नयन लागू किया है जिससे दूसरी परीक्षण उड़ान में कक्षा तक पहुंचने की संभावना बढ़ जाएगी। लगभग 400 फुट का स्टारशिप रॉकेट सिस्टम दो पुन: प्रयोज्य घटकों का उपयोग किया गया है, जिसमें सुपर हेवी बूस्टर शामिल है जो 33 मीथेन-संचालित रैप्टर इंजन और स्टारशिप अंतरिक्ष यान का उपयोग करता है।

आईएचसी ने सिफर मामले में इमरान की जेल सुनवाई के खिलाफ स्थगन आदेश जारी किया

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) ने मंगलवार को सिफर मामले में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की जेल सुनवाई के खिलाफ स्थगन आदेश जारी किया। न्यायमूर्ति मियांगुल हसन औरंगजेब और न्यायमूर्ति समन रफत इम्तियाज की दो सदस्यीय पीठ ने अदियाला जेल में मुकदमे के खिलाफ पाकिस्तान तहरीके-ए-इंसाफ (पीटीआई) प्रमुख खान की इंट्रा-कोर्ट अपील की सुनवाई के दौरान फैसले की घोषणा की। जियो न्यूज के अनुसार, यह घटनाक्रम कार्यवाहक संघीय कैबिनेट द्वारा सोमवार को मामले में पूर्व प्रधानमंत्री और पीटीआई के उपाध्यक्ष शाह महमूद कुरेशी के जेल मुकदमे को मंजूरी देने के बाद आया है। कैबिनेट ने सुरक्षा चिंताओं के कारण अदियाला जेल में पूर्व प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के मुकदमे के संबंध में कानून मंत्रालय द्वारा सारांश पर अपनी सहमति दी। अटॉर्नी जनरल मंसूर अवान ने आज सुनवाई के दौरान अदालत के सामने अपनी दलीलें रखीं। उन्होंने संघीय कैबिनेट ने इमरान खान के जेल मुकदमे को मंजूरी दे दी। उन्होंने कहा कि अधिसूचना भी अदालत के समक्ष पेश की जायेगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

डिजिटल लर्निंग को प्रमोट करने के साथ ही की जाएगी मॉनिटरिंग

▶ परिषदीय विद्यालयों में टेबलेट, स्मार्ट क्लास सेटअप तथा आईसीटी लैब के माध्यम से उपलब्ध कराए जा रहे उपकरणों के उपयोग, रख-रखाव एवं कक्षा शिक्षण के संबंध में एसओपी जारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में शिक्षा व्यवस्था को स्मार्ट बनने के लिए प्रयासरत योगी सरकार ने परिषदीय विद्यालयों में डिजिटल अवस्थापना सुविधाओं के अंतर्गत टेबलेट, स्मार्ट क्लास सेटअप तथा आईसीटी लैब के माध्यम से उपलब्ध कराए जा रहे उपकरणों के उपयोग, रख-रखाव एवं कक्षा शिक्षण के संबंध में निर्देश जारी किए हैं। इसके माध्यम से प्रदेश के सभी परिषदीय विद्यालयों में डिजिटल लर्निंग को प्रमोट किया जाएगा एवं इसकी मॉनिटरिंग की जाएगी। उल्लेखनीय है कि बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा डिजिटल माध्यमों से शैक्षणिक गतिविधियों को प्रभावी बनाए जाने के लिए प्राथमिकता पर 3 महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इनमें परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के उपयोगार्थ 209863 टेबलेट का वितरण, प्रथम चरण में 18381 उच्च प्राथमिक, कम्पोजिट, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में स्मार्ट क्लास की स्थापना और प्रथम चरण में 880 विकास खण्ड में आईसीटी लैब की स्थापना शामिल है।

सुनिश्चित होगी डिजिटल संसाधनों की सुरक्षा एवं संरक्षा

महानिदेशक, स्कूल शिक्षा विजय किरण आनंद की ओर से जारी किए गए एसओपी के अनुसार डिजिटल संसाधनों की सुरक्षा, संरक्षा के साथ ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से विभिन्न निर्देशों का पालन करना है। मसलन, कैसे प्रभावी एवम रुचिकर शिक्षण गतिविधि एवं प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण, लेसन प्लान, बेस्ट प्रैक्टिसेज के माध्यम से कक्षा - कक्ष का रूपान्तरण किया जा सके।

कैसे बच्चों को प्रैक्टिस के अधिक अवसर उपलब्ध कराते हुए एडाप्टिव एवं पर्सनलाइज्ड लर्निंग कराई जा सके। कैसे पूरी शिक्षा प्रणाली को आउटकम आधारित बनाते हुए एक नई कार्य संस्कृति का सृजन करते हुए बच्चों को अवसर की समता के सशक्त उपकरण उपलब्ध कराए जा सकें। कैसे एडमिनिस्ट्रेटिव टास्क को एफिशिएंटली एवं इफेक्टिवली समयबद्ध रूप से पूर्ण किया जा सके।

उपलब्ध कराई जाएगी उत्कृष्ट शैक्षणिक सामग्री

इन डिजिटल संसाधनों के द्वारा विभिन्न प्लेटफार्म (दीक्षा, स्विफ्ट चैट, खान एकेडमी, एमबाइब आदि) एवं ख्याति प्राप्त संस्थाओं जैसे IIT गांधीनगर के माध्यम से उत्कृष्ट शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। इसके संबंध में समस्त हितधारकों को समय-समय पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाएगा तथा यूजर मैनुअल भी उपलब्ध कराए जाएंगे। इस कार्य में व्यक्तिगत ध्यान एवम प्रभावी पर्यवेक्षण, अनुश्रवण अत्यावश्यक है।

दिल्ली में प्रदूषण के कारण जयपुर पहुंची सोनिया

नयी दिल्ली। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के जबरदस्त वायु प्रदूषण की चपेट में आने के कारण राहत पाने के लिए राजस्थान की राजधानी जयपुर पहुंच गई है। कांग्रेस संचार विभाग के प्रभारी जयराम रमेश ने जानकारी देते हुए बताया कि श्रीमती गांधी दिल्ली में प्रदूषण के कारण फिलहाल जयपुर प्रवास पर रहेंगी। उन्होंने कहा दिल्ली में वायु प्रदूषण के कारण कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी अगले कुछ दिनों तक जयपुर में हैं। यह उनका पूरी तरह से निजी दौरा है। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के चुनावी कार्यक्रम की जानकारी भी दी और कहा वह भी जयपुर में रहेंगे और 15 नवंबर को छत्तीसगढ़ में और 16, 19, 21 तथा 22 नवंबर को राजस्थान में चुनाव प्रचार करेंगे। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष आज ही जयपुर पहुंची। उनके इस दौरे को लेकर तरह-तरह की अटकलें लगाई जा रही थीं क्योंकि इस यात्रा को लेकर उन का कोई चुनावी कार्यक्रम भी नहीं दिया गया था लेकिन देर शाम को रमेश ने स्पष्ट किया कि दिल्ली की जहरीली हवा की वजह से वह जयपुर पहुंची हैं।

अब आसमां से भी काशी दर्शन कर सकेंगे पर्यटक

योगी सरकार काशी में जल्द शुरू करने जा रही हेली टूरिज्म योजना

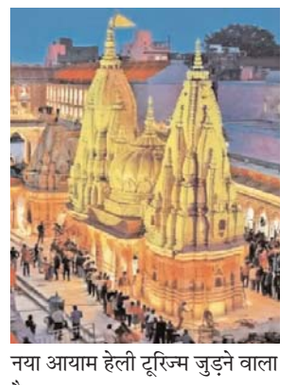

वाराणसी। जल और थल के बाद पर्यटक अब आसमां से भी काशी दर्शन कर सकेंगे। काशी में योगी सरकार की हेली टूरिज्म शुरू करने की योजना है। यह जल्द ही मूर्त रूप लेगी।

आसमां से गंगा दर्शन और वाराणसी को देखने का मौका मिलेगा तो वहीं चंदौली में ईको टूरिज्म का भी लुफ्त उठा सकेंगे। यातायात की अच्छी कनेक्टिविटी और श्री काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर के निर्माण के बाद बनारस में दिनोंदिन पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है।

काशी में दिनोदिन बढ़ रही पर्यटकों की संख्या

किसी शहर की अर्थव्यवस्था में वहां के पर्यटन उद्योग का बड़ा महत्व होता है। बदलती काशी में अब पर्यटन के मायने भी बदल रहे हैं। काशी आने वाले पर्यटक मंदिरों और घाटों का आनंद लेने आ रहे हैं।

आधुनिक करूज़ से भी अर्धचंद्रकार गंगा घाट व सदियों से खड़े ऐतिहासिक इमारतों के साथ गंगा दर्शन कर रहे हैं। अब जल्द ही वाराणसी के पर्यटन में नया आयाम हेली टूरिज्म जुड़ने वाला है।

एक हेलीकॉप्टर में छह लोग कर सकेंगे यात्रा

पर्यटन विभाग के उप निदेशक राजेंद्र कुमार रावत ने बताया कि काशी के मंदिर और गंगा दर्शन के लिए हेलीकॉप्टर चलाया जायेगा। पर्यटक बनारस से सटे चंदौली के ईको टूरिज्म चंदौली का भी लुफ्त उठा सकेंगे। रावत के मुताबिक हेलीकॉप्टर से करीब 20 से 25 मिनट की राइड होगी। एक हेलीकॉप्टर में पायलट समेत 6 लोग यात्रा कर सकेंगे।

शार्ट न्यूज

जुआ खेलते एक जुआरी दबोचा तीन फरार

ललितपुर। बासी पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक के निर्देशन में जनपद में अपराध की रोकथाम एवं जुआरी व सट्टेबाजों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के अन्तर्गत बासी पुलिस ने जुआ खेलते हुए एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। बासी कस्बा में जुआ खेलते हुए एक युवक को पुलिस ने धर दबोचा। उसके पास से नकदी व ताश के पत्ते बरामद हुए। पुलिस ने पकड़े गये जुआरी के विरूद्ध मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी। चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक प्रशांत राणा अपने हमराहों के साथ कस्बा बासी क्षेत्र में पास गश्त कर रहे थे, इसी दौरान उन्हे सूचना मिली कि के मंद तालाब मंदिर के पास झाड़ियों के पीछे कुछ लोग हारजीत की बाजी लगा रहे हैं। पुलिस ने मौके पर जाकर छापा मारा, तब जुआरियों में हड़कम्प मच गया। वह पुलिस को आता देख भागने लगे। किसी प्रकार उन्हे धर दबोचा। पकड़ गये जुआरियों के नाम विशाल अहिरवार पुत्र गणेश अहिरवार उम्र करीब 25 वर्ष निवासी टंकीपुरा कस्बा बासी गिरफ्तार व तीन लोग मौके से फरार। तलाशी लेने पर 2100 रूपये नकदी व फड से ताश के पत्ते बरामद किए गये। पकड़ने वाली टीम उप निरीक्षक प्रशांत राणा (प्रभारी चौकी बाँसी) हेड कांस्टेबल उमाशंकर दुबे कांस्टेबल अरविन्द कुमार आदि शामिल रहे।

आकाशवाणी पर होगा नयी सोच नयी कहानी - ए रेडियो जर्नी विद स्मृति ईरानी

नयी दिल्ली। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी बुधवार से आकाशवाणी पर विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की सफलता पर आधारित कार्यक्रम नयी सोच नई कहानी - ए रेडियो जर्नी विद स्मृति ईरानी% प्रस्तुत करेंगी। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने मंगलवार को यहां यह जानकारी देते हुए बताया कि उद्यमिता, कौशल विकास, खेल, स्वास्थ्य और वित्त सहित विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की सफलता का उत्सव मनाने के लिए आकाशवाणी पर एक कार्यक्रम होगा। एक घंटे का साप्ताहिक कार्यक्रम नयी सोच नयी कहानी - ए रेडियो जर्नी विद स्मृति ईरानी आकाशवाणी पर प्रत्येक बुधवार को सुबह नौ बजे से 10 बजे तक प्रसारित किया जाएगा। पहला कार्यक्रम 15 नवंबर को आकाशवाणी गोल्ड 100.1 मेगाहर्ट्ज पर प्रसारित किया जाएगा। इसे देशभर के आकाशवाणी केंद्रों से भी प्रसारित किया जाएगा। यह कार्यक्रम न्यूज ऑन एआईआर ऐप, आकाशवाणी वेबसाइट और आकाशवाणी यूट्यूब चैनल तथा इसके विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध होगा।

गुजरात में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया नववर्ष और गोवर्धन पूजा

अहमदाबाद। गुजरात में मंगलवार को गुजराती नववर्ष का पर्व और गोवर्धन पूजा हर्ष, उल्लास और श्रद्धा के साथ मनाया गया। राज्यभर में लोगों ने आतिशबाजी तथा पटाखे चलाकर आज से शुरू हुए नववर्ष का सुबह चार बजे से ही स्वागत किया। व्हाटस एप, फेसबुक और ट्वीटर पर अपने रिश्तेदारों और मित्रों को नववर्ष की शुभकामनाएं देने का सिलसिला कल रात बारह बजे से ही शुरू हो गया था। वर्षों से चली आ रही परंपरा के अनुसार गुजराती नववर्ष के मौके पर लोगों ने सुबह जल्दी उठकर घर के आंगन में रंगोली और दरवाजों को सजाकर, पटाखे चलाकर नववर्ष का स्वागत किया। स्नान करने के बाद नए खरीदे हुए कपड़े पहनकर सजधज कर मंदिरों में जाकर पूजा अर्चना और नए साल के लिए सुख, शांति,समृद्धि और विकास की कामना की। कई जगहों पर लोगों ने अपने-अपने घर के आंगन तथा मंदिरों में आज गोवर्धन पूजा की और अन्नकूट का भोग भी लगाया। इस अवसर पर आज लोगों ने एक दूसरे के घर जाकर नवर्ष मुबारक, साल मुबारक कहकर उन्हें शुभकामनाएं दीं। नववर्ष जिसे गुजराती में बेसता वर्ष भी कहते हैं के अवसर पर लोगों में मिठाइयां खिलाकर मुंह मीठा कराया।

पटेल की ओर से 14 वृद्धाश्रमों में दिया गया भोजन

अहमदाबाद। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की ओर से अहमदाबाद के 14 वृद्धाश्रमों में नूतन वर्ष के अवसर पर मंगलवार को दोपहर और शाम का भोजन दिया गया। पटेल विक्रम संवत 2080 के नववर्ष के पहले दिन आज दोपहर को अहमदाबाद के वाड़ज स्थित इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी के वात्सल्य वृद्धाश्रम पहुंचे और सभी वृद्धजनों को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं और सभी बुजुर्गों को स्नेहपूर्वक भोजन परोसा तथा उनके साथ बैठकर भोजन भी ग्रहण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वृद्धजन भी दिवाली और नूतन वर्ष का त्योहार उत्साह और उमंग के साथ मना सकें और उनकी संतानों सहित सभी को उनका आशीर्वाद प्राप्त हो, यही इस स्नेह भोजन कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य है जिसका उन्हें विशेष आनंद है। मुख्यमंत्री इसके बाद सभी वृद्धजनों का आशीर्वाद लिया और उपस्थित सभी पुलिस कर्मियों, रेड क्रॉस सोसायटी के डॉक्टरों और मीडिया कर्मियों को भी नववर्ष की शुभकामनाएं दीं।

बैंक शाखाओं की सुरक्षा पर जमी विशेष दृष्टि

सोनभद्र। पर्व त्यौहारों के मद्देनजर तीन दिन तक लगातार बैंक अवकाश के बाद आज से बैंक संचालित होने की कड़ी में सुरक्षा संरक्षा के पुख्ता इंतजाम के लिहाज से क्षेत्राधिकारी ने किया परिभ्रमण अपने जद में आने वाले बैंकों की शाखाओं के।

उच्च अधिकारियों द्वारा समस्त बैंकों एवं ग्राहक सेवा केंद्रों तथा बाजार पर लगातार भ्रमण करते रहने के निर्देश क्रम में आज क्षेत्राधिकारी घोरावल अमित कुमार द्वारा कस्बा घोरावल में स्थित इंडियन बैंक,व एसबीआई बैंक, यूको बैंक, एचडीएफसी बैंक व आर्यावर्त बैंक का भ्रमण किया गया तथा वहां पर तैनात सुरक्षा कर्मियों को निर्देशित किया गया सतर्कता से ड्यूटी करने को। किसी भी संदिग्ध व्यक्ति के बैंक के अंदर या आसपास खड़े होने की दशा में उससे पूछताछ करने और सूचना उच्च अधिकारियों को तत्काल सुलभ कराने की हिदायत दी गई तथा बैंकों में उपस्थित ग्राहकों को भी सचेत किया गया साथ ही बैंक के बाहर खड़ी बाइक एवं अन्य वाहनों को भी चेक किया गया। चेकिंग के दौरान पाया गया कि अनेक ग्राहकों द्वारा बैंक जाते समय अपनी बाइक को लॉक नहीं किया गया था अतएव उन्हें बाइक को लॉक करने हेतु कहा गया एवं लापरवाही न बरतने हेतु भी समझाया गया।

बैंकों के आसपास चाय पानी पान समोसा आदि की दुकानों पर भी बैठे लोगों से पूछताछ की गई तथा उन्हें वित्तीय अपराधों के प्रति जागरुक करते हुए दुकानदारों को बताया गया कि यदि कोई भी संदिग्ध व्यक्ति दुकान के आसपास बिना कारण नजर आए तो उसकी सूचना पुलिस को अवश्य करें।

लोकसंगीत रंगमंच महोत्सव ने शिवद्वार में अलौकिक आभा बिखेरी

महान विभूतियों की स्मृति में हुआ सम्मान समारोह

सोनभद्र । दीपावली के अगले दिवस उमामहेश्वर दरबार शिवद्वार धाम में संध्या वेला से आरम्भ हुआ वृहत्तर कार्यक्रम सांस्कृतिक महोत्सव का। आयोजन का आगाज हुआ पूजनोपरांत सम्मान समारोह से , ततपश्चात बह चली सुर सरिता की धार लोकगीत संगीत की जो निबद्ध रही सुर सँग लय और ताल से। दो महान विभूतियों का संस्मरण करते सिद्ध सन्त पण्डित शीतला प्रसाद चिर स्मृति सम्मान एवं भोजपुरी गीत सम्राट मुंशी मङ्गल लाल श्रीवास्तव चिर स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया इनकी विधाओं कार्यों का अनुसरण करने वाले व्यक्तित्व के लोगों को। पण्डित शीतला प्रसाद शुक्ल स्मृति सम्मान से लोकजीवन को समर्पित कर देने वाले उत्तराधिकारी पुत्र पण्डित रामनिवास शुक्ल को तथा भोजपुरी काव्य सर्जना में आजीवन तल्लीन भाव से रत व समर्पित कवीश्री हरिद्वार यादव विह्वल को मुंशी मङ्गल लाल श्रीवास्तव चिर स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। उत्तरप्रदेश संगीत नाट्य अकादमी के उपाध्यक्ष एवं सांस्कृतिक प्रकोष्ठ भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष दीपक सिंह ने दोनों सम्मान से क्रमवार सम्मानित किया अतिथि रूप में लोक संगीत

रङ्गमंच महोत्सव के मन्च से और सम्बद्धता रही समिति के संरक्षक साहित्यकार डॉ0 परमेश्वर दयाल पुष्कर की। पण्डित रामनिवास शुक्ल एवं हरिद्वार यादव विह्वल का पुष्पाहार से माल्यार्पण कर अंगवस्त्रम् , स्मृति चिह्न अर्पित करते सपात्र नारिकेल भेंट किया दीपक सिंह व डॉ0 परमेश्वर पुष्कर ने लोकसंगीत रँग6मंच महोत्सव के मन्च से। दोनों विभूतियों के नामित सम्मान समारोह का करतल ध्वनि से स्वागत करता रहा उपस्थित जनसमुदाय जो बारम्बार अभिगुंजित होता रहा शिवद्वार धाम परिसर प्रशाल में। लोकसंगीत रङ्गमंच महोत्सव के तत्वावधान में आयोजन का प्रथम सोपान सम्मान समारोह अलंकृत हो देदीप्यमान हुआ इसी क्रमबद्धता में प्रशासन से उपस्थित अधिकारी प्रभारी निरीक्षक एवं प्रशासनिक अमले का भी अंगवस्त्र व स्मृतिचिह्न से सम्मान किया गया। डॉ0 परमेश्वर दयाल पुष्कर , देवचरन सिंह, उदित लाल अग्रहरि एवं अशोक मोदनवाल तथा डॉ0 एम0 एम0 यादव का भी सम्मान किया अध्यक्ष मुन्नर यादव , संस्थापक सिद्धनाथ विश्वकर्मा एवं मुरेश मौर्य ने मन्च से।

द्वितीय सोपान चरण आरम्भ हुआ लोकगीतों की जीवन्त व जाज्वल्यमान प्रस्तुतियों का और बह चली बयार मधुर मकरंद गीतों की। अतीव आकर्षक रही प्रस्तुति लोकगीत नृत्य सह गायन की जिसमें सोनञ्चल की लुप्त होती लोक विधाएं समाहित रहीं। कर्मा नृत्य गीत की मन्च से आह्लादक प्रस्तुति रही तो श्लाघ्य रही मनोहारी कोलदहकी नृत्य गायन विधा। इसे रामबली की पार्टी जत्थे के 40 सदस्यों ने संयुक्त रूप से साकार किया और अतिशय सराहना की उपस्थित दर्शक समूह ने। पाँच प्रान्तों से शिरकत करने वाले कलाकारों कवियों में प्रमुख रूप से सन्नद्ध रहे चंदौली से आये कवीश्री परमहँस सिंह और लखनऊ से आये कवीश्री मुरेश मौर्य तथा राजनाथ चंदौली , सिद्धनाथ और कवीश्री सूर्यनाथ व कमलेश विश्वकर्मा।

बिहार के औरंगाबाद से सुषमा एवं गया से गुड्डन लाल के गीत की मुक्त कण्ठ से सराहना की श्रोत्रि समुदाय ने। गजेंद्र प्रसाद पाण्डे का सम्मान किया गया इन सबके साथ जबकि लोकगीतों की प्रसंसनीय प्रस्तुति कड़ियों में अग्रगण्य रही मीना कौशल, रामधार रही, सोहन मौर्य, इंजीनियर शिवमूरतयादव, हीरापति यादव , राजकुमार यादव, नीतू चंचल मध्यप्रदेश, पूजा सक्तेशगढ़ जिनके गीत सराहे गए तो रातभर चले कार्यक्रम का सुबह समापन होने तक श्रोताओं के जनसैलाब आनन्द लेता डूबता उतरता गोते लगता अभिषिक्त होता रहा। आभार ज्ञापित किया अध्यक्ष मुन्नर यादव ने और कार्यक्रम का सफल संचालन किया हीरापति यादव व राजकुमार यादव ने संयुक्त रूप से।

बाल श्रम उन्मूलन का 20 नवम्बर से चलेगा विशेष अभियान

सबने यह ठाना है, बाल मजदूरी को जड़ से मिटाना है : जिला बाल संरक्षण अधिकारी

सोनभद्र। बाल श्रम के विरुद्ध विश्व दिवस में योगदान स्वरूप राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने एक रेस्क्यू प्लान आयोजित करने के निर्देश प्रदान किए हैं जिसके सम्बन्ध में जिलाधिकारी द्वारा जारी कैलेन्डर आदेश में उल्लेखित श्रम विभाग, पुलिस विभाग, स्वास्थ्य विभाग, बाल कल्याण समिति, शिक्षा विभाग, मानव तस्करी रोधी इकाई तथा जिला बाल संरक्षण इकाई की संयुक्त टीम के तत्वावधान में बाल श्रम उन्मूलन अभियान चलाया जायेगा।

यह परिज्ञान प्रसारित करते नोडल अधिकारी का सम्यक दायित्व निर्वहन कर रहे जिला बाल अधिकार संरक्षण अधिकारी सुधांशु शेखर शर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कही।राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग के निर्देशन में 20 नवंबर से 10 दिसम्बर तक बाल श्रम उन्मूलन अभियान चलाये जाने की जानकरी देते बाल कल्याण समिति, जिला बाल संरक्षण इकाई, मानव तस्करी रोधी इकाई के अधिकारी एवं कर्मचारियों जिला बाल संरक्षण कार्यालय विकास भवन में आहूत बैठक में राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग द्वारा बाल श्रम उन्मूलन के लिए चलाये जाने वाले अभियान के क्रमवार प्रसंग उकेरे साथ ही आम जनमानस से अपील करते हुए व्याख्यायित किये संदर्भ को। कहा कि बाल श्रम न करायें और न ही करने दें तभी हम सबके शिक्षा से जोड़ते हुए सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित कराया जायेगा तथा उनको परिवार में पुर्नवासन करवाते हुए फालोअप भी कराया जायेगा।

विकास भवन सभागार में बाल कल्याण समिति के सदस्य अमरेश चन्द्र पाठक, अमित सिंह चन्देल, रंजना चौबे, माण्डवी सिंह उज्जैन के साथ ही जिला बाल संरक्षण इकाई से संरक्षण अधिकारी रोमी पाठक, गायत्री दुबे, काउन्सलर सुधीर कुमार शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता आकांक्षा उपाध्याय, वीणा राव, ओ आर डब्ल्यू शेषमणि दुबे, मानव तस्करी रोधी इकाई से प्रभारी निरीक्षक रामजी यादव, मुख्य आरक्षी धनञ्जय यादव, जेन्डर विशेषज्ञ साधना मिश्रा, सीमा द्विवेदी, बाबूअहमद सहित अन्य सम्बंधित लोग रहे उपस्थित अहम किरदार के रूप में।

आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक में हिस्सा लेंगे राजनाथ

नयी दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की 10वीं बैठक में हिस्सा लेने के लिए 16 से 17 नवंबर तक इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता के आधिकारिक दौरे पर रहेंगे। गुरूवार को शुरू होने वाली इस महत्वपूर्ण बैठक के दौरान रक्षा मंत्री क्षेत्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर अपने विचार रखंगे। इंडोनेशिया इस वर्ष रक्षा मंत्रियों की बैठक एडीएमएम-प्लस की अध्यक्षता कर रहा है। श्री सिंह इस बैठक से इतर विभिन्न देशों के रक्षा मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। वह इस दौरान परस्पर फायदे के संबंधों को और सशक्त करने के लिए रक्षा सहयोग के मुद्दों पर भी चर्चा करेंगे। बैठक में ब्रूनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओ , मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड तथा वियतनाम के रक्षा मंत्री हिस्सा ले रहे हैं।

एसपी ने दीपावली पर पुलिस कर्मचारियों व पुलिस परिवारों के बच्चों को मिठाई व उपहार देकर बांटी खुशियां

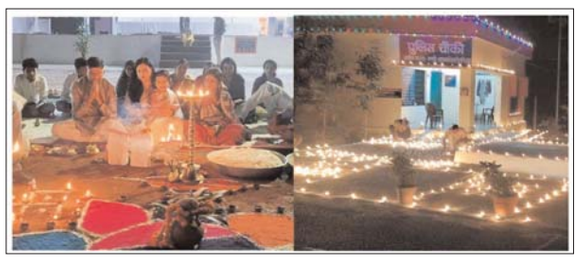

लालितपुर। दीपावली पर्व पूरे जिले में हर किसी ने अपने अपने अंदाज में मनाया। जहां किसी ने गरीब बच्चों के साथ दिवाली मनाई तो अधिकारियों ने अपने विभाग के कर्मियों के बच्चों व परिवार जनों के साथ मनाई। ललितपुर पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस लाइन में पुलिस कर्मियों के बच्चों एवं परिवारीजनों के साथ दीपावली पर्व मनाया और उनके साथ अनार व फुलझड़ी जलाई। वहीं ललितपुर में पुलिस थानों व चौकियों को आकर्षक रूप से सजाकर रोशन किया गया। पुलिस अधीक्षक मो. मुश्ताक पुलिस लाइन आवासीय परिसर में रहने वाले पुलिस व चतुर्थश्रेणी कर्मियों के बच्चों व परिवारीजनों के साथ दिवाली पर्व मनाया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक द्वारा अपनी पत्नी व बेटी के साथ विधि विधान मां लक्ष्मी जी का पूजन किया। थानों चौकियों के परिसर को रंगोली से सजाया। इस अवसर पर एसपी द्वारा बच्चों को फुलझडी, पटाखे, मिष्ठान, फल, मिट्टी के दिये, मोमबत्ती आदि वितरित कर दीपावली की शुभकामनायें दी गयी तथा घरों पर उचित दूरी बनाकर पटाखे जलाने हेतु बताया गया। इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार, क्षेत्राधिकारी लाइन इमरान अहमद व प्रतिसार निरीक्षक व अन्य पुलिस कर्मी उपस्थित रहे। दूसरी ओर दिवाली पर्व जिले के सभी थानों व पुलिस चौकियों को मिट्टी के दीपों से रोशन किया गया। वहीं थानों चौकियों के परिसर को रंगोली से सजाया गया। थाना जाखलौन थाना मड़ावरा, मदनपुर, जखौरा, पाली, सौजना, बार, पुराकलां, गिरार, सौजना, बालाबेहट, पुराकला, कोतवाली सदर, तालबेहट, महरौनी के अलावा पुलिस चौकी गल्ला मंडी, सिविल लाइन, नई बस्ती, तेरफाटक, बांसी, कंचनौदा कला, बिरधा, कुमहेड़ी अमरपुर मंडी, गोविंद सागर, सदर चौकी, मसौरा कला, जेल, धौर्रा चिगलाओ सहित सभी चौकियों को आकर्षक रूप से दीपों व रंगोली बनाकर सजाया गया।

नियमों का उल्लंघन करने पर 108 वाहनों का चालन

ललितपुर। पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक महोदय के निर्देशन में यातायात माह-नवम्बर 2023 के तहत यातायात नियमों का पालन न करने वाले वाहन चालकों के विरूद्ध चलाये जा रहे जागरूकता अभियान के क्रम में यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों/स्वामियों का एम0वी0एक्ट के तहत कार्यवाही करते हुऐ 108 वाहनों का ई-चालान कर 115800/- रूपये का ऑनलाइन जुर्माना किया गया। दिनांक 14-11-2023 को

यातायात माह नवम्बर-2023 के तहत श्रीमान पुलिस अधीक्षक ललितपुर के आदेशानुसार एवं अपर पुलिस अधीक्षक/क्षेत्राधिकारी यातायात के निर्देशन में प्रभारी यातायात श्री अभिनेन्द्र सिंह चौहान द्वारा यातायात पुलिस टीम के साथ हेल्मेट, सीट-बेल्ट के बारे में शहर क्षेत्र के प्रमुख चैराहों, स्थानों, बाजारों, भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर आम-जनमानस को यातायात स्लोगन से छपे पम्पलेट, स्टीकर वितरित कर जागरूक किया गया तथा शहर क्षेत्र में प्रमुख स्थानों पर अभियान चलाकर यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों/स्वामियों का एम0वी0एक्ट के तहत कार्यवाही करते हुऐ जुर्माना किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह की तैयारी जोरों पर, जिला मंसूरी समाज समिति के पदाधिकारियों ने बांटे आमंत्रण पत्र

ललितपुर*। भारतीय संबिधान दिवस के मुबारिक मौके पर मंसूरी समाज क़ा भव्य शपथ ग्रहण/दीनी कांफ्रेस 26 नमम्बर को होगा जिला मंसूरी समाज समिति (रजि.)के नवनियुक्त पदाधिकारिओं का शपथ शपथ ग्रहण समारोह में जिले के सभी मस्जिदों,इमाम रहेंगे मौजूद समाज में पद कोई अहमियत नहीं रखता,समाज खिदमत ही सबसे बढकर खिदमत होती है-सदर इरशाद मंसूरी।जनपद ललितपुर की जिला मंसूरी समाज समिति के पदाधिकारियों की बैठक

गुरुवार को ललितपुर की दरगाह बाबा सदनशाह परिसर में बहीद खां मंसूरी की सदारत में सम्पन्न हुई थी। जिसमें आगामी जिला मंसूरी समाज के नवनियुक्त पदाधिकारियों क़ा शपथ ग्रहण समारोह 26 नमम्बर कों सर्वसम्मति से तय किया गया था।जिसको लेकर जिला मंसूरी समाज समिति के सदर एबं समिति के पदाधिकारियों ने जिले की तहसील कस्बों में जाकर सपथ ग्रहण समारोह के दावतनामें/आमंत्रण पत्र दिये जा रहे है।नवनियुक्त पदाधिकारियों को शपथ ग्रहण समारोह में पधारने के लिए न्योता/निमंत्रण दिए जा रहे।मुख्यालय पर जिला स्तरीय शपथ ग्रहण समारोह में अधिक से अधिक लोगों के भाग लेने हेतु टीमों का गठन कर जिम्मेदारियां सौंपी जा रही है।जिससे कार्यक्रम को सफल बनाया जा सके। इनकी मौजूदगी में होना जिला मंसूरी समाज समिति (रजि.) क़ा शपथ ग्रहण समारोह। जिला मंसूरी समाज समिति (रजि.)के भव्य शपथ ग्रहण समारोह/कांफ्रेस में मेहमाने खुशुशी के रूप में आली ज़नाब मुफ़्ती इफ्तखारुल हसन साहब, कार्यक्रम की सदारत आली ज़नाब हाफिज अब्दुल मुबीन कादरी साहब शहर पेश इमाम ललितपुर,कार्यक्रम की निज़ामत/जेरेनिगरा आली ज़नाब हाफिज असगर अली राइन साहब एबं कार्यक्रम के बिशेष मेहमान जिले की सभी मस्जिदों के इमाम होंगे शामिल।

CMYK CMYK CMYK CMYK